

दो-शब्द



संगीत कला का महात्म्य बतलाने की आवश्यकता नहीं, बीसवीं सदी की चौ-थाई में भारतीय संगीताचार्यों ने संगीत कला को कोने कोने में पहुँचाने की को-शिश की है, किन्तु फिर भी हमारी सं-गीत कला की उन्नति में अभी कसर है। यह तो निश्चित ही है कि संगीत की नाद सुधा का आकंठपान करके परमार्थ की उपासना की जा सकती है। संसार के भयङ्कर भगड़ों व दुखों से बने हुए निरास व उदास व्यक्ति के लिए संगीत ही एक मात्र सहारा है। विश्व संगीतमय है जीवन संगीत मय है जीवन में संगीत का विशेष स्थान है।

द्रव्य सहायकों के नाम ।

- १ शा अघातमल सुगासचन्द कटारिया
मु० तुलकेद्वयम् पो रीडिस्स पो मद्रास
शा अघातमल मिखरीलाल कटारिया,
मु० सेधाञ्च पो० बगड़ी (मारणाङ्क)
- २ शा. मानीराम सुगयञ्च कटारिया
पो पेरंनूर मादायरम हार्दरोङ्क नं ७ मद्रास
- ३ शा अमोलकचन्द अन्नराञ्च कटारिया
मु पा आरवी जि पुनेरी, मद्रास
- ४ शा गणेशमल राजमल मरसेथा
मु तुलकेद्वयम् पो रीडिस्स मद्रास
- ५ शा अन्नराञ्च उदेराञ्च कोठारी
मु पो आरणी जि पुनेरी मद्रास
- ६ शा हीराचन्दजी लालचन्दजी आर्षी
मु पो पेरंनूर मादायरम हार्दरोङ्क मद्रास
- ७ शा चम्पालालजी पगारिया
मु पो पेरंनूर मादायरम् हार्दरोङ्क मद्रास

दो-शब्द



संगीत कला का महात्म्य बतलाने की आवश्यकता नहीं, बीसवीं सदी की चौ-थाई में भारतीय संगीताचार्यों ने संगीत कला को कोने कोने में पहुँचाने की को-शिश की है, किन्तु फिर भी हमारी सं-गीत कला की उन्नति में अभी कसर है। यह तो निश्चित ही है कि संगीत की नाद सुधा का आकंठपान करके परमार्थ की उपासना की जा सकती है। संसार के भयङ्कर भगड़ों व दुखों से बने हुए निरास व उदास व्यक्ति के लिए संगीत ही एक मात्र सहारा है। विश्व संगीतमय है जीवन संगीत मय है जीवन में संगीत का विशेष स्थान है।

(५)

संगीत की रत्नसहरी का पान अब
इच्छे से करने के लिये यह मज्जन संग्रह
संप्रदित किया है ।

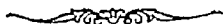
५ मुनि भी सूर्य मुनिजी कृत यह
सूर्य सावन संग्रह मुनिराजों महासतियों
जी एवं गृहस्थों के व्याख्यान-वाणी एवं
स्वाध्याय के लिये बहुत ही दितकर सिद्ध
होगा । माया बहुत सरस है ।

लेखक एवं संग्रहकर्ता अपने परिश्रम
की सफलता इसी में माँगेंगे कि इस म-
ज्जन संग्रह का अपना कर जन समुदाय
इससे अधिक से अधिक लाभ उठावे ।
स्वाम स्वाम पर इसका प्रचार करें ।

चन्दनमल कोषर
साहित्य-विशारद हिन्दी-यमाकर,

ॐ श्री ॐ

सूर्य-स्तवन-संग्रह



गौतम-स्तुति

तर्ज—कञ्जाली

गौतम गणेश गुरुवर, सुखधाम नाम
प्यारा । श्री संघ पे सचाया, उपकार है
अपारा ॥ टेर ॥ प्रभु वीर का विनय कर,
तज के प्रमाद निशिदिन । श्री द्वादशांगी
घाणी, आगम निगम को धारा ॥ गौ. १॥
जस सिन्धु में से विन्दू कुछ अंश में रहा

अब । धरा फटल है जिन्ने, सबा
 सहाय ॥ गौ. ६ ॥ दल दल में
 गूँदा है अलख बुद्धि मगबर ।
 बढ़ रहा है मठमेठ पद्म धर ॥ गौ.
 नहीं ज्ञान अबसि केवल जिन पूर्ण
 मुनिबर । केवल मरामा अब ता,
 हैतप हमारा ॥ गौ. ४ ॥ है आपकी
 गार्ह बाकी रही ये सूखी । अल
 सीध करके अब कीजिय सुपाय ॥
 १ ॥ कहे सूर्य' तुम शिवा ही आया
 २ ॥ हमको । करके कृपा कृपासु हो
 ३ ॥ आता - गौ. १ ॥

सा।

स्व. आचार्य श्री नंदलालजी म. के गुणानुवाद

पूज्य नन्दलाल भगवन् की, सदा जय हो सदा जय हो । लगी कंठा ही दरशन की, सदा जय हो सदा जय हो ॥ टेर ॥ सुखद मालव मनोहर हैं, शहर खाचरोद श्री कर हैं । नगीना लाल पितु वर हैं, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. १ ॥ बूचक्या गौत्र हैं ख्याती, विशुद्ध है मात पितु जाती । है अमृत मात सुविभाती, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. २ ॥ गुन्नीसे साल नवदस में, भयो है जन्म शुभनिश में । हुवो सानंद कुटुम्ब असुमें, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. ३ ॥ जनक अरु मात की पालन, दिलों

अब । अन्ना अन्न है जिनपे, सखा हमें
 सहाय ॥ गी. २ ॥ पल पल में होती
 शब्दा है अल्प बुद्धि भगवन् । अज्ञान
 बढ़ रहा है मतमेव पक्ष धारा ॥ गी. ३ ॥
 नहीं काम अबधि केवल जिन पूर्वधारी
 मुनिवर । केवल मयेसा अब तो जिन
 वैसये हमारा ॥ गी. ४ ॥ है आपकी ल-
 गार्ह बाड़ी रही ये सूखी । अल काम
 सींच करके अब कीजिये सुधाग ॥ गी.
 ५ ॥ कहे 'सूर्य' तुम शिवा ही, आधार है
 न हमको । करके कप कपासु रो काम
 शक्ति मारा ॥ गी. ६ ॥



॥ पू. ६ ॥ रहें गुरु भक्ति में शुद्ध मन,
करे हैं पतित को पावन । अधम और
दीन उद्धारन, सदा जय हो सदा जय हो

॥ पू. १० ॥ श्री मोखमसिंहजी पूज्यवर,
थे त्रैलोक्य के अन्दर । पूर्ण गुण लख-
करें पटपर, सदा जय हो सदा जय हो

॥ पू. ११ ॥ कई जन पद गमन करते,
तिमिर मिथ्यात रज हरते । बोध भव्य-
गण हृदय धरते, सदा जय हो सदा जय

हो ॥ पू. १२ ॥ वयोवृद्ध श्रुति चारित में,
हैं स्थैर्य पूज्य त्रयस्थित में । अहिया से
सब व्यथा चित में, सदा जय हो सदा

जय हो ॥ पू. १३ ॥ नगर रत्नलाम के
अन्दर, विराजे वर्ष कई वहां पर । दियो
सम्यक्त्व ही तहां पर, सदा जय हो सदा

हो ॥ दियो है पाट युवपद

तन से भरे शासन । कियो उग्रह घर
मोदम सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू ४ ॥
शुद्ध गिरधर मुनीभर सैं, बचन पय
पान कर हर्यै । त्वरित स्वागी बने घर
से सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू ५ ॥
अर्ध परकी मिया स्वागी दुखे घरबेग
पैरागी । सुरत शिव भार से लागी सदा
जय हो सदा जय हो ॥ पू ६ ॥ कुटुम्ब ताको
समी आकर बकाये राज्य में आकर ।
भाई हैं ताप स्थित मनघर सदा जय
हो सदा जय हो ॥ पू ७ ॥ लग्या पैराग्य
चितमाई तमें ना पादपि सुरमाई । स्वयं
मुक्त मत लियो भ्याई सदा जय हो सदा
जय हो ॥ पू ८ ॥ साक्ष वाक्सीस में संपम
लियो शुद्ध घर में शमदम । परिधम कर
पडे आगम सदा जय हो सदा जय हो

करें उपकृति ज्यों भाखर, सदा जय हो
सदा जय हो ॥ पृ. २० ॥ बांसवाड़ा गहर
सुन्दर, गुन्नासी माल में तहा पर । कथे
गुण 'मूर्यमुनि' नमकर, सदा जय हो
सदा जय हो ॥ पृ. २१ ॥

स्व. जैनाचार्य श्री माधव मुनि महाराज के गुण कथन.

पूज्य माधव मुनि शानी, गयो हों
जैन को हीरो । विशद विद्वान गुणखानी
गयो हों जैन को हीरो ॥ टेर ॥ तीव्र
अभिलाषा है मन की, दयालु पूज्य दर्शन
। तृपति नां होत नेत्रन की, गयो हां
॥ हीरो ॥ पृ. १ ॥ अग्रजाती सुकुल
वंशीधर तात सुख दाता । श्री-

का स्वतः माधव मुनीश्वर को । वहीं
 पीरत दगो विश को सदा जय हो सदा
 जय हो ॥ पृ. १५ ॥ अरित तन खल करे
 माधन मान माधव मन्तरमय सन ।
 विदी बरुमी द्रि शूकर त्रिम सदा जय हो
 सदा जय हो ॥ पृ. १६ ॥ करी भी संप
 निर्मजस कहे र्भ घत नियो अससस ।
 अपधि त्रिम वान हो उत्पद्य सदा जय
 हो सदा जय हो ॥ पृ. १७ ॥ रहियो एक
 वाम को अससस रहि वृत्ति विरुद्ध विठ
 मम । पधारे स्वर्ग में मगबन् सदा जय
 हो सदा जय हो ॥ पृ. १८ ॥ करे जो पूज्य
 के सुमरस कहे सब करम के बंधन ।
 मिसे हैं सौम्य शिब माधम सदा जय
 हो सदा जय हो ॥ पृ. १९ ॥ विराजित
 पूज्य के पद पर भीमन् पूज्य माधव बन ।

करें उपकृति ज्यों भाखर, सदा जय हो
सदा जय हो ॥ पृ. २० ॥ वांसवाड़ा शहर
सुन्दर, गुन्नासी साल में तहां पर । कथे
गुण 'मूर्यमुनि' नमकर, सदा जय हो
सदा जय हो ॥ पृ. २१ ॥



स्व. जैनाचार्य श्री माधव मुनि महाराज के गुण कथन.

पूज्य माधव मुनि ज्ञानी, गयो हों
जैन को हीरो । विशद विद्वान गुणखानी
गयो हों जैन को हीरो ॥ टेर ॥ तीव्र
अभिलाषा है मन की, दयालु पूज्य दर्शन
की । तृपति नां होत नेत्रन की, गयो हों
जैन को हीरो ॥ पृ. १ ॥ अग्रजाती सुकुल
ख्याता, वंशीधर तात सुख दाता । श्री-

मति रायकोर माता, गयो हाँ जैम को
हीरो ॥ ५ २ ॥ सुगुरु भी मगन मुनिवर
के करण राज शीस धँ धर के । भवण
उपदेश कर हरके गयो हाँ जैन को हीरो
॥ ५ ३ ॥ हुषो बैराग्य लघु पय में, मये
तल्लीन सँयम में । रहे मिल पठन पाठन
में गयो हाँ जैन को हीरो ॥ ५ ४ ॥ हुषे
कोविद विविध छाता स्व-यर परमार्थ
समझाता । प्रकट धुति मेरु दरसाता
गयो हाँ जैन को हीरो ॥ ५ ५ ॥ सुणी
बाणी इक्षिण धारि हृदय दृति नहीं पावें ।
बोध जे मध्य हर्षावें गयो हाँ जैन को
हीरो ॥ ५ ६ ॥ छरि नम्यकास पद गावें
पूज्य माधव मुनिराजे । रहियो अश विश्व
में सार्व गयो हाँ जैन को हीरो ॥ ५ ७ ॥
हरी पैसी हरिच माजे त्योहि पावयइ

लख लाजे । ज्ञान मय भानु कर आज्ञे,
 गयो हां जैन को हीरो ॥ पृ ८ ॥ पोत
 सम हों तुम्हीं तारक, दयालु शांत रस
 धारक । तुम्ही हो नाथ सुख कारक, गयो
 हां जैन को हीरो ॥ पृ ९ ॥ दिपायो जैन
 शासन को, मिटायो भ्रम मुदिर तमको ।
 कई तारे नर धाम को, गयो हां जैन को
 हीरो ॥ पृ. १० ॥ भरोसा सर्व का था वह,
 दिलासा सर्व का था वह । उजासा सर्व
 का था वह, गयो हां जैन को हीरो ॥ पृ.
 ११ ॥ शांत मूर्ति सुखद ताकी, करूं मैं
 पासना जाकी । कहें यों 'सूर्यमुनि' दाखी
 गयो हां जैन को हीरो ॥ पृ. १२ ॥ गयो
 हा जैन को इन्दू, गयो हा जैन को भा-
 खर गयो हां जैन को चत्सल, गयो हा
 जैन को आकर ॥ पृ. १३ ॥

चौबीशी जिनस्तयन

तरे—हां का भर लें गुमानारे ।

चौबीशी जिनपर प्याओ रे भय भय
पातक दूर पलाओ । संकट सब विनाय
सभी सुख सम्पत्त पाओरे ॥ छेर ॥ अष्टम
अजित सम्मय अमिर्दम सुमति पदम
सुपारस वंदन । शशि सुविषी शीतल
सुख अम्बन । श्री शेषांश शेषकरे,
ठरे भय गुण नित गाओरे ॥ श्री १ ॥
वासुपूज्य बहु अरिहय कीना । विमल २
अस जग में लीना । अमंत अमित सुख
आलम बीना । श्री धर्मनाथ अगताठ
गान गुनकर हराओरे ॥ श्री २ ॥ श्री
शान्तिनाथ जग शान्तिदाता, श्री हनु अर
मस्की जग बाता । मुनि सुमत घर घर

के ज्ञाता । नमी नेम शिव क्षेम करन को,
 भविक मनाओ रे ॥ चौ ३ ॥ श्री पार्श्व-
 नाथ पाव जगक्षायक, महावीर शासन के
 नायक । गणधर साधु सकल गुण लायक ।
 “मुनि सूर्य” कहे भवि भक्तियुत नित-
 सीस नमाओ रे ॥ चौ ४ ॥



श्रीमहावीर स्तुति

तर्ज—काली कमली वाले तुम पर लाखों सलाम ।

त्रिशलाजी के प्यारे, तुम हो मेरे
 सनम् । धरणी के उजियारे, तुम हो मेरे
 सनम् ॥ टेर ॥ यज्ञ में जलते जीव बचाया
 गौतम गणधर को समझाया । फणिधर
 को सुरलोक पठाया, ऐसे अधम उधारे
 ॥ तु १ ॥ सच्चे ताक तुम हो भगवन,

बहिन का बाहुबली को उपदेश

नर्म--मेरे शम्भू त काशी ।

भैया क्यों ? कर वन में ध्यान किया ।
 नाहक कष्ट अमित तन जान लिया ॥
 टेर ॥ बाहुबली से बहिन यों आकर वचन
 कहने लगी । क्यों भ्रात तुम गजपे चढे
 दे ज्ञान समझाने लगी । करते वन में
 अनुपम आपक्रिया ॥ भै १ ॥ कर लोच
 तज के सोच सब, जग से निराले वन
 गये । अति कष्ट घाम रु शीत के, सब
 सहन कर दुर्बल भये । ठाढेरहकर सारे
 दुःख सया ॥ भै २ ॥ यों ध्यान करते
 आपको, अब मास ढादस होगये । छाई
 लता चहुँ ओर तन पत्ती के घर तुम वन
 गये । नहीं तन पे कुछ भी व्यान दिया ।

मै ३ । अगिनी पचन करके अघण, बस
 नित मये सोचन लगने । स्वागा ममी गज
 अश्व को फ्या ! स्वागा खोजन लगने ।
 चढ़ा माम मतगपे धार दिया । मै ४ ।
 वैराग्य घर मम सोच के अमिमान का
 मर्दन किया । मुनि धर्म पग को उठाया
 ज्ञान केवल पागया । अनुपम ज्ञान मुधा
 का व्याख्या पिया ॥ मै ५ ॥ तिहुंताप
 व्याधि दूर कर शीमी अचल शिपहुँदरी ।
 'मुनिस्वर्य' कहें मस धन्य है पुम सील
 मतस्वी धरी । मच होय सफल पदकज
 दिया ॥ मै ६ ॥

नेम प्रभु से देवकी राणी का सन्देह निवारण

तर्ज—कव्वाली ।

मैया श्रीदेवकीजी श्रीनेम से उचारे ।
मन में हुवा है ज्यों संशय सब पृच्छ के नि-
चारे ॥टेर॥ अति मुक्त साधु मुक्त से, कहा
सात पुत्र होगा । क्या वैन है ये भूराठा,
नहिं भूट सो निकारे ॥ मै. ॥ १ ॥ वह
पुत्र कौन जननी, जाये कहे दयाला । इक
कृष्ण सुत हैं मेरे, कहें नाथ भर्म टारे
॥ मै ॥ २ ॥ सुन देवकी ? मुनि के, कहे
वैन सब सही हैं । पदे साधु लेन भोजन,
आये थे घर तिहारें ॥ मै. ॥ ३ ॥ थे पुत्र
ही वह तेरे, सुलसा के घर बढे हैं । जिन
वैन सुनके राणी, हर्षित भई अपारे ॥ मै

[१७]

सति चेलणा कथन ।

सर्ग—पञ्चाशी

श्रेणिक नृपत की राणी, श्री चेलणा
 सुधानी । श्रद्धा अटल धरम में, धारी हैं
 जैन वानी ॥ टेर ॥ श्री वीर दर्श करके,
 आती थी निज भवन पे । निर्ग्रथ एक देखा
 वन में अचल सुध्यानी ॥ श्रे. ॥ १ ॥ दारुण
 सो शीत सहते, लख धन्यवाद देती ।
 निशि घोर शीत पड़ती, रही कंथ साथ
 राणी ॥ श्रे. ॥ २ ॥ रहें हाथ सोड बाहिर,
 तब साधु याद आया । क्या करते होंगे
 वह तो राणी कही यों वानी ॥ श्रे. ॥ ३ ॥
 सन्देह पड़ा है नृप सुन, नर अन्य उर-
 चसा है । व्यभिचारणी हैं राणी, छुरि
 सेंटके समानी ॥ श्रे. ॥ ४ ॥ अन्तःपुर

अभी प्रयासों, आदेश नृप दिया यों ।
 सुन क अमय बैचरजी बुद्धि से पात
 गनी ॥ ५ ॥ श्री वीर वन्दने को
 अधिक तभी सिधारा । श्री वीर राय
 सम्मुख मर्ती चेसखा दस्तानी ॥ ६ ॥
 ॥ ६ ॥ अमके हैं चित्त भूपत मम दिया
 अक्राया । सन्ध पुत्र मित्र भयम में चिता
 हृदय म अमी ॥ ७ ॥ कहते अमय
 से जा जा भूण्डा अरे ? किया क्या । मित्र
 तान बैन सुनल चारित्र सौख्य दानी ॥
 ८ ॥ ॥ भक्तियों में है शिष्यमण भव
 पार को सहेगा । सुरिमन्द सूर्य" कहें
 यों भक्तिगुण सुनो मणानी ॥ ९ ॥

वीरस्तुति ।

तर्ज—कमली वाले ने ।

आनन्द दयामृत शांति का, रस पाया
 वीर महा प्रभु ने । भवनिधि तिरने का
 पथ सच्चा, वतलाया वीर महा प्रभु ने
 ॥ टेर ॥ घनघोर घटापे छाई थी, अज्ञान
 अविद्या की जग में । सत् ज्ञान का सूरज
 चमका के, समझाया वीर महा प्रभु ने
 ॥ १ ॥ जब हिंसावादी का होंश गया,
 और जड़वादी का कोप गया । सब शत्रु
 का मन रोप गया, तब ध्याया वीर महा
 प्रभु ने ॥ २ ॥ बलिदान यहा पशु दीनों
 का, करते थे धर्म बता पापी । उनके
 ढोल का पोल खोल, भगवाया वीर महा
 प्रभु ने ॥ ३ ॥ आकर के लुटेरे डाकू ठग,

धन खोग के शार मषाया था । उमकी
सब लीला बतला के जगवादिषा बीर
महा प्रभु ने ॥ ४ ॥ नस्य अर्द्धिसा सुमा
शील अनुकम्पा धर्म दया करना । कहें
'सूर्य मुनि' यह पाठ हमें सिखाया बीर
महा प्रभु ने ॥ ५ ॥

रहनेमी प्रत्ये राजकुल ।

उत्तर—कौन सी बड़ी छाने कभी ।

भीमति राजकुलमार कहती यों सम
भाय के ॥ डेर ॥ सुन बैरिया गज को
तज के हाँ २, सरपे बड़ो मत आय ।
काँ पों दरसाय के ॥ भी. ॥ १ ॥ भोग
तजी फिर भोग को बाँधे हाँ २, सैंस-

तिन्हें धिक्कार । वमन कर खाय के ॥ श्री
 ॥२॥ हो विषयांधे शुधबुध विसरी, हां २,
 मरन तुम्हें श्रेयकार । जीवन गमाय
 के ॥ श्री ॥ ३ ॥ अपयश कामी मन लल-
 चाया, हां २. अव मन काबूलाय । उत्तम
 भव पाय के ॥ श्री. ॥ ४ ॥ जहां तहां
 सुन्दर कामनिलख के, हां २, मन चंचल
 ललचाय । संजम गमाय के ॥ श्री. ॥ ५ ॥
 अंकुश सम सुन श्री रह नेमी, हां २,
 धर्म स्थानक के माय । बांधत मन लाय
 के ॥ श्री. ॥ ६ ॥ पढ़ के चढ़े सो उत्तम
 प्राणी, हां २, 'सूर्यमुनि' जिन वैन । कहें
 यों शिर नाय के ॥ श्री. ॥ ७ ॥

दृढण मुनि ।

८४—भीरा बाली विरज क्य बाली ।

क्षियो अमिप्रह दृढण स्वामी । नित
 पम्पू में गुण धामी रे ॥ ८८ ॥ मुनि गौखरी
 नित नित जाये नई आहार छुख कहा
 पावोरे ॥ १ ॥ कोई शिर पे अल पट पारी
 कोई अल में हाथ पकारी रे ॥ २ ॥ कोई
 मारी मंगे बीरा कोई धोवत मारी सी-
 रावे ॥ क्षि ॥ ३ ॥ किहां चूरहे नाज क
 डायो किहां भोजन माहि बनायो रे ॥ ४ ॥
 किहां पीसा गुन्यो मारी किहां कपण
 मिथ्या नरमारी रे ॥ ५ ॥ कोई बाल मे
 दूध पितावे किहां वारवां बंद दिखाने
 ॥ ६ ॥ किहां लीपल बी घर आलो किहां
 गाये गीत रछालो ॥ ७ ॥ कोई मुनि को

घर से काढे, कोई गाली देकर भांडेरे
 ॥ लि ॥ ८ ॥ किहां सूभतो आहार न पावे,
 मुनि देख २ फिर जावे रे ॥ लि ॥ ९ ॥
 किहां ऊभा द्वार भिखारी, मुनि फिरता
 समता धारी रे ॥ १० ॥ किहां गर्भवती
 उठ देवे, सो आहार मुनि नहीं लेवे रे ॥
 लि ॥ ११ ॥ छहुँ मास लगे मुनि फिरिया,
 निज लब्धि को आहार न मिलिया रे ॥
 १२ ॥ नहिं साज दुजा का चाया, जाके
 'सुर्य मुनि' शिर नायारे ॥ लि. ॥ १४ ।



चतुर्विंशति स्तवन ।

तर्ज—छोटी भठी सँयारे जाली ।

श्री चौवीसों जिनदेव, अरज अव
 धारिये ॥ टेर ॥ आदि अजीय संभव अभि-

नम्रन हां २, सुमति पद्म सुपास । शंखा
 प्रभु तारिये ॥ श्री ॥ १ ॥ पुष्पदन्त शीतल
 जगनापक हां २, श्री भैयांश दयाल ।
 जनम जर तारिये ॥ श्री ॥ २ ॥ वासुपूज्य
 श्री विमल जिनेश्वर हां २ अनन्त धर्म
 सुखकार । विघन निवारिये ॥ श्री ॥ ३ ॥
 शांति कुम्भु भर मल्ली मुनिसुन्दर हां २,
 नमिनेमी गुणकन्द । विपत विवारिये ॥
 श्री ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ महावीर जिनेश्वर
 हां २, यों बीबीसों महाराज । मधिक
 अभ पारिये ॥ श्री ॥ ५ ॥ जिन शामन पै
 समरदि भर हां २, कहें सूर्य मुनि
 विशेश । नेक सु निवारिये ॥ श्री ॥ ६ ॥

श्रावक विषे-चतुरंगचन्द्र राजा का दृष्टांत ।

तर्ज—कृष्णा नी ।

श्रावक हुए हैं ऐसे, जग से रहें नि-
राले । डिगते नहीं धरम से, जिन पंथ
शुद्ध पाले ॥ टेर ॥ थे कनकपुर के राजा,
चतुरंग चन्द्र न्याई । श्री वीर दर्श करके,
अघ पक को प्रजाले ॥ श्री ॥ १ ॥ उप-
देश सुण विरागी, व्रत डादशादि धारे ।
लख राज्य द्रव्य अस्थिर, उरकी सों
गांठ गाले ॥ श्री ॥ २ ॥ फिर भी विनय
प्रभु से, करले नियम कराला । मुक्त महिल
में जहा तक, दीपक प्रकाश डाले ॥ श्री
॥ ३ ॥ तब तक खड़ा रहकर, शुभ ध्यान

व्याकृता में । नृप आय ध्यान कीना, गुण
 आत्म के सम्माले ॥ भा ॥ ४ ॥ नृप ध्यान
 बेला दासी नहीं दीप बुझने देवे । ज्यों
 ज्यों ही तेज सींचे नृप भय घरी कराले
 ॥ भा ॥ ५ ॥ बीची है रैन सारी पग धंभ
 से हूँ है । कतय है खून नीचा, नहीं
 ध्यान से चले है ॥ भा ॥ ६ ॥ आयुष
 किया तुरंत से सुर बारमे सिधारे ।
 समझे सो एक दिन में समभाव जो
 निहाले ॥ भा ॥ ७ ॥ शिव सौम्य फिर
 लहेगा खुरिनम्ब 'सूर्य' भावे । जो धर्म
 धोरी भावक दुर्गति के बेप ठाले ॥ भा.
 ॥ ८ ॥

क्रोध विषे ।

तर्ज—इकि मत हर गर्व दिवानारे ।

क्रोध मत करो सयानारे, क्रोधी पावे
 नरक ठिकाना । क्रोध किया दुख महा,
 अन्त में हो पछताना रे ॥टेर॥ दीपायन
 कर क्रोध कराला, संचित तप को छिन
 में जाला । क्रोध हलाहल विषधर काला ।
 क्रोध कपाई महा बैन ये, जिन फरमाना
 रे ॥ क्रो. ॥ १ ॥ थर थर अद्ग सब धूजन
 लागे, सद्गुण क्रोध भूत से भागे ।
 सज्जन वरी हो जिन आगे । त्रण भारत
 होय छिनक में, प्राण गवांना रे ॥ क्रो ॥
 २ ॥ निज परको क्रोधी दुखदाई, प्रतीत
 जांकी जाय विलाई । सुधबुध संपत सर्व
 नशाइ । अच्यंकारी भट्टा पाइ, विपत नि-

धानारे ॥ मो ॥ ३ ॥ क्रोध तिमिर जिनके
 पर छावे धान व्याम गुण मान भुलावे ।
 बाहु पृथ तप शीघ्र विज्ञावे । कहे गुण
 अविद्यार वचन में भर वसाना रे ॥ मो
 ॥ ४ ॥ उपसम रसकर पान महाना काय
 रूप अग्निहना मयामा । जमा शूल गदि
 तज्ज अमिमाना । सरिमम् मुनि सूर्य
 कहे भजिये मगवाना रे ॥ को ॥ ५ ॥

चमापना ।

८ — बिहारी ही सगुण के भाए धान की बी ।

व्याग पाक्षिक पर्य अराधी बैर नि
 वारिय रे । सब से कमत चमापस करी
 जमागुण धारिये रे ॥ टेर ॥ श्री अग्निहन्त
 सिद्ध आचार्य साधु पाठक मणीजी ।

ध्याओ शत अठ सब गुण धार, संघ
 साधर्मी विनय विचार । यदि जो करी
 कपाय लिगार । त्रिविध कर्ण जोग शुद्ध
 लाय, कपाय विसारिये रे ॥ प्या ॥ १ ॥
 वसियो लक्ष चोरासी जोन, विविध भव
 संचरीजी । क्षमापन कीधे हो भव नाश,
 होय भिन कीधा नरक निवास । सब से
 क्षमो क्षमाओ खास । करके अथ अष्टा-
 दश भविक, जन्म मत हारिये रे ॥ प्या
 ॥ २ ॥ छूटे सरल पणा से वैर, कहियो
 जग नाथजी रे । क्षमा है मोक्ष, क्रोध
 संसार । क्रोध वश धर्म क्रिया निस्सार ।
 सब से मैत्रियता दिलधार । तजता क्रोध
 होय जग पूज्य, अवश अव धारिये रे ॥
 प्या ॥ ३ ॥ करिये धर्म स्नेह सब साथ,
 क्षमागुण सेविये रे । हुए श्री अभय उदाई

राय नृपति अण्डमद्योत कामाय । पर-
स्पर घेर विरोध मिटाय । कामता अम्ब-
रुद्र के साथे कुरगडु मानिये रे ॥ व्या ॥
॥ ४ ॥ श्री अम्बुन बासा को सुगावतीजी
कामावतीजी । श्रीमो केवल नाम निभाम
नामता समकित भाव महान् । उचम
शमा भाव उर ध्यान । 'मुनि सूर्य' सम्ब
सूरि नमी कहे भव तारिये रे ॥ व्या ॥ ५ ॥

सुशीला स्त्री विधे ।

७४—(विधे) ।

वहनों श्वैर की सतियों का वरपन
सुनिये ध्यान लगाय । सुनिये ध्यान ल
गाय कि वहनों शीत शृङ्गार सजाय ॥
देर ॥ महासती सीतापति साथे रहती

जंगल मांय । राजपाट सुख भोग
 छोड़ के, पति के पद कंज नाय ॥ व. ॥ १ ॥
 आल सुभद्रा के शिर ऊपर, दीना सास
 चढ़ाय । शील सहाय सुर आय करी,
 सब संकट दियो नशाय ॥ व. ॥ २ ॥ राज-
 कुमारी चन्दन वाला, घर घर रही वि-
 काय । शील धर्म छोड़ानहीं मन से, ईश
 चरण चित लाय ॥ व. ॥ ३ ॥ राणी धारणी
 को एक दुष्टी, विपयी वचन सुनाय ।
 शील रखन के काज जीभ को, काटी स्वर्ग
 सिधाय ॥ व. ॥ ४ ॥ दमयंती पति साथ
 विपन में कष्ट महा तन पाय । अर्ध चीर
 निज फाड़ पति को, दीना आप ओढाय
 ॥ व. ॥ ५ ॥ तारा राणी को निज पति ने,
 बेची बीच बजार । संकट सर्व सहन
 सती ने, कियो धर्म उरधार ॥ व. ॥ ६ ॥

राजमति पति भक्ति कारण खड़गई गढ़
 गिरगाय । दूजा घर नहीं खहा हृदय में
 लीला सयम माग ॥ व ॥ ७ ॥ चौदह वर्ष
 पति सङ्ग औपवी पाई दुःख प्रचण्ड ।
 दुष्ट पद्मोत्तर घर पे रह के पाखो शील
 अलखण्ड ॥ व ॥ ८ ॥ सती अखना के शिर
 पति से ठोकर गई सगाय । माखु आर
 खड़ाय निकाखी फिरती वन वन जाय ।
 व ॥ ९ ॥ सती जयती वीर प्रभु को
 औपध दान बेराय । बाखी सुन्दरी शीर
 पासने आना को समझाय ॥ व ॥ १० ॥
 ऐसी ऐसी होगई सतिये कहाँ तक करे
 जताय । 'सुरिमन्द मुनि सूर्य' सतीगुण
 गौरव कथ के गाय ॥ व ॥ ११ ॥

एला पुत्र वृत्तांत ।

तर्ज—कब्बाली

है धन्य नर जगत में, वश काम राज
करते । हटते नहीं शियल से, तिहुँ योग
शुद्ध धरते ॥ टेर ॥ धनदत्त सेठ का सुत
एलायची कंवर था । नटवी स्वरूप लख
हो, विषयांध भान हरते ॥ है. ॥ १ ॥ माना
नहीं किसी का, पितु मात नार तज के ।
वीते हैं वर्ष वारा, नट संग जिनको
फिरते ॥ है. ॥ २ ॥ सीखी है नृत्य विद्या,
पुर पुर में खेल करते । कर्मों के खेल
जवरे, नहिं देर हो विगड़ते ॥ है. ॥ ३ ॥
चढ वंश डोर पे नट, था नाचता सभा

में । नटबी का रूप शक्त नृप सद्गुरु
 को बिसरत ॥ है ॥ ४ ॥ देखूँ न दान नट
 को नीचे गिरेगा आकर । तब तो हमारी
 मारी होगी ये नट के मरते ॥ है ॥ ५ ॥
 मुनिगज उस समय में फिरते लखा है
 नट ने । है धन्य जग में साधु, अप पंक
 दूर हरते ॥ है ॥ ६ ॥ मित्र रूप हर बि-
 चारा पर द्रव्य को बिचारा । पाया है
 काम केवल परिणाम सुख बढ़ते ॥ है ॥ ७ ॥
 प्रतिषेध नृप को दीना मित्र आत्मकाय
 कीना । 'मुनिसूर्य' पद्य गाया है धन्य
 जो सुपरत ॥ है ॥ ८ ॥



पहले के श्रावक ।

तर्ज—भारत देश में जी कैसी २ ।

हमारे पूर्व के जी, ऐसे ऐसे श्रावक
 होगये ॥ टेर ॥ दैत्य आकर कामदेव को,
 दुख दीना अति घोर । तो भी धर्म न
 छोड़ा मन बच, मिलते दैत्य करोड़ ॥ ह
 पुण्या श्रावक सवा रुपये से, करते थे
 व्यापार । तृष्णा तज निर्लोभी होकर,
 करते सद् व्यवहार ॥ ह. ॥ २ ॥ सेठ
 सुदर्शन प्रभु आगम सुन, वंदन को चित-
 चाया । मरने का भय बड़ा यक्ष का, वह
 भी नां उरलाया ॥ ह ॥ ३ ॥ राय प्रदेशी
 को समझावन, किया मंत्री उपचारा ।
 केशी मुनि संयोग मिलाकर, मिथ्या
 तिमिर निचारा ॥ ह ॥ ४ ॥ सु-बुद्धि प्र-

धाम भूप को पुद्गल रूप बताया । पानी
 का परिचय बतला के मिट्टी दूर नशाया
 ॥ ६ ॥ ॥ ५ ॥ कार्तिक सेठी नास्तिक बरखे
 निजशिर माँहि मुखाया । बुझ दिया ताप
 सम बुझर समभाषे डरलाया ॥ ६ ॥ ॥ ५ ॥
 विजय कंधर और बिजया कंवरी एह-
 स्वाधम के मोई । ग्रहचर्य एक शम्पा
 मोकर पाता बुध मनसाई ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥
 चतुरंगधम्भ मूपास अमिग्रह किया
 सका हो भ्यान । सून उतर पांवोपि आया
 रहा अचल जिन भान । ६ ॥ ॥ ८ ॥ अश-
 कबर भी आदिनाथ को एखु रस बढ़ि
 गया । शंख पोकली भाषक आदि, तम
 मन धर्म रंगाया ॥ ६ ॥ ॥ ९ ॥ शरण परेबा
 रक्तकर रूप ने काट दिया निज मांस ।
 शान्तिनाथजी हुए तीर्यकर भेट दिया

जगत्राश ॥ ह. ॥ १० ॥ निन्हव गोशाला
समझाता, दृढ़ रहे आदिकेवार । सूर्ययशा
नृपदेवी वश नहीं, हुये रहे वृतधार ॥ ह.
॥ ११ ॥ मँडूक आचक प्रश्न पूछ के, निर्ग्रंथ
धर्म दिपाया । पिंगल भी स्कंधक समझा
के, वीर चरन सिरनाया ॥ ह. ॥ १२ ॥ सूलि
सिंहासन कियो सुदर्शन, शील प्रभाव
बनाया । नृप प्रदेशी निज नारी पे, समता
रस डरलाया ॥ ह. ॥ १३ ॥ विहल कंवर
चेटक राजा के, शरणागत वह आया ।
राजा विभव की करी न परवा, सुजस
जग में पाया ॥ ह. ॥ १४ ॥ ऐसे ऐसे हो
गये आचक, कहां तक करें बयान । सूरि-
नन्द 'मुनि सूर्य' आछ का, किंचित कीना
गान ॥ ह. ॥ १५ ॥

मनगुप्ति पे जिनदास आवक ।

वर्ग—छ्वाती ।

मातंग मन्त्र मन ये करते हैं पीर
 घर में । घरत अचल घरम को समते
 सुषान रस में ॥ छेर ॥ जिनदाम नाम
 भेष्टि अम्पानगर में रहता । जिन पैम
 एम जिनके टसता नरोदि नग में ॥ मा
 ॥ १ ॥ दिन अष्टमी का पौष्य कीर्ति है
 सुम्प घर में । जिनकी बी नारकुसटा
 राखी विषय के बिष में ॥ मा ॥ २ ॥ होकर
 मिश्रा में परगर उस शुम्प घर में आई ।
 डाफा पसङ्ग पहा पर होकर महा हरण
 में ॥ मा ॥ ३ ॥ पति प्यान घर कहे ये
 पग में गिरा मो पाया । पग बीस से
 बिधाया रहे प्यान के सुरस में ॥ मा ॥

४॥ छूटी हँ खून धारा, हुई वेदना अतुल
 ही । निज नार कृत्य लखभी, नहीं क्रोध
 के धगस में ॥ मा. ॥ ५ ॥ रे ? जीव कौन
 किस के, होते नहीं जगत में । ले भोग
 कृत्य तेरे, बांधे हँसी विघ्न में ॥ मा. ॥
 ६ ॥ निज देह तज उसी क्षण, पाये सुरग
 वैमानी । पति देह लख विचारे, धृग
 भोग के विलस में ॥ मा. ॥ ७ ॥ सुरवोध
 आय दीना, कहें सूर्य धन्य प्राणी । मन
 वश करें जिन्हों की, कीरत दशोहि दिश
 में ॥ मा ॥ ८ ॥

पञ्च विधे ।

४४—रक्षिा ।

करत पञ्च प्रपञ्च न रंज पञ्च सञ्ज
सत्य सुनाते हैं । सत्य सुनाते हैं पञ्च
परमेश कहात हैं ॥ ६८ ॥ पृथ्वी के पंथों
का बरणन कहते करके हारत । प्राण जाय
पर सत्य न आर्षे भुक्त के ये काह । एक
भूप से न्याय बना नहीं रखता सत्य
सम्मान । सजीव कहें दीजे पंचन की
देगे सत्य हवास । पंथों को परमेश ओ
पमा समी लगाते हैं ॥ करते ॥ १ ॥ भूप
कहें भुक्त से हैं कैसे, पञ्च अधिक सत
थान । न्याय सुधारे मेरा कैसे, हैं परमेश
समान । पञ्च परीक्षा करमे कारण पुल-
याये निजधान । क्षिया हाथ में मोती

एला पुत्र वृत्तांत ।

तर्ज—कव्वाली

है धन्य नर जगत में, वश काम राज
करते । हटते नहीं शियल से, तिहुँ योग
शुद्ध धरते ॥ टेर ॥ धनदत्त सेठ का सुत
एलायची कंवर था । नटवी स्वरूप लख
हो, विषयांध भान हरते ॥ है. ॥ १ ॥ माना
नहीं किसी का, पितु मात नार तज के ।
चीते हैं वर्ष वारा, नट संग जिनको
फिरते ॥ है. ॥ २ ॥ सीखी है नृत्यविद्या,
पुर पुर में खेल करते । कर्मों के खेल
जवरे, नहिं देर हो विगड़ते ॥ है. ॥ ३ ॥
चढ वंश डोर पे नट, था नाचता सभा

में । नटजी का रूप सदा मृग सदाजान
को बिसरते ॥ है ॥ ४ ॥ देखूँ न दान नट
को भीचे गिरेगा आकर । तब तो हमारी
मारी होगी ये नट के मरते ॥ है ॥ ५ ॥
मुनिराज उस समय में फिरते लखा है
नट ने । है धम्य जग में साधु, धम्य पंक
वृष्ट हरते ॥ है ॥ ६ ॥ निज रूप उर बि-
सारा पर द्रव्य को बिसारा । पाया है
जान केवल परिणाम सुख बढ़ते ॥ है ॥ ७ ॥
प्रतिबोध नृप को हीना निज आत्मकाय
कीमा । “मुनिसूर्य” पद्य गाया, है धम्य
को सुधरते ॥ है ॥ ८ ॥

पहले के श्रावक ।

तर्ज—भारत देश में जी कैमी २ ।

हमारे पूर्व के जी, ऐसे ऐसे श्रावक
 होगये ॥ टेर ॥ दैत्य आकर कामदेव को,
 दुख दीना अति घोर । तो भी धर्म न
 छोड़ा मन बच, मिलते दैत्य करोड़ ॥ ह.
 पुण्या श्रावक सवा रुपये से, करते थे
 व्यापार । तृष्णा तज निर्लोभी होकर,
 करते सद् व्यवहार ॥ ह. ॥ २ ॥ सेठ
 सुदर्शन प्रभु आगम सुन, वंदन को चित-
 चाया । मरने का भय बढ़ा यज्ञ का, वह
 भी नां उरलाया ॥ ह ॥ ३ ॥ राय प्रदेशी
 को समझावन, किया मंत्री उपचारा ।
 केशी मुनि संयोग मिलाकर, मिथ्या
 तिमिर निवारा ॥ ह ॥ ४ ॥ सुबुद्धि प्र-

धाम भूप को पुष्कल रूप बताया । पानी
 का परिचय बतला के मिट्ट्या दूर नशाया
 ॥ ६ ॥ ॥५॥ कार्तिक सेठी नास्तिक चरहे
 निजशिर साँहि मुकाया । दुःख दिया ताप
 समे दुःखर समभावे उरलाया ॥ ६ ॥ ॥६॥
 विजय कवच और विजया कंवरी सुह-
 स्थाभम के माँई । ब्रह्मचर्य एक शम्भा
 साँकर पाता दुष भगलाई ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥
 चतुरंगभम्भ भूपाल अमिभह किया
 झका हो प्याम । लून उतर पाँवोंपि आया
 रहा अचल जिन आन । ६ ॥ ८ ॥ अशु
 कवच भी आदिनाथ का हथु रस बहि
 राया । शंख पाकली धाबक आदि, तन
 मन धर्म रंगाया ॥ ६ ॥ ९ ॥ शरक परेवा
 रखकर भूप ने काट दिया मित्र मौस ।
 शानिनाथजी हुए तीर्थकर मेढ दिया

जगत्राश ॥ ह ॥ १० ॥ निन्हव गोशाला
समभाता, दृढ़ रहे आठकँवार । सूर्ययशा
नृपदेवी वश नहीं, हुये रहे वृतधार ॥ ह
॥ ११ ॥ मँडुक श्रावक प्रश्न पूछ के, निर्यथ
धर्म दिपाया । पिंगल भी स्कंधक समभा
के, वीर चरन सिरनाया ॥ ह ॥ १२ ॥ सूलि
सिंहासन कियो सुदर्शन, शील प्रभाव
वताया । नृप प्रदेशी निज नारी पे, समता
रस उरलाया ॥ ह ॥ १३ ॥ विहल कंवर
चेटक राजा के, शरणागत वह आया ।
राजा विभव की करी न परवा, सुजस
जग में पाया ॥ ह ॥ १४ ॥ ऐसे ऐसे हो
गये श्रावक, कहा तक करें बयान । सूरि-
नन्द 'मुनि सूर्य' श्राद्ध का, किंचित कीना
गान ॥ ह. ॥ १५ ॥

मनगुप्ति पे जिनदास भाषक ।

७६—अवतारी ।

मार्तण्ड मस्त मन ये करते हैं बीर
 वश में । घरते अचल घरम को रमते
 मुहान एस में ॥ देर ॥ जिनदास नाम
 अष्टि अम्पानगर में रहता । जिन बैन
 पन जिनके ठसता नशोहि मश में ॥ मा
 ॥ १ ॥ दिन अष्टमी का पौषध क्रिमा है
 सुम्प घर में । जिनकी थी मारकुलटा
 गधी विषय के विष में ॥ मा ॥ २ ॥ लेकर
 मिश्रा में परनर उस शुम्प घर में आई ।
 डाला पलङ्क वहाँ पर होकर महा हरण
 में ॥ मा ॥ ३ ॥ पति ध्यान घर लड़े ये,
 पग में गिरा सो पाया । पग बीस से
 बिधाया रहे ध्यान के सुरस में ॥ मा ॥

४॥ छूटी हैं खून धारा, हुई वेदना अतुल
 ही । निज नार कृत्य लखभी, नहीं क्रोध
 के धगस में ॥ मा. ॥ ५ ॥ रे ? जीव कौन
 किस के, होते नहीं जगत में । ले भोग
 कृत्य तेरे, बांधे हँसी विषय में ॥ मा. ॥
 ६ ॥ निज देह तज उसी क्षण, पाये सुरग
 वैमानी । पति देह लख विचारे, धृग
 भोग के विलस में ॥ मा. ॥ ७ ॥ सुखोद
 आय दीना, कहें सूर्य धन्य प्राणी । मन
 वश करें जिन्हों की, कीरत दशोहि दिश
 में ॥ मा. ॥ ८ ॥

पंच विषे ।

७४—रहिता ।

करते पंच प्रपञ्च न रंज्य पञ्च तज्ज
 सत्य सुनाते हैं । सत्य सुनाते हैं पंच
 परमेश कहाते हैं ॥ ३८ ॥ पूर्वज के पञ्चों
 का परमेश कहते करके हास । माय्य माय
 पर सत्य न जायें मूढ के ये कास । एक
 भूप से न्याय बना नहीं रखता सत्य
 सम्मान । सजीव कहें दीजे पञ्चन को
 वैसे सत्य इयात । पञ्चों को परमेश जो
 पमा समी लगाते हैं ॥ करते ॥ १ ॥ भूप
 कहें मुक्त से हैं कैसे पंच अधिक सठ
 यान । न्याय सुधारे मेरा कैसे हैं परमेश
 समान । पञ्च परीक्षा करने कारण दुस्-
 पाये निश्चयाम । लिया हाथ में मोती

राजा, देता यों फरमान । मेरे हाथ मे
 क्या है, तुमको, सत्य जताते हैं ॥ क. ॥२॥
 सुन यों पंच विचारे यहां पे, करना कौन
 उपाय । विना इल्म से कैसे कहना, अब
 तो इज्जत जाय । मौन कहां तक बैठे रहेंगे,
 सुलभे नहीं सुलभाय । पक्ष छोड़ के
 कीना हमने, न्याय सत्य दरसाय । कभी
 न रिश्वत लीनी किसका हृदय दुखाते हैं
 ॥ क. ॥३॥ परमेश्वर का डर मन लाके,
 भरी न भूखी साख । परदारा को माता
 समझी, परधन माना खाक, पंचायत
 खोटी नहीं कीनी, वचन भृत्य एक भाख ।
 अब तो निर्भय होके बोले, दिल है अपना
 पाक । ओठा सबही लेय भरोसा, पञ्च
 पे लाते हैं ॥ क. ॥४॥ लाल कहो मिलके
 सब पञ्चों, साच आंच नहीं आय । राजा

जालो मुट्टी भय तो, लाल हाथ के मांय ।
 राखा कहे विचारी बोझो, गये रुख
 बिसराय । मीन मछ नहीं भूपति यामें
 मयके सत्य महाय । बार बार नृप बोले
 तुमरी पाल दिक्षात है ॥ क ॥ ५ ॥ अब
 तो पञ्च हुये पर पञ्ची मुट्टी झोली राय ।
 मोती बरत हुई लाल हाथ में, सब लख
 अक्षरज पाप । मत्स्य सत्य परखा सप
 जमने माना पञ्च सदाय । सखे का
 सुर होय सहायक मत्स्य सदा ठर लाय ।
 सुरिमन्त्र 'मुनिसूर्य' पञ्च गुण गौरव गाते
 हैं ॥ क ॥ ६ ॥



दोष की लावणी ।

सर्ज—लावणी अष्टपदी ।

धन्य श्री जग में अनगारा, कठिन
 व्रत धारे असिधारा ॥ टेर ॥ छोड़ आरंभ
 गृही दीक्षा । सुगुरु की ग्रहण करे शिक्षा ।
 करे त्रस थावर की रक्षा । लेय सो निर-
 वद नित भिक्षा ॥ दोहा ॥ दोष चयालीस
 टाल के, याचे शुद्ध आहार । पञ्च दोष
 मण्डल का टाले पाले संजम भार ॥ कहूँ
 सब करके विस्तार ॥ क १ ॥ समुच्चय साधु
 काज धारी, घद्यकर आहार करे चारी ।
 वही सो आधा करम भारी, आहार सो
 नहीं ले अनगारी ॥ दोहा ॥ एक साधु के
 नाम से, उद्देशिक कहिवाय । शुद्ध
 अशन में अशुद्ध मिल्या सो, पृति कर्म

हो जाय । गृहस्थ मुनि काम मिथ धारा
 ॥ क ॥ २ ॥ साधु के काज थाप गल ।
 पाहुणा अद् यदसल नाखे । अन्धेरे अन्ध
 धाखे लाके । मुनि नहीं सेबे मौ आखे ।
 ॥ दोहा ॥ मोल उधारो लाय के अदल
 बदल कर लेत । घरसे लाकर देय सामने,
 छुत्ती जोली बेत ॥ विषम मेहिको परि-
 हारा ॥ क ॥ ३ ॥ नियल से लोय अशुन
 लबे पांति हि मवफी एक देबे । आहार
 में आहार अधिक लेबे अशुन ना मुनि
 घर नहीं सेबे ॥ दोहा ॥ सोल दोय उद
 गमन के आचक देय लगाय । उत्तम
 आयक दोय टाल के मुनि को गुरु बदि
 राय । गहे सब दोयों से न्यारा ॥ क ॥
 ॥ ४ ॥ अकल्पनिक मुनि को जो बहिराय
 जिन्हीं के अस्यायुषाय । दोय यों सोहे

साधु लगाय, रमाने वाले चित्र बतलाय ।
 ॥ दोहा ॥ लाइलड़ावे धाय सम, सगा
 सेन की बात । समाचार कहें जहां तहां
 के दूत दोष कही बात ॥ भाव है मिले
 सरस आहारा ॥ क ॥५॥ भूकम्प उत्पात
 गगन लक्षण, व्यंजन तन फुरकन स्वरहि
 सुपन । निमित्त यह आठों का वरणन,
 बता नहीं अशन लेय मुनिजन ॥ दोहा ॥
 जाती गोत्र बताय के, सेवक सम आधीन ।
 वणिमग जसे बचन निकाले, होय दया
 मय दीन । करे हूँ औपधि उपचारा ॥ क
 ॥ ६ ॥ क्रोध कर भय देवे भारी, कृपण
 रे ! होगा तुज ख्वारी । उलट परिणामी
 दातारी, कौन दे तुम बिन ये आहारी ।
 मान चढ़ा ऐसे कहें, दूध दही मन भाय ।
 सुख से छाश मांगे रसलोभी, वचन बदल

दरसाय । कपट कर कहमे में हुशियार ॥
 क ॥ ७ ॥ सरस से दाता से पोसे, पुण्य
 फल कथन करी ओसे । दान सम अपर
 नहीं तोसे लोभ घरकष यों मन डोसे ।
 ॥ बोहा ॥ पदिले वापश्चात से पश वोसे
 अपिकाय । बिद्या मन्त्र जन्म कर सेवे,
 बशीकरय बतलाय ॥ शकुन वा ज्योतिष
 उधारा ॥ क ॥ ८ ॥ दुग्ध सुख योग कहीं
 रजे संजम यों आहार काज मैजे । सोल
 यों दोष गही गजे जिनेश्वर धावा को
 मैजे ॥ बोहा ॥ साधु आषक मिल सगे,
 एषण दोष बिचार । गृहस्थ साधु संशय
 हुए भोजन सन्निहत घर ॥ अयोग्य
 मायन से वे डारा ॥ क ॥ ९ ॥ अशुख पै
 शुख आहार दाले शुख पै सन्निहत को
 भासे । अपंग दातार भनी दाले, मित्र

वस्तु को नहीं भाले ॥ दोहा ॥ विन परि-
 णन हैं शस्त्र से, लीपण घर ततकाल ।
 टपकां पड़तां आहार ले, दश एषण का
 टाल ॥ पालते संजम श्रेयकारा ॥ क. ॥
 १० ॥ वस्तु संयोग सभी टारा. करें परि-
 माण सहित आहारा । प्रशंसा करके
 अङ्गारा, खाय नही निन्दा परिहारा ।
 ॥ दोहा ॥ छह कारण से आहार को,
 तजें करें बुधवान । पंच दोष टाले मंडल
 का, जिन आज्ञा परिमान ॥ “सूर्य मुनि”
 कहें यों सुविचारा ॥ क ॥ ११ ॥



भगवान भी वीर जयन्ती ।

तब—हरिऔध हम् ।

हे यह जयन्ती सौख्यघर भगवान
भी जिनवीर की । हे धान दाता सकल
सुखकर मेधनि मय पीर की दिन आख
यह आनन्द का है सर्व जीवों के क्षिप ।
मनुष्य का उत्थान हो अब मनुष्य जीवों
के दिये ॥ १ ॥ ये जन्म भी जिनवीर का
क्या क्या तुम्हें बतला रहा । क्या काय
करन का अवश प्रत्यक्ष सो बतला रहा ।
बुद्ध देखलो भी ध्यान के उस वीर के
इतिहास को । बुल जायगा भ्रम तम
समी तब पाप्मोग सुविकास को ॥ २ ॥
हे कौन भी जिनवीर अथवा कौन है
उनके पितु । हे कौन त्रिशला भगवती

वा कौन है उनके हित् ॥ खुद आत्मा
 श्री वीर हैं, पुनि ज्ञान है अपना पितु ।
 माता दया है भगवती, वा सत्य है सच्चा
 हित् ॥ ३ ॥ है जन्म ज्यों ही वीर का,
 ऐसे ही अब तुमने लिया । जा धर्म के
 मैदान में, क्यों कर हे पीछा पग दिया ॥
 कैवल्य दर्शन ज्ञानमय है, आत्मा अपनी
 सदा । है आत्मवल भी वीर जैसा, मानते
 हो क्यों जुदा ॥ ४ ॥ उपदेश क्या था वीर
 का, कर्तव्य क्या करने लगे । निज उच्च
 जीवन कार्य में, नहीं नीन्द से अब तक
 जगे ॥ जो हैं पतित निज भ्रात पे, तन
 धन सभी अर्पण करो । वनते विधर्मी हैं
 कई निर्नाथ का पालन करो ॥ ५ ॥ होवे
 मुवारिक आज का दिन, सर्व सज्जन के
 लिये । वात्सल्यता पुनि ज्ञान वृद्धि, संप

हो सय के दियो ॥ पावन पक्षित अगनाथ
भगयन पीर के पदकंज गहो । सब
सुध्म मिलकर एक रुपनि से पीर की
धब जय कहो ॥ ६ ॥



अमृत कहाँ ?

तब—हरिगीत इन्द्र ।

मिल पंडितों ने थाय यह ठाया कि
अमृत है कहाँ ? कहा एक ने मधु में
सुधा तासे कि भीठा है महा ॥ है सब-
वधू सुख पे सुधा ललचाय सब मूर्खों
तहें । शशि में सुधा निधि में सुधा
अरु इन्द्र में कोई तहें ॥ १ ॥ ओ
इन्द्र पे पीयूष हो तो इन्द्र क्यों

होते नये । पीयूष कमला में रहा है,
इसलिए सब जन चहें ॥ धन में यदि
अमृत रहे तो, त्याग क्यों मुनिजन करें।
सम्पूर्ण अमृत मय भरी, वाणी प्रभु की
है सिरे ॥२॥ निज और पर को शांति हो,
वाणी अचल सब जन कहें । सब्बा ही
अमृत है यही, माना सभी धन धन कहें ।
वाणी सुधा का पान कर, प्राणी असंख्या
तिर गये । “मुनि सूर्य” सुख सम्पत्ति
अटल, पावे अमित धारे हिये ॥ ३ ॥

तप ।

तर्ज—हरिगीत छन्द ।

उपवास कर भूखा रहन में तप सम-
झते नर कई । सरदी सहन और कड़-

कड़ाती धूप खामे पर कई ॥ कोई खड़े
 यर्गान में रहते अखल तप मानते । तप
 रेत प गड़ आमे से ओष लठकना
 जानन ॥१॥ नात कई लोह फील प या
 आगते नारी निशा । पीते कई रक्त घोस
 के करते धमक्य चारों दिशा ॥ गो मूष
 पीते मिही खा या स्यास खाते मोद से ।
 नक्ष को पड़ाते काटते रहते पुरानी सोष
 से ॥२॥ तप ! बाल रखने में कहें या
 मूण्ड मगड़वाना कहें । भइमी मगाने में
 कहें या बूँद रखने में कहें ॥ पसा अ-
 घूरा अर्ध कई लोगों के विल में घुस
 गया । परमार्थ क्या उपवास का सखा
 हृदय से खस गया ॥३॥ ओ ओ रही भूलें
 उन्हें मित्र आत्म योगुण देखिये । मय
 क्रोध कामादिक रिपु जिनको जरा अर

लेखिये ॥ अभ्यंतरादि दुर्गुणों को मेट के
सद्गुण धरे । उत्कृष्ट तप यह जानिये,
संसार सागर से तिरे ॥ ४ ॥



लावणी उपदेशी ।

तर्ज—बहरे तबील ।

मन सोचे नहीं पड़ा होके भरम,
मद मोह नशे में हुआ बे शरम ।
मुनि वैन अमोल सुनाते परम,
मतकर गुनहा को तू हो बेरहम॥टेर॥
महावीर भज नम जिनके कदम,
महबूब हमारा है वीर सनम् ।
मत गरीबों पे कर ए सितमगर सितम,
मिसाले सुपन हैं संसार अलम ।

मगन बन अपने भक्त के प्रियतम
 मित्र जायन तेरा जो कठरे शबनम ।
 मुनि सूर्य कहें पढो जैन इत्तम,
 मित्रभी है उम्हें मुक्त मुक्ति हरम । सु ४

स्वार्थ ।

तक—हरिगीति हार ।

जो दीन निर्वन देता के कर गर्व
 हीन बिचारता । होवे अशुभ तब दीनता
 के दीन टकरा मारता ॥ कुछ पाय बिधा
 गर्व धर सब गण में संहारता । संयोग
 में इतरता है सा अस्त आस्त शारता ॥
 १ ॥ नर स्वार्थ में होकर विषय नहीं
 कार्य करने का करें । रहता शुभाशुभ का

नहीं, कुछ भान भी सद्व्युध हरेँ ॥ सब
मित्र होते शत्रुवत्, इस स्वार्थ के व्यव-
हार पर । हा ! जिस जगह हम देखते,
वस स्वार्थ ही आता नजर ॥ २ ॥



ईश-प्रार्थना ।

तर्ज-हरिगीति छन्द ।

हे ईश ! सम्पत्ति पाय के, सन्तोषता
आई नहीं । आपत्ति पाकर के तथापि,
धैर्यता ध्याई नहीं ॥ श्री सम्पत्ति मुझ
पास में, आपत्ति जब टाली नहीं । आ-
पत्ति पाकर सम्पत्ति की, बात कुछ
भाली नहीं । हे वीर तेरे बालकों पे दृष्टि
कर अब तो जरा । जो डूबते भव भ्रम

बिबे कर पार हाको जिनबरय ॥ कुछ
शांति भी मिलती नहीं तेरे बिना अब तो
कहीं । विभ्राम वे अब बान का, ते हीन
की अरजी यही ॥ २ ॥

चतुर्विंशती स्तवन ।

तप—मरे कष्ट तु कष्टों कुआँ मुँह ।

मित चौबीस जिन गुण गाया करो ।
मध्य भक्ति से ज्याम लगाया करो ॥ देर ॥
भी आदिनाथ अजीत सम्मचनाथ अमि
मन्दन प्रमो । सुमति सुपद्य सुपाश्वै जिन
भी चन्द्र सुखकर हि प्रमो ॥ घर सुविषी
सुबुधि लाया करो ॥ मि ॥ १ भी शीतल
भयांशु जिन भी वासुपूज्य हृदय धरो ।

विमल अनन्त जिन धर्म भज भविभाव
 से कलिमल हरो ॥ सब राग रु रोष
 मिटाया करो ॥ नि. ॥ २ ॥ श्री शांति-
 जिन कुन्थु अरह प्रभो मल्लि जिन जग
 राजता । नमियेसु मुनि सुव्रत प्रभो नमि-
 नेम जग यश गाजता ॥ पद पार्श्व रु वीर
 के ध्याया करो ॥ नि ॥ ३ ॥ अरिहन्त
 जिन चौवीस यों सुनिये विनय मम जग-
 पति । श्री सूरिनन्द 'मुनि सूर्य' यों याचे
 अमित सुख सम्पत्ति । प्रभो जिनदास
 अनाथ निभाया करो ॥ नि. ॥ ४ ॥



ईश प्रार्थना ।

एन—भरोख ।

अपनी मफित का रास्ता बताओ मुझे । दित आरम का मान कराओ मुझे ॥
 ॥देर॥ समता रहा नाना-विषी तेरे विना
 संसार में । हो मोह वस अज्ञान में रहा
 झुबता मझधार में ॥ सुखसादि अनन्त
 दिखाओ मुझे ॥ अ ॥ १ ॥ मिथ्यात्व में
 लपझीन हो पथ प्राणियों का मैं किया ।
 चेतन्य खड़खड़ मान के नानाविधि संकट
 किया ॥ हे नाथ अनाथ बचाओ मुझे ॥
 अ ॥ २ ॥ घर पीत श्याम विधविध कई
 पट पहिर के भूषन किया । नट सा बनाया
 प्यास तो भी काम ना किंचित् मया ॥
 अथ शुद्ध स्वरूप बताओ मुझे ॥ अ. ॥ ३ ॥

समझा हृदय में खूब अब तो जन विन
सब फेन है । श्री सूरिनंद पसाय से लहि
शांति की शिव लेन है ॥ वैरी कर्मों से
दूर भगाओ मुझे ॥ अ. ॥ ४ ॥

तर्ज—जमाना रंग बदलता है ।

क्षमा सकल सुखकार, सार शिव
सौख्य दिखाती है ॥ टेर ॥ प्रथम धर्म
लक्षण बतलाया, क्षमा श्रेष्ठ उरधार ।
सफल तपस्या हे।वे जांकी, धरे क्षमा
गलमार ॥ सर्व सो पाप हटाती है ॥ क्ष.
॥ १ ॥ क्षमा धरी परदेशी भूपति, देतां
विप्र निज नार । क्षमा शर्ण ले शिवगति
पायो, अर्जुन मालागार । सुधारी नरभव
जाती है ॥ क्ष ॥ १ ॥ गज सुकुमाल मुनी-
श्वर के सिर, धरा खेर अङ्गार । सोमल
विप्र पे क्रोध जो कीनो, अतुल क्षमा लहि

घार ॥ अमम जर मरण मिटाती है ॥ च
 ॥ १६ ॥ चमा धरी हरिकेशी शिशु पे, सम-
 मावे सद्धिमार । मेठारज और सन्दक
 मुनि भी येदन तरी अपार ॥ तो भी
 समता सुधिमाती है ॥ च ॥ १७ ॥ दीपायन
 अपि क्रोध झीन हो करी तपस्या अपार ।
 असुर होय के मगर दारिका बासकरी
 है चार । क्रोध से सुधबुध आती है ॥
 च ॥ १८ ॥ जहाँ क्रोध की आग लगी है,
 गांधी रूप अज्ञार । चमा शक्ति अत
 काटित तहाँ पे, होवे टपटा गार ॥ महीं
 फिर प्रजझित पाती है ॥ च ॥ १९ ॥ पों
 जानी भवि चमा अचारी हो जाओ मब
 पार । नन्द स्वरि सुनू 'सूर्य मुनि' कहें
 चमा अज्ञानी पार ॥ जिन्हों के रिपदा न
 आती है ॥ च ॥ २० ॥ इति ॥

जिनेश अर्ज ।

राग— गजत ।

तुम्हें अब दीद अविनाशी, दिखाना
 एक दम होगा । अधम मम जान सुख
 राशी, बताना एक दम होगा ॥टेर॥ हुआ
 व्याकुल भ्रमण करते, अनादि दुःख चउ
 गति में । अचल गति पंचमी सुखकर,
 जताना एक दम होगा ॥ तु ॥१॥ सच्चि-
 दानन्द तज कर के, लियो जड़ मान में
 चेतन । हो गई बुद्धि जड़ जिनकी, मि-
 टाना एक दम होगा ॥ तु ॥ २ ॥ तुम्हारा
 नाम ले लेकर, करें मुक जीव की हिंसा ।
 अहिंसा धर्म के पथ अब, लगाना एक
 दम होगा ॥ तु. ॥३॥ विविध पटरंग धर
 करके, कदा कई नग्न हो फिरतां । जो

सोये मोहवश उनको जगना एक दम
 होगा ॥ तु. ॥४॥ कु-गुरु कु बेम की वासी
 भवण अज्ञान वश कीनी । हिना हित
 भाम अव उनको कराना एक दम होगा
 ॥ तु. ॥ ५ ॥ तुम्हारे होय अनुयायी करें
 सो गर आपस में । उन्हीं को पाठ शांति
 का पढ़ाना एक दम होगा ॥ तु. ॥ ६ ॥
 सूरि नन्दलाल सुपसाये मित्रा जिनराज
 सुलकारी । अघम 'मुनि सूर्य' की नैय्या
 तिरामा एक दम होगा ॥ तु. ॥ ७ ॥

मुनि मार्ग ।

रूप—गन्ध ।

धम्म हि तीन के मुनिवर कठिन तप
 ओग धारा है । तभी मुनिपां यह बुद्ध-
 दार्ढ्य तथा परिवार सारा है ॥८॥ गिने

हैं आत्मवत् सबको, अहिंसा धर्म प्यारा
 है । करें पट काय की रक्षा, तिरें खुद
 और तारा है ॥ ध. ॥ १ ॥ कभी ना भूएठ सो
 बोले, भले हो प्राण की हानि । कहें ना
 मर्म भी किसका, वचन इक सच उच्चार
 है ॥ ध ॥ २ ॥ करे ना काहू की चोरी,
 गिने सब द्रव्य को पत्थर । कभी विन
 हुक्म से तुम भी, गहे ना मन सम्भारा
 है ॥ ध. ॥ ३ ॥ सहू छोटी बड़ी नारी,
 गिणे हैं मात सम ताको । हुये हैं आप
 ब्रह्मचारी, किया जग का किनारा है ॥ ध
 ॥ ४ ॥ अशिर सम्पत्ति विभवजानी, रखे ना
 पास में कोड़ी । बने हैं आप वैरागी,
 पाप तज के अठारा है ॥ ध ॥ ५ ॥ कठिन

मुनि माग का पालन नहीं है काम कायर
का । लहो मूरिमन्द का पदकंज सज्जप
जिनका सहारा है ॥ घ ॥ १ ॥

जिनेश प्रार्थना ।

६६—क्याली ।

मगधन् जिनेश सुखकर मुनिये क्यास
मेरा । उद्धार आत्म का अर्थ, कीजे ह-
पाल मेरा ॥ छेर ॥ तेरे अरु का बेरा
मुझ दास जान लीजे । पार्यो गति दुम्बर
से कीजे निकाल मेरा ॥ म ॥ १ ॥ कीना
बिगार मने भूला है आत्म गुण को ।
तेरी हृपा से अर्थ तो होगा निहाल मेरा
॥ म ॥ २ ॥ परमाय को विचार्य मित्र
भाव को विस्तार । गुण स्वरूप बेतन

कीजे विशाल मेरा ॥ भ. ॥ ३ ॥ समता
 स्वभाव प्रकटे, निज आत्म भान होवे ।
 हित वत्स जान हरदो, कलिमल कराल
 मेरा ॥ भ. ॥ ४ ॥ अपनो विरुद विचारो,
 निज दास को सुधारो । सब भर्म
 कर्म वानो तूही दयालु मेरा ॥ भ ॥ ५ ॥
 सूरिनन्द पाद नम के, “मुनि सूर्य” यों
 उचारें । शुभ भाव से तुम्हीं को, वन्दन
 त्रिकाल मेरा ॥ भ ॥ ६ ॥

स्वार्थ ।

राग—श्यामव सागर तू श्रयशामा ।

इह जग मांही स्वार्थ सगाई ।

विन स्वारथ हों जग दुखदाई ॥टेर॥

मात पिता बंधव सत वनिता, विन
 स्वारथ सब छेह दिखाई ॥ इ ॥ १ ॥ होय

सगो मा यद्यपि सेतो स्वारथ अहाँ तहाँ
 होय सखाई ॥ ६ ॥ २ ॥ स्वारथ अम्भ
 मूर्खो मर मट के, सुधधुध सब ही वे
 विमरगई ॥ ६ ॥ ३ ॥ अहर दई माटे निम
 पति को पेखत ही हो। नार पयई ॥ ६ ॥
 ॥ ४ ॥ तन धन बस वीरज हो। मिष पे,
 तिष से सब जन मेम लगाई ॥ ६ ॥ ५ ॥
 सप सहे न्वारथ से अग में, पीत करे मुहु
 वैन सुमाई ॥ ६ ॥ ६ ॥ स्वार्य विधश मटके
 नर मूरख माहिं मजे एक सज्ये सदाई
 ॥ ६ ॥ ७ ॥ मन्व स्वरि रज 'सूर्य मुनि'
 मापे स्वार्य तशी अपिये जिनराई ॥ ६ ॥
 ॥ ८ ॥ इति ॥



राग—नारा मनमा जाणे के गरवी ।

मना, मानव तन लई शूकर्यूरे, नहिं
 भक्ति तरुं भाथू भर्यूरे ॥ टेर ॥ मना,
 माता पिता परिवार मेरे, थयो गृद्ध अति
 संसार मेरे ॥ म. ॥ १ ॥ मना, विषय भोग
 प्यारा लगेरे, जिन वाणी में नहिं श्रद्धा
 जगेरे ॥ म. ॥ २ ॥ मना, वाग महिल सुंदर
 कियो रे, पंचेंद्री विषय सुख भोगियारे ॥
 म ॥ ३ ॥ मना, पाप करी ने धन जोड़ियो
 रे, नहिं मर्ग समय साथे लियो रे ॥ म
 ॥ ४ ॥ मना, धर्म बिना सब आपदारे,
 कहें ज्ञानी गुरु सांची सदा रे ॥ म. ॥ ५ ॥
 मना,, शुद्ध सुगुरु संग कीजिये रे, मन
 धर्म श्रद्धा धर लीजिये रे ॥ म ॥ ६ ॥ कहें
 “सूर्य मुनि” यों उन्हेल मेरे, रहो काज
 साधी शिव महेल मेरे ॥ म. ॥ ७ ॥

ईश-प्रार्थना ।

नमः ।

कीजे कृपा कृपाल अब इच्छित होय
 काय सब ॥ हेर ॥ अमल अबल अवि-
 कार तू कठखामिषी करतार तू । अंजाल
 मेरी दार तू मय सिंधु से करपार तू ॥
 तेरी अमोखी है ये कब ॥ की ॥ १ ॥ तूहि
 मेरे मात तात सखा सखाई तू दिखात ।
 पावन परम पतित नाथ तेरा अकण्ड
 लीना साथ ॥ तुम्ह नाम द्रव्य अर्थ कर्म ॥
 की ॥ २ ॥ परिपूर्ण दर्श ज्ञान मय, अवल
 अटल ध्यान मय । अनन्त लौक्य ज्ञान
 मय अमित गुण निधान मय । तुम्ह दर्श
 दोगे आप कब ॥ की ॥ ३ ॥ तुम्ह-सा म
 देव है कहीं है बीतराग तू सही । तुम्ह

जन्म जरा दूर कर, दास अर्ज ध्यान धर ।
 सुनते नहीं मुझ क्या सबव ॥ की. ॥ ४ ॥
 सच्चा तूही संसार में, भवसिंधु पारावार
 में । तारक तूही आधार में, कहें “सूर्य”
 वार वार में ॥ लहि सूरि नंद पाद पर्व ॥
 की. ॥ ५ ॥



गजल—ईश ।

ईश व्यापी घट विषे और, ज्ञान मय
 भरपूर है । कोई विदूषी लखलखें, ताको
 अखिल ही नूर है ॥ टेर ॥ ना गेह मठ
 मंदिर विषे, और ना वसे को देश में ।
 पृथ्वी अपवायु तेऊ, इनसे सतत सो
 दूर है ॥ ईश ॥ १ ॥ नरमूढ़ बिन पहिचान
 से करता भ्रमण चारों दिशां । सुनता

किसी की हि नहीं, मन में घरी मगकुर हि
 ॥ ई ॥ २ ॥ अकुरेव हिंसक को मनाबे,
 मिज शुद्ध आत्म को तजी । हो अकृता
 में लीम पोता, पाप का अकुर हि ॥ ई ॥
 ३ ॥ भर पीत पठ मानाधिधि हूँदत फिरे
 अकुरेव को । मिज आत्म साधन के बिना
 सब ही निरर्थक कूर हि ॥ ई ॥ ४ ॥ मृग
 मय मरे सुविगीष का, हूँदत फिरे पुरुष
 भूल के । ज्यों सिंहा कारागार में रहता
 न सुख का शूर हि ॥ ई ॥ ५ ॥ कर्ता नहीं
 हर्ता नहीं बेता नहीं खता नहीं । हि सो
 अविनाशी अचल दीना सकल दुख शूर
 हि ॥ ई ॥ ६ ॥ हि कर्म अकुर चेतन अनादि,
 साध में तिल तेल ज्यों । बिज यन्त्र तिल
 से तेल त्यों होता नहीं पंहर हि ॥ ई ॥ ७
 पर आन दरी आरिज सम

को श्रव छानलो । सूरिनन्द ने 'सुनि सूर्य'
को जिन पथ बतलाया भूर है ॥ ई. ॥ ॥

गजस्त—उपदेशी ।

करो कुर्वान तन धन को, जहां पर
की भलाई हो । हटोमत धर्म के पथ से,
भले विपदा समाई हो ॥ टेर ॥ करो पर-
चार दुनियां में, अहिंसा धर्म का निश-
दिन । डरोमत सत्य कहने में, तेग जहां ।
पे दिखाई हो ॥ क ॥ १ ॥ दुःखी दरदी ।
अनार्यों की, करो रक्षा अरे प्यारों ।
करो प्रयत्न अब ऐसा, सभी दुःख की ।
विदाई हो ॥ क. ॥ २ ॥ बड़ाओ प्रेम आपस ।
में, हटाओ द्वेष का खजर । धरो शुद्ध
धर्म में श्रद्धा, जहां सच्चा सरखाई हो ॥
क ॥ ३ ॥ निज निज जाति की देखो, हो ।

गद्दी वधति जग में । तुम्हीं को हिंस है
 येही, मेरी कैसी बढ़ाई हो ॥ क ॥४॥ छेप
 और मान में हो कर किया बर्बाद जाति
 का । उम्हीं के सामने कैसे गरीबों की
 सुभाई हो ॥ क ॥५॥ सूरि नन्दलाल पद
 नमकर कहे मुनि 'सूर्य' यों दितधर ।
 बढ़ाओ संप की सेती तजो पथ प्रा च
 न्याई हो ॥ क ॥ ६ ॥

निन्द ६ ।

निन्दक में पावे तेरा दोष ॥ डेर ॥
 बुद्धिबन्ध धम पाव होयमा धरें धर्म
 ये रोय । निमस कुलजाती नहीं पावे नहीं
 हो बाम मस्तोय ॥ नि ॥ १ ॥ सूरबीर
 भीमाग्य रूपता नहीं पण्डित गुम् काय ।
 यह श्रुति लपवान न कहिये भास्विक

माया मोय ॥ निं ॥ २ ॥ आराधिक होवे
 ना कवहु, कवहुन हो निर्दोष । पीठ मास
 भक्षी सो जाकी, पर निन्दा में होश ॥ निं
 ॥ ३ ॥ निज स्थापक और पर की निन्दा,
 किंचित् ना खामोश । चतुर्गति में भ्रमण
 करे सो, अशुभ कर्म के जोश ॥ निं. ॥ ५ ॥
 करें रत्नत्रय चतुसंघ की, निन्दा सो निशि
 ओस । होवें किल्बिषी दुर्लभ बोधि, जो
 करता है उपक्रोश ॥ निं ॥ ६ ॥ इह परभव
 निन्दा दुःखदाई, लेवें निजगुण खोस ।
 तज निन्दा और चाड़ी चुगली, निज गुण
 को ले पोष ॥ निं ॥ ७ ॥ देव विगागी
 व्याघ्रो जगलख, ज्यों जल विन्दु ओस ।
 मूरिनन्द रज “सूर्य मुनि” यह, मत्स्य कहें
 निर्दोष ॥ निं. ॥ ८ ॥



उक्त—कामा १५ वरुणा १ ।

दया सब जग की माता है, हित
 वत्सल सब जग की पासक । शिव सुख
 दाता है ॥ देवता गुरुज दया की प्रशंसा
 क्रिये ने सर्व निरूप हो काज । दुर्गेति
 पड़ते अधम जनों की, रखे अकालिख
 साज ॥ दया से पावे संसार है ॥ दया ॥
 ॥ १ ॥ सम देखत और अज्ञाधम की,
 दानादि बह हाथ । सुमति मान गले सु
 बिभाषी तप सिसक है । मायन दया
 कुरखल मूलकावा है ॥ दया ॥ २ ॥ काम-
 सिंह असवार कजे नित कंचुक धरिया
 धार । लखा सेगो है पदिरन को साकी
 शील उदार ॥ गुणों का धार ब दाता है ।
 ॥ दया ॥ ३ ॥ दया मगबती जिनके बिज
 में करती निश दिन आप्त ताके अम्मे न

मरण भय विपति होवे छिनमें नाश ॥
 ज्ञानभानु प्रकटात है । दया. ४। आयु दीर्घ
 विपु क्रांत श्रेणी, इस परभव सुख पाय ।
 विभव धर्म सन्तोष मुक्ता, संयम शिव
 दरसाय ॥ दया से ये यश पाता है ॥
 दया. ॥५॥ मेघ कंचर और मेघरथ राजा,
 धर्म रुची अणुगार । द्वाविसा में तीर्थकर
 पाये, दयाधरी भवपार ॥ तूही सब जग
 की बाता है ॥ दया ॥ ६ ॥ निर्धन धन
 प्यासे ज्यों पानी, चातक वृंद विचार ।
 ज्यों चाहते हैं भव भव तुझको रे माता
 सुखकार ॥ सर्व जन गुण तुझ गाता है ॥
 दया ॥ ७ ॥ मति अनन्त हुई हैं जग में,
 मिली न तुझ-सी मात । सूरिनन्द रज
 'सूर्य मुनि' कहें, अखूट तूही मम हाथ ॥
 नाम तुझ श्रेष्ठ सुहाता है ॥ दया. ॥ ८ ॥

ईजिनेश-प्रार्थना

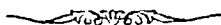
ॐ—सत् । - ।

जिनेश्वर तारे दीन दयाल ।

काज पूरण आस कृपाल ॥टेरा॥

अधम दीन उधारन अतिशय, गुण
गौरव अमिषान । पावन पमै पालक पर
पंकज पुण्योत्तम गुणवान ॥ जि ॥ १ ॥
मील दुष्ट अधम भरतारे गोशालक गुण
हीन । जम्माखी मिन्दबज्रामाष्ट तस तार्यो
लखदीन ॥ जि ॥ २ ॥ कखिपर दुष्ट दया
कर दीणा खरदकोशिक बरहाल । दश
दिया तुम पद पंकज पे ताको बीमो
म्याल ॥ जि ॥ ३ ॥ बांधव के ही भय बिपे
मार्यो सु-काशल पूत । जाची सुमरल पार्य
ततधिम बात यही अद्भूत ॥ जि ॥ ४ ॥

इन्द्रभूति कहतो इन्द्रजाली, ताको सुमार्ग
 वताय । आप समान कियो -जग तारण,
 अपनो विरुद्ध निभाय ॥ जि ॥ ५ ॥ यों
 जानी मम इच्छित पूरो दीजे अविचल
 स्थान । नन्द सूरि सुनू “सूर्य मुनि” यों,
 याचें परम निधान ॥ जि. ॥ ६ ॥



—:भाषा:—

तर्ज— गजल ।

हमारी मोहनी मधुरी, अति उत्तम
 पियारी है । स्वदेशी मातृ भाषा ये सर्व
 को सौख्य कारी है ॥ ढेर ॥ ऋषी भाषा
 ये प्राकृत है और संस्कृत भाषा है ।
 पढ़ाओ और खुद पढ़लो, यही जिनवर

लखारी है ॥ ह ॥ १ ॥ अजायब शिखर है
 इसमें फर्क यकता नहीं हर्गिज । सिखा
 जैसा उसे पढ़लो और लिखी लठारी है ॥
 ह ॥ २ ॥ माझी भारती लिपी, इसी को
 मागरी कहते । उच्चारें देव यह वाणी,
 सभी का मोहकारी है ॥ ह ॥ ३ ॥ जब ही
 से फारसी उर्दू हुई माया से भारत में ॥
 तभी से हिन्दी माया की होगई बहुत
 खारी है ॥ ह ॥ ४ ॥ सरा कुछ भी ली
 ली सो करी इंग्लिश अब हामी । अरे
 प्यार लखो समझो कहाँ मन में लिखारी
 है ॥ ह ॥ ५ ॥ करो अब दान विद्या का
 बढ़ाओ देव माया को । दान नम दान
 नहीं जग में, कही आगम मन्थरी है ॥ ह
 ॥ ६ ॥ श्री महावीर गौतम ने, किया उच्चार
 माया का । पुनः जीवित करो इसको

‘किया उपकार भारी है’ ॥ ह. ॥ ७ ॥ करो
 ‘रत्ना अरे प्यारों, सम्भाली डूबती नैया ।
 ‘सूरिनन्द “सूर्य” ने घाणी, पंढी दुर्गति
 ‘विडारी है’ ॥ ह. ॥ ८ ॥

तर्ज—जमाना रंग बदलाता है ॥ धर्म ॥

‘धर्म पे हैं वीरों का प्यार । मूरख
 मूढ़ कायर कहा जाने । कंचन काच
 विचार ॥ टेर ॥ शूरवीर कायर में अन्तर,
 जैसे सिंह सियार । धर्म रूप मैदान बीच
 में, कातर लख हथियार ॥ पलायन
 होता है उस वार ॥ ध. ॥ १ ॥ बड़े सुवर्ण
 की तेज खच्छता, लागत खूब अगार ।
 अगर चन्दन इच्छु को छेदत, होय गन्ध
 रससार ॥ त्योहि हैं सज्जन गुण आगार
 ॥ ध. ॥ २ ॥ गीदड़ भँभकी देख डरे नां,

रहें अटल गुणधार । तन भन हासि गिष
 न किंखित्, धरें धर्म दे व्याग ॥ देवे
 छिन में पाप विहार ॥ ध ॥ ३॥ काम बीर
 से भाव्य बीर में परिपह सहे अपार ।
 देव आय तन देवन कीमा असुर गया
 फिर हार ॥ जिन्हों की पार बाग बलि-
 हार ॥ ध ॥ ४ ॥ महाबीर शामन के
 नापक, गज सुहुमाल कैपार । आत्म
 रिख अनुमन सा पाये, नाथ वंशज
 मंहार ॥ कीमा कर्म बरी संहार ॥ ध ॥ ५ ॥
 आत्मबन प्रकटाओ प्रतिदिन, निखल
 धर्माधार । नन्द सूरिम्बर शिष्य 'सूर्य'
 पों कहे लकल हितकार ॥ धम ध धर
 यन्त्रा सुविचार ॥ ध ॥ ६ ॥



ईश-पहिचान

तर्ज—जमाना रग बदलता है ।

कीजे ईश्वर की पहिचान, निरर्थक
 क्यों नरभव खोते हो । धरो हृदय में
 ज्ञान ॥ टेर ॥ अचल अटल अविकार
 निरजन, अजर अमर गुण खान । करता
 हरता भरता नाहीं, सकल कर्म करहान ॥
 विराजे सिद्ध स्थान भगवान ॥ की. ॥१॥
 राग ड्रेप तज हुये विरागी, निर-मम निर-
 अमिमान । क्रोध कपट मद लोभ त्याग
 के, मुक्त हुए शिव स्थान ॥ पाये दंसण
 ज्ञान निधान ॥ की ॥२॥ अखण्ड अगो-
 चर अलख अखिल सो, अरि वसु कीना
 भान । हस्त कमलवत् पेखत जग को,
 जोति स्वरूप प्रमाण ॥ जहां पे निराबाध

सुखदान ॥ की ॥ ३॥ वायादिक अमतराय
 पञ्च और वायविक अमतराय ॥ रस्य रति
 मय मीति सुगुप्ता, शोक काम बलवान् ॥
 किये सब जारी मङ्गल समान ॥ की ॥ ३॥
 अक्षय मित्र अविपत्ति पुत्र मिथ्या मर्म
 महान् । अक्षयशु कृष्ण रति—जिमे अक्षय
 अक्षयस कर अक्षयान् ॥ पाये परम प्रमो
 मिर्वाण ॥ की ॥ ३॥ ऐसे अमल अक्षय
 अविनाश मय अवि धर अक्षय । तस्य
 मुरि रज सूर्य कहें यों प्रभु लक्ष्मण सु-
 विज्ञान ॥ सगत सो है सबको सुखदान
 ॥ की ॥ ३॥



परनार-विषे

राग—मरे शम्भू तू काशी बुलाने मुझे ।

परनारी स्नेह लगाओ मती ।

अपनी इज्जत को आप'गर्मि' मती ॥ टे

है नागनी काली यही तन में हला-
हल विष रहा । बोले सुधासम वैनसों
अन्तर कपट वक सम महां ॥ देखी
शहत छुरी ललचाओ मती ॥ प. ॥ १ ॥ है
ये शिखासम दीपकी सुन्दर दमक मोहन
बला । देखी अधम नर मुग्धवन तन धन
सभी देता जलों ॥ परदास बनी दुख
पाओ मती ॥ प. ॥ २ ॥ धर'नैन वान कामन
से घायल किया इसने कई । ब्रह्मा हरि-
हर इन्द्रनर सहु की मती मारी गई ॥

पर मारि से पाप कमाओ मती ॥ प ॥ ३ ॥
 भुली पनामस है यही वृत्ती कटारी आग
 की । धन धर्म धीरे धीरे हरे उलटी
 गती तब राग की । अपनी नीति से
 पाव हटाओ मती ॥ प ॥ ४ ॥ दुख मिथु
 मम परमार सब त्याग न करो इन कर्म
 पा । श्री मुरिमन्द मुनि सूर्य यों मत्पथ
 बतावे धम का ॥ कमी कर्म पुकम कमा
 ओ मती ॥ प ॥ ५ ॥



ॐ अनाथ-धिये ॐ

ॐ—मर सम्पत्त कभी दुख न हो ।

दुखी दुखी की पीर पिछान करो ।

पुछ भी अपने हृदय में मान करो ॥ ६ ॥

देखो दशा इस देश की भारत सभी
 गारत बना । सीमा नहीं कुछ दुख की
 खाने न मिलता है चना ॥ निज जाति
 उन्नति का ध्यान करो ॥ दु ॥ १ ॥ भूखे
 मरे लाखों यहां सब धर्म अपना तज
 गये । होते मुसलमां वा ईसाई अन्य
 धर्मी बन रहे ॥ कुछ दीन अनाथ को दान
 करो ॥ दु ॥ २ ॥ अपनी अपनी जान की
 सब कर रहे हैं उन्नति । सूझे नहीं
 धन्मांथ हो तुमको जग भी सन्मती ॥
 नित स्व-परहित धी मान करो ॥ दु ॥ ३ ॥
 करते परस्पर द्वेष ईर्ष्या सोचते हितनां जरा
 बर्बाद करते द्रव्य का अन्याय पे पग को
 धरा ॥ अब तो कुछ भी धर्म उत्थान करो
 ॥ दु ॥ ४ ॥ निज पेट पशु पक्षी सभी
 भरते जगत में देखलो । तन धन लगा

पात्र दित्त करे मन्त्रा, यही मन्त्र देवताओं
को दे, सर्व सुनि दित्त काम करो ॥ ३ ॥

सुशुद्ध

उर्ध्व—गच्छ ।

सुशुद्ध के वर्ण करने से, मकड़ जल
फल विजाता है । दिनक में, जो अमर
पात्रन शरद गुरु के ओ जाता है, अदिर
मध्यम अरिहन्त, की बाणी कतुल हो काम
सुसने का । उर्ध्वादि, काम फिर होवे,
सुसमय मेव, जाता है ॥ सु. ॥ १ ॥
बिताय फिर काम से होवे, करे सब
पाप कर्मों से, तबै इस जीव, की हिंसा,
पुनि संपन्न, को आता है ॥ सु. ॥ २ ॥

तजें आश्रव तप धारें, करें क्षय कर्म का
 बंधन । अकिरिया होय तब सिद्धि, लहें
 शिव सौख्य शाता है ॥ सु. ॥ ३ ॥ अक्षय
 आनन्द निधि सुख के, अतुल सो द्वार
 दरसावे । जन्म जर मर्ण की विपदा,
 सभी दुख को जलाता है ॥ सु. ॥ ४ ॥
 विषय परमाद जग बन्धन मिटावें ताप-
 त्रय छिन में । स्पर्श पारस किये अय तब,
 तुरत कंचन विभाता है ॥ सु. ॥ ५ ॥ अन्ध
 नर सम भटकते हैं, विना गुरुज्ञान दर्शन
 से । सूरि श्री नन्द के पदकंज, लहे सो
 अघ हटाता है ॥ सु. ॥ ६ ॥



ॐ हमारा सघ, ॐ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

हमारे सघ में मगवय रत्न नर हो
तो ऐसा हो । उजाले जैन के पथ को
बिबधर हो तो ऐसा हो ॥ ६८ ॥ तारे
शुद्ध भीर पर तारे, बिभुस कामम कमक
से हो । प्रकाश जैन को जग में मुनीश्वर
हो तो ऐसा हो ॥ ६९ ॥ ममो तम
प्रम्य से करके, धरे द्विध देश धन तम
के । धरे शुद्ध जैन की भया भावधर हो
तो ऐसा हो ॥ ७० ॥ धरे सब कार्य
भारत के तजे हिंसा क्या धारे । धरे
धातुसह्यता धर में धार्य धर हो तो ऐसा
हो ॥ ७१ ॥ धरे पितुमात की मक्ति
यसे कुल बाल की नीति । धरे परमार्थ

में प्रीति, पुत्रवर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥
 ॥ ४ ॥ करे सब जीव की रक्षा. दया के
 कुंज हो अनुपम । हरे अज्ञान तम सब
 का, गुरुवर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥ ५ ॥
 चहे शिर भी अलेदा हो, डिगे ना धर्म
 से हर्गिज । अटल श्रद्धान जिन मग पे,
 धुरंधर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥ ६ ॥ निभावे
 प्रेम से सब को, बढ़ावे सम्प आपस में ।
 करें श्री संघ की सेवा, सुश्वर हो तो
 ऐसा हो ॥ ह. ॥ ७ ॥ छत्तीसों गुण अखिल
 जामें, वने श्री संघ निर्यामक । धुरंधर
 नन्द मुनीश्वर से, सूरेश्वर हो तो ऐसा
 हो ॥ ह. ॥ ८ ॥



तब पण्डित—जैसेही ।

देखलो कुछ गोर करके सार यहाँ
 कुछ भी नहीं । सुत मित्र बंधू मार बह
 परिवार यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ साथी
 किसी के है कोई माँ, स्थायी की पुनियाँ
 समी । सब अन्त में न्यारे बने हि पार
 यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ होता नहीं
 एक एक क्ष, साथी विपत्ति काह में ।
 एक धर्म के सहारे बिना, आधार
 यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ १ ॥
 क्यों बार ही दिन के किये उद्यत शिखर
 घर बाँधता । संसार सिंधु है तुम्हमई
 मझपार यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ २ ॥
 बह गये बरबीर राजा, दुष्टपति नर
 इन्द्र भी । आकर फटा होगा अरे धन

धाम यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ४ ॥ श्री
नन्द सूरीश्वर पसाये, “सूर्य” कहे हित
वैन यों । जिन नाम सुमरण के सिवा,
सुविचार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ५ ॥



ॐ गुण वचन वाणी ॐ

तर्ज—माता सीता के खोरा में हनुतम डारी मून्दी !

श्री अरिहन्त महन्त भगवन्त अनन्त
गुण राजता जी । जस जाप जपें दुखनसें
मिलें सुख साश्वताजी ॥ टेर ॥ जिनवर
राजें पण तीसे वर गुण भारतीजी ।
प्रथम संस्कार युक्त गुण जाण, उच्च-स्वर
अति गुण पथ्य निधान । तूर्य गुण मेघ

तब मध्य—जगती ।

देखता कुछ गोर करके सार यहाँ
 कुछ भी नहीं । सुत मित्र बंधू नार यह
 परिधाय यहाँ कुछ भी नहीं ॥ देर ॥ साथी
 किसी के हैं कोई ना, स्वार्थ की दुनियाँ
 समी । सब अन्त में न्यारे धमे हैं पार
 यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ १ ॥ होता नहीं
 एक एक क्य, साथी विपत्ति काल में ।
 एक धर्म के सहारे बिना, आधार
 यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ २ ॥
 क्यों बार ही दिन के छिये लघट शिखर
 घर बाँधता । संसार सिंधु है दुस्समई,
 मरुधर यहाँ कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ ३ ॥
 चल गये मरबीर राजा, क्षयपति गर
 रण्य भी । आखिर फला होगा अरे, धन

धाम यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ४ ॥ श्री
नन्द सूरीश्वर पसाये, “सूर्य” कहे हित
वैन यों । जिन नाम सुमरण के सिवा,
सुविचार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ५ ॥



ॐ गुण वचन वाणी ॐ

तज—माता सीता के सोरा में हनुमत्त गरी मूढधी !

श्री अरिहन्त महन्त भगवन्त अनन्त
गुण राजता जी । जस जाप जपें दुखनसें
मिलें सुख साश्वताजी ॥ टेर ॥ जिनवर
राजें पण तीसे वर गुण भारतीजी ।
प्रथम संस्कार युक्त गुण जाण, उच्च-स्वर
अति गुण पथ्य निधान । दूर्य गुण मेघ

गङ्गा सरस्वती, पञ्च में मुख्य प्रतिष्ठा वि-
धान । हि सरस्वती सरस्वती गुण मातृपत्नी की
शिक्षा गङ्गाताजी ॥ श्री ॥ १॥ माया मित्र
मागधी देवगुण नव में मन्त्रीजी । मन्त्रि
सुख सुखक माय प्रकाश नरमन संशय
सर्व पक्षसे । वारमें वारी सममन माये,
अवयव भोता के सुख सुखिकासे । बाद
अवयव अर्थ पदार्थ मेव विस्तारताजी ॥
श्री. ॥ २ ॥ नय निषेध युक्त पदार्थ में
अनिवार्य कहीजी । सत्तरमें वैदिक हृदय
अन्तरे अन्तर में राग द्वेष से न्यारे ।
जासक समझे हृदय मन्त्रारे, कहे धृत
मित्र बन्धन अनुसारे । हि उपदेश वर्णवा
योग्य वस्तु प्रकाशताजी ॥ श्री ॥ ३॥ प्रमु
नवे उपगुणदान भीक्षार्थ नय भीसमेंजी ।
हि धर्मार्थ मोक्ष गुण वाणी विन्द अनु-

शासन घाणी जाणी । क्लीव कुचेष्टा
 रहित चखाणी, अश्रयकारी सत्त्वकहाणी ।
 गद शोक विवर्जित वैन अखण्ड घन
 धारताजी ॥ श्री ॥ ४ ॥ मृदु अलंकार युत
 वाणी कहें प्रभु तीस मेंजी । पद अने-
 कार्य प्रापती कहिये, सुण उत्साह हृदय
 भवि लहिये ॥ मौक्तिक माल शुभ्रजिम
 गहिये, धर्म दृढ़ भाव परम उर रहिये ॥
 श्रम खेद नहीं पण तीसे सहितसु सौम्य-
 ताजी ॥ श्री. ॥ ५ ॥ दुख भूख वेदना वैर
 सर्व तहां उपसमेजी । प्रभु पण तीस
 गिरा गुण जाण, कियो श्री समवायंग
 विधान ॥ यही उपकार सम्पदामान,
 सुणतां इह पर भव कल्याण । ऐसे सूरि-
 नन्द 'मुनि सूर्य', वैन जिन याचताजी
 ॥ श्री ॥ ६ ॥

६जिनेश के चौतीस अतिशयः

एक—महा गीता के अंत में श्रुति की कृपा ।

सेबो सकल अमित सुखदायक जिन
 घर अगपतीजी । तस पद पंकज सेवें
 होय सदा निर्मल मतीजी ॥ देर ॥ सोहे
 अतिशय चौतीसे गुण मखि नाथजीरे ॥
 अवस्थित मूढ़ रोम मज । कैय मितामय
 अशुची सैपन लेख ॥ रुचिरामिय सित
 गोरीर विशेष ॥ आसोआस पद्म पंकज
 सम गन्ध मन मोहतीजी ॥ से ॥ १ ॥ हि
 आहार मिहार अदृश्य चर्म-चषु ठपेजी ।
 मम में चर्म चक्रवर चालें छत्र रश्मि
 श्वेत सुचिशाखे ॥ सिंहासन पाद पीठ
 ठपियाले ॥ चालें इन्द्र ध्वजा जिन आगे
 नम में सोहतीजी ॥ से ॥ २ ॥ पुण्य फल

ध्वजा पतायुत तरू अशोक छायां करेजी ।
 पृष्ठ भा-मण्डल तम नाशे, मंजुल भूमि
 भाग विकाशे ॥ अधोमुख कंटक पगतल
 भासे ॥ अनुकूल षट्कृतु हो सुख स्पर्श
 अतिशय सम्पत्तिजी ॥ से ॥ ३ ॥ योजन
 भूमि भाग हो स्वच्छ सुगन्ध समीर से
 जी ॥ सूक्ष्म घन से धूल समावे,
 जाणूं तक पुष्प अचित वर्षावे ॥ अनुकूल
 इन्द्र विषय रहावे ॥ युग वीजता चमर
 अमर पावें रतीजी ॥ से ॥ ४ ॥ वाणी प्रिय
 पुनि भाषा अर्थ मागधी जाणिये जी ॥
 समझे नरसुर तिर्यग भाषा, होवे वैर
 विरोध विनाशा ॥ अन्यमति होवे पद
 कज दासा ॥ वादी प्रतिवादी जिन देख
 कुबुद्धि विनाशती जी ॥ से ॥ ५ ॥ जहां
 विचरे प्रभु सौ-सौ कोस ईति भय नां

हुये जी ॥ मारी लखर स्रक्त मयनाही,
अनाधिक वृष्टि नहीं पर्यार्थ ॥ अशान्ति
शान्ति अहां दरसार्थ ॥ अहां पे पदिके हो
सब भीति सो आवे हतीजी ॥ से ॥ १ ॥
राजें अतिशय गुण बीतीसे पंतीसे भार-
तीजी ॥ केवल काम वर्य सुविभाये
लोकालोक भाव सुविकाये ॥ अरजीवास
सूर्य परकाय ॥ मागे अचल सम्पति
नम के नन्द सूरि संपत्तीजी ॥ से ॥ ७ ॥

ॐ बाणी-महिमा ॐ

ॐ—सगरी ।

बुद्ध दोहग वारिद वाक्य को वारण
जिनपर वाणी है । जो मर व्यापे उसी के
महर्षधन बिरसानी है ॥ हैर ॥ अय अय

श्री जिनवाणी तेरी कौन सके महिमा
 वरणी । कोटि जिह्वा थके मुख तू है आ-
 तमहित करनी ॥ भव भव भमर्ते अधम
 जनों की पार करे पल में तरणी । कुमति
 कुगति के धारक जनकी छिन में अधमल
 दे हरणी ॥ सब जन के हितकारी प्यारी
 उपकारी शिवदानी है ॥ जो ॥ १ ॥ नित
 पट नर एक नारी जिनका घातक था
 अर्जुन माली । छह महिनों तक अधम ये
 कीना कृत सुकृत टाली ॥ वीर जिनन्द
 पदकज ले छिन में अधमल दीना है
 जाली । छह महिनों में मुक्त गया सो जिन
 आणा उत्तम पाली ॥ दादुर नाग बाघ
 तस्कर कई तारे पेसे प्राणी हैं ॥ जो ॥
 २ ॥ नृप परदेशी संयति श्रेणिक कृष्ण
 नरेश्वर आदि महान । जिनवाणी का

पान कर सकल किया मध घर भयान ॥
 पुष्प प्रकट हो उम्हीं जीव के सुनें पर्ये
 सो जिनवर नाम । तीन मुष्पन की पड़ी
 सम्पदा शिब मंदिर की है सोपान ॥ अ
 नाम तिमिर सब नसें परम वही बने
 मनुज सत्कामी है ॥ ओ ॥ ३ ॥ गौतम
 गुणधर सुण के बाणी आत्म गुण पर-
 काश किया । पड़ी सिद्ध है इसी में आवि
 अस्त एक माध किया ॥ रे माता जिन
 बाणी बर्णन गुण भर्ति जाय किया । मन्द
 सूरीम्बर सुना के जिनवाणी मुक्त तार
 दिया ॥ 'सूर्य मुनि' बित करठ सेवनां
 जिनवाणी उरठाणी है ॥ ओ ॥ ४ ॥



स्व. पूज्य श्री नंदसूरीश्वर स्तुति ।

माता सीता के खोरा में इनुन्त डारी मून्दछी ।

वन्दौ चरण युगल श्री पूज्य गुरु नंद-
लाल के जी । पावन परम पुनीत पुनवान
विशद् गुणमाल के जी ॥ टेर ॥ पाई तत्त्व
रुची हिरदा में जिनवाणी धरी जी ॥
सुगुरु श्री गिरधरलाल महान, वाणी
ताकी सुधा समान । सुण कर भ्रमतम
भग्यो अनाण ॥ हेगये परम विरागी
ममता जग की टाल के जी ॥ वं ॥ १ ॥
हिंसा भूठ अदत व्यभिचार परिग्रह त्या-
गियोजी । करुणा सब जीवत पे धार,
दसविधयती धर्म को पार । कीनो पंच
प्रमाद निवार ॥ धरके इरिया समिती
चाले चाल मराल के जी ॥ वं ॥ २ ॥ धर

परमारथ पद पुष्पगल परिचय को हरे
 जी ॥ अक और चेतन मित्र मिहार, मम
 युद्ध प्याने स्थिरता धार । कोमल कठिन
 ध्वज सुविचार । धरतें विपरीत ये सम
 भाव जिनम् पथ जाल के जी ॥ बं ॥ १ ॥
 सुमानस मानस से असुबैत सतत समूत
 मरे जी ॥ द्वाविश परिसह को समधार
 जीते राग द्वेष अपद्वय । राजत अप
 सम्पदा मार ॥ सब ही विपत नसे अस
 सबै दशैवरमास के जी ॥ घ ॥ ४ ॥ श्री
 सूरि गुरुगुरी भगवन्त अधम ममजान
 के जी ॥ अर्जीदास सूर्य की सीजे कृपासु
 दश दया कर दीजे, बुद्धि अचल अमल
 मम कीजे ॥ दोवे मंगल निश दिन प्याता
 नाम दयास के जी ॥ घ ॥ ५ ॥



○ चतुर्विंशति ○

सर्ज—जमाना रग बदलता है ।

ध्याओ चतुर्विंश भगवान् । विघ्न
हरन बन्धन भव जारन, दिव शिव
सम्पति खान ॥ टेर ॥ आदि अजित
सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुख
कान । सुपार्श्व चन्दा प्रभु सुविधि,
शीतल श्रेयांश वखान । वासुपूज्य हरिये
मम अज्ञान ॥ ध्या. ॥ १ ॥ विमल अनन्त
धर्म शाति जिन, कुन्थु करत कल्याण ।
अरमल्लि मुनि सुव्रत स्वामी, अमित
दर्शन ज्ञान । लियो है अविचल पद
निर्वाण ॥ ध्या. ॥ २ ॥ नमिनेम पारस जग
नायक, दायक परम निधान । अन्तिम
श्री वर्धमान जिनेश्वर, प्रकट भये भू

भान । अहर्निश कीजे मंगल गान ॥ ध्या
॥ २॥ ये खोबीन जिम देष सेष से होवत
ताहि समान । पुढरीकादि गीतम गण
मुनि देखो इच्छित वान । हमारा निज
गुण हो उत्थान ॥ ध्या ॥ ४ ॥ भय भय
हरन शरण में तारो, लीमो हिरुम ध्यान ।
सरि नन्द पद मेढ 'सूर्य मुनि' कहे करके
अज्ञान । सुकानी भजलो जिम अमिधान
॥ ध्या ॥ ५ ॥



॥ ईश्वर प्रार्थना ॥

ॐ नमः—शुभ ।

लगी है आस दरशन की तुम्हारे
शरण में भगवन् । कहे अथ कोटि गुण
गाये पढ़ा ॥ अरण में भगवन् ॥ देर ॥
साही है ताप भय भय में अनन्ती नर्क

तिर्यग में । तुम्हारे नाम की सुखमय,
 लही अवतरण मैं भगवन् ॥ ल. ॥ पड़ी है
 भूल चेतन में, फिरे मोहांध चक्र में ।
 तुम्हारी मोहनी वाणी, धरी नां करण में
 भगवन् ॥ ल. ॥ तीव्र इच्छा से अहोनिश
 ही, करी हिंसा मगन होकर । दयामय
 सुक्ति को सुनकर, लग्यो अब डरण मैं
 भगवन् ॥ ल. ॥ रुच्यो सम्यक्त्व नां शुध
 मन, रहियो अज्ञान के पथमें । मुक्त कीजे
 जनम जर से, करूंगा मरण मैं भगवन् ॥
 ल. ॥ हर्यो ना कर्म दल कोटी, बन्धे पा-
 तिक जो पूरव के । कथा कर्मों की कहां
 तक ही, करूँ सब चरण मैं भगवन् ॥ ल. ॥
 पूज्य नन्दलाल जगत्राता, दिखायो वीत-
 रागी को । जेन 'मुनि सूर्य' अहोनिश ही,
 रहियो है स्मरण में भगवन् ॥ ल. ॥

ॐ जिन स्तुति ६६

ॐ—६६।

सुख शान्तिनाथ दीजे, मुझ दीन के
 दयाला । खरखो में का पकाई एक
 लीजिये मयाला ॥ ६६ ॥ है सौख्य सिन्धु
 पर्यंक शुद्ध का न पार पावे । एक नाम
 से पलावे, सुख ब्रह्म कर्म जवाला ॥ सु ॥
 १ ॥ है आत्म पाति के मम अंगुण भरे
 अनादि । आनादि आत्म सुख को तज
 हो रहा निराला ॥ सु ॥ २ ॥ पञ्चास्य
 शुद्ध चेतन, कर्मों के पंक सिपट । निज
 मान भूल कर के, पर ब्रह्म को सम्माला
 ॥ सु ॥ ३ ॥ मत मेव पक्ष धामे, पञ्चएक
 सत्य माने । हिंसा में धर्म ठामे शुद्धों
 का संग आला ॥ सु ॥ ४ ॥ कर पाप नाश

मेरे, ज्योति स्वरूप भगवन् । निज स्थान
 दास जानी, बतला तू कर कृपाला ॥ सु.
 ॥ ५ ॥ सूरि नन्दलाल गुरु के 'मुनि सूर्य'
 ध्यान ध्याई । स्तवन इन्द्रप्रस्थ में ये, सुन
 विश्व सेन लाला ॥ सु. ॥ ६ ॥



卐 भगवन् 卐

तर्ज—कव्वाली ।

दुख दूर श्रव हमारा, कीजे तू विश्व
 भगवन् । हमको धरम सहारा, दीजे तू
 विश्व भगवन् ॥ टेर ॥ मझधार में पड़ी
 है नौका ये आय मेरी । कर पार इसको
 तट पे, लीजे तू विश्व भगवन् ॥ दु. ॥ १ ॥
 है देव तू विरागी, हाता है भाव घट के ।

ॐॐ जिन-स्तुति ६६

ॐ—ॐनाम ।

सुख शक्तिनाथ दीजे, मुक्त दीन के
 दयाला । बरखों में आ पड़ा हूँ रख
 लीजिये मयाला ॥ हेर ॥ हे सौख्य सिन्धु
 पर्यंक गुण का न पार पावै । एक नाम
 से पलावै सुख द्रव्य कर्म ज्याला ॥ सु ॥
 १ ॥ हे आत्म घाति के मम अचगुण भरे
 अनादि । कामादि आत्म सुख को तज
 हो रहा निराला ॥ सु. ॥ २ ॥ पञ्चास्य
 गुण चेतन कर्मों के पंक क्षिपदा । निज
 मान भूल कर के, पर द्रव्य को सम्माला
 ॥ सु ॥ ३ ॥ मत भेद पक्ष ताने, पातएड
 सत्य माने । हिंसा में धर्म ठाने गुदभों
 का संग टाला ॥ सु. ॥ ४ ॥ कर पाप नम

महावीर

तर्ज—धन २ जग में वह नर नार ।

शासन नायक श्री महावीर, जगदा-
नन्द बढ़ाने वाले ॥ टेर ॥ प्रभुजी दशवें
सुर से आय, क्षत्रिय कुण्ड नगर के
मांय । लीनो जन्म तहां जिनराय, तिमिर
मिथ्यात्व मिटाने वाले ॥ सा. ॥ १ ॥ नृप
श्री सिद्धारथ हैं तात, श्रीमति त्रिशला
देवी मात । वृद्धि सुख वैभव हुई पर्याप्त,
जग में जश प्रगटाने वाले ॥ सा. ॥ २ ॥
संसार सकल परिवार, दीना मोह ममता
को टार । लीना केवल कर्म विडार, दउ
विध धर्म बताने वाले ॥ सा ॥ ३ ॥ सुनके
वीर जिनन्द उपदेश ग्यारा गौतम आदि
गनेश । लीनो संयम चउदस सहेस,

मधुबान्ध मर्म मेरा हरखे तू विन्ध मगधन् ॥ पु ॥ २ ॥ तेरे लिये हा ! केई बध प्राणिपों
 के करते । उनके हृदय में सुमती धरखे
 तू विन्ध मगधन् ॥ पु ॥ ३ ॥ मिथ्यात मय
 अनादि अकामतम मरा है । सुख काज
 का उखाता, करखे तू विन्ध मगधन् ॥ पु
 ॥ ४ ॥ तू है अमस्त कामी और शक्ति भी
 अनन्ती । वह आत्म शक्ति मुझ में भर
 खे तू विन्ध मगधन् ॥ पु ॥ ५ ॥ मठका हूँ
 लूब अय में तेरे बिना मैं हरवर । अब तो
 धरख का बेरा रखखे तू विन्ध मगधन् ॥
 पु ॥ ६ ॥ सूरिनन्द 'सूर्य' तुझको ध्याता है
 मान भर के । किंचित् विनय हमारी
 लखखे तू विन्ध मगधन् ॥ पु ॥ ७ ॥



अहियासे, छेद पुराकृत पाप ॥ जि. ॥ २ ॥
 द्वादश वर्ष साढ़ा छे महिने, छुमत्य रहे
 वर्द्धमान । नित्यानन्द अखिल प्रकाशक,
 पाये केवल ज्ञान ॥ जि ॥ ३ ॥ गौतम गण-
 धर मुनिवर आदि चउदस सहस प्रमाण ।
 सहस छत्तीस सु साधवी सोहें, चिंता-
 मणि गुणखान ॥ जि ॥ ४ ॥ पांवापुरी में
 अन्तिम जिनवर, कीनो है चउमास ।
 कार्तिक वदी अमावस निशि में, लीनो
 शिव सुख वास ॥ जि ॥ ५ ॥ महिर करो
 मुझ साहिव शीघ्र ही, दुष्कृत दूर निवार ।
 सुख निश्चय अचिचल पद दीजे, कीजे
 भवदधिपार ॥ जि ॥ ६ ॥ श्री पूज्य दया
 निधिवर नन्दलाल महाराज । तास चरण
 रज 'सूर्य मुनि' कहे, सुनिये श्री जिनराज
 ॥ जि. ॥ ७ ॥

हिंसा धर्म नशानें चाहे ॥ सा ॥ ४ ॥ प्रभु
 श्री चरम जिनेश्वर कीर, कर मय व्यापि
 से मम तीर । सही है लख चौरासी पीर,
 तुम्हीं विश्वेश हटाने चाहे ॥ सा ॥ ५ ॥
 तज सब दुष्कृत दीनदयाल, अथ सारथ
 बहोसर साल । मेरी चरण पूज्य नन्द-
 लाल 'सूर्य' पों विजय अताने चाहे ॥
 सा ॥ ६ ॥

॥ जिन गुण ॥

उक्त—चतुर नर बूझने छार । १ ॥

विमन्द मम बीजे अट वर्यजन । रक्षियो
 नाथ मिसल तरसन ॥ डेर ॥ अहासा प्रभु
 श्रीबीसबां शासन ईश दयाल । सुप सि-
 द्धारथ भिशला राखी ताको तनय कपाल
 ॥ अ १ ॥ तज वैभव सुख अस्थिर अंगल
 संयम श्री तें आप । सुरनर पशु । परिसर

त्रिशला तनय जगताजसूजी ॥ मु ॥ ६ ॥
 श्री पूज्य गुरुनन्द पद परें जी । यों “सूर्य
 मुनि” विनती करेजी ॥ मु. ॥ ७ ॥

उपदेश

तर्ज—म्हनि म्हेर करीने वेगा तारजोजी ॥ गरवी ॥

घना जाप जपो जिन राजका रे । कर
 साधन आतम काज का रे ॥ टेर ॥ मना
 यौवन वय वीती गयो रे । मन सुकृत
 करवानां थयोरे ॥ म. ॥ १ ॥ मना आई जर
 अङ्ग थर हरे रे । मन इच्छा नूतन बढ़ती
 रहे रे ॥ म ॥ २ ॥ मना कान पुरा उजड़
 थया रे । गढ़ दन्त पूरी टूटी पड्यारे ॥ मु.
 मना आंख नाक पानी बहेरे । नित खास
 सांस बढ़ती रहे रे ॥ म. ॥ ४ ॥ मना केश

—विनय—

तर्क—पदमे १२ कहीये वेगा ठारमेगी ॥ मणी ॥

मुम्भ अरज सुमो जगदीश्वरदेवी ।
 करे नम्र विनय असिलेभरदेवी ॥ हेर ॥
 प्रभु अतिशे गिरागुप्त शोभताजी । प्रभु
 अनुपम जगजय ओपताजी ॥ मु ॥ १ ॥
 प्रभु स्फटिक सिंहासन राजताजी । जय
 शब्दि सिर पर छाजताजी ॥ मु ॥ २ ॥
 प्रभु जमर जमरगण दारताजी । ठर
 जगोक शोक संहारताजी ॥ मु ॥ ३ ॥
 सुम वैन विनय मव कम बसेजी । सुर
 तिर्यग मर मन सम बसेजी ॥ मु ॥ ४ ॥
 प्रभु ठारक विरुद्ध विचारियेजी । कृपा-
 निधि महोदधि तारियेजी ॥ मु ॥ ५ ॥
 मम आस जगी जिनराजसेजी । श्री

ष्छाचारी रमतूं । पर की कीरत श्रवण
 करीने, सम भावे नवि खमतूं ॥ ना. ॥ १ ॥
 पर वैभव लख धीर धरे नां, मात्सर्यता
 मन धरतूं । पर वंच वैराग्य कियो सहु,
 दंभ धरी जग ठगतूं ॥ ना. ॥ २ ॥ नैन गिरा
 श्रुत इन्द्रि आदि, कर पद विहीन है दंतूं ।
 घुद्धि घटी तन एते थकें सह, तो पण
 लोभ न घमतूं ॥ ना ॥ ३ ॥ सुकृत कार्यमां
 विघ्न करे तूं, पर-निन्दा रहे रटतूं । विन
 अकुश चारुण ज्यों मदमां, त्योहि मन
 अनुसर तूं ॥ ना. ॥ ४ ॥ जलधि तरंग
 घंचल कपि त्योहि, मन मूरख रहे
 फिरतूं । क्षानी ध्यानी कवहु मानी, निश्चल
 एन विठरतूं ॥ ना. ॥ ५ ॥ लिंग नपुंसक
 कहे जग तोहूं, काज निषेध ही करतूं ।
 सेर चालीस थीं, मण, तेथी

सभी घोसा गया रे । सह अन्न वरम
 लटकी गया रे ॥ म ॥ ५ ॥ ममा हूँगर
 सम बेरी मई रे । कड़ी बाँधी हुई लाठी
 गड़ी रे ॥ म ॥ ६ ॥ मना लाठी ने कुछ
 नाठी गई रे । मई लाठी लाया मम में धई
 रे ॥ म ॥ ७ ॥ ममा खेत सभी वज्र
 गया रे । बोई बीज धर्म फल ना लाया रे
 ॥ मु ॥ ८ ॥ मना पूज्य मन्त्र गुरु ध्याई रे ।
 'सुमि सूर्य अचल पद पादये रे ॥ म ॥ ९ ॥

मन

हरे—ही यह कभी लाठी ।

मन मार्द रहे ममत् माध मन मार्द
 रहे ममत् । अनुमत् एस मधि गमत् ॥
 हेर ॥ माम् अमे सम्मान रहे मन शि-

कार । प्रकट ही नवनिधि के आगार ॥
 ॥ भ. ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र वंधु पितु माता,
 और सभी परिवार । देत छेह पल में
 बिन स्वारथ, जो हो सच्चा यार । मित्रवर
 देखो आंख उधार ॥ भ ॥ २ ॥ सप्त घात
 विमल पुनि जाति, उन्नत ही आगार ।
 राज मान धन धान ये सब ही, अस्थिर
 है दुख कार । सार इक नाम जिनन्द का
 धार ॥ भ ॥ ३ ॥ भूएठ कपट माया छलबा
 जी, तज प्रभु से कर प्यार । शुभ अशुभ
 निज काज किया सो, आप ही भोगनहार
 निश्चय है भूएठा संसार ॥ भ. ॥ ४ ॥ अवि-
 नाशी अविकार निरंजन, भज मन दढ़ता
 धार । पूज्य श्री नन्द पद कज ध्याई,
 'सूर्य' कहें हितकार । कीजे निश दिन
 पर उपकार ॥ भ. ॥ ५ ॥

गति में बढ़तु ॥ मा ॥ ५ ॥ तिथी उत्कृष्टि
 अन्तर्महोत्तमी बढ़त रहे पुनि घटतु ।
 अठदस ठाणै शैल अयोगी, तब ही है
 अविचरतु ॥ मा ॥ ६ ॥ मन हय पीते
 उत्तम नर ते घामी रहे निठ दम तु ।
 श्रीमम् पूज्य नन्द अरख कछ, 'सूर्य मुनि'
 रहे नमस्तु ॥ मा ॥ ७ ॥



ॐ उपदेश ॐ

तर्क—काला रस कल्ला है ।

मज मन महावीर सुखकार ।

सुख सम्पत्ति शिष शान्ति निकेतन
 है वह अगदाधार ॥ देखा मय मय भाति
 पुन ओ माखी ठाको सुख दातार । रोग
 शोक सम्ताप मुरत ही, नाम से हो अय

कार । प्रकट ही नवनिधि के आगार ॥
 ॥ भ. ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र वंधु पितु माता,
 और सभी परिवार । देत छेह पल में
 विन स्वारथ, जो हो सच्चा यार । मित्रवर
 देखो आंख उधार ॥ भ. ॥ २ ॥ सप्त घात
 विमल पुनि जाति, उन्नत ही आगार ।
 राज मान धन धान ये सब ही, अस्थिर
 है दुख कार । सार इक नाम जिनन्द का
 धार ॥ भ. ॥ ३ ॥ भूएठ कपट माया छलवा
 जी, तज प्रभु से कर प्यार । शुभ अशुभ
 निज काज किया सो, आप ही भोगनहार
 निश्चय है भूएठा संसार ॥ भ. ॥ ४ ॥ अवि-
 नाशी अविकार निरजन, भज मन दृढ़ता
 धार । पूज्य श्री नन्द पद कज ध्याई,
 'सूर्य' कहें हितकार । कीजे निश दिन
 पर उपकार ॥ भ. ॥ ५ ॥

॥ अरज ॥

उप—मैं वस्तु गन्धर देव देव ॥ बाल्यो ॥

अथ अथ अगवाधार अगत गुरु
 सुखिये अरज हमारी ॥ हेर ॥ मध अमर
 करत संसार अस्त ही कास मयो मुक्त
 को । एही कुमति कुदेव दित्त आनी
 अर को मैं चेतन मानी । पारस मखिको
 धोर सियो हां ! कंकर कर में घारी ॥
 अ ॥ १ ॥ कस्यपुष्ट मैं पाप कुठार लें
 कीमो ताको सहारन । अधम मूर्ख अज्ञान
 सियो नां जिन पथ में सुख धारन । हिंसा
 में धर्म बतायो सुगुरु सुदेव सुसायो ।
 प्रभु हेतु किया वध पीब साध के धर्म
 अति मैं दित्तकारी ॥ अ ॥ २ ॥ अगम
 अगोचर देव अगम अर सत्यु गद मय

टारी । ऐसे श्री जगदीश, अज्ञ में आन्यो-
 ताको साकारी । हिंसा भूठ अदत व्यभि-
 चार, कर पाप रूखो ससारा । हर भव
 व्याधि शोक, नाथ मम सेवक लख तू
 उपकारी ॥ ज ॥ ३ ॥ जो अनन्त भव विर-
 तंत, अन्त किम ओगुण को थावें । क्षाता
 घट घट भाव, जपे तुज जाप पाप भय
 विरलावें । प्रभु ऐसो तूं अविरागी, लख
 आत्म दशा अव जागी । सूरिनन्द चरण
 रज कहें, 'सूर्य मुनि' देखो भवनिध तारी
 ॥ ज ॥ ४ ॥



तर्ज — जमाना रग बदलता है ॥ गजल ॥

जगत में दो दिन के महेमान । जो
 जनमे सो निश्चय एक दिन, हो ताको
 'अवसान ॥ टेर ॥ क्यों विरचे जग देख

अघिर ही आ बादस के काम । इन्द्रयात
 सम क्यात है अग का, देखो भिन्न सुमान ।
 इक्ष्वा में व्याघो भी भगवान ॥ अ ॥ १ ॥
 विष्णुमणि को पाप हाथ में कहर करे
 इन्द्राय । अग उदायत पैंके ताको, मूरख
 मर अकाल । नहीं है ख-पर हित का भाम
 ॥ अ ॥ २ ॥ इक्ष्वा भर अहंकार मिमै मन,
 हं मैं अति घमवान । अघिर अक्षय गये
 तज के ताका हि न निशाम । वृषा क्यों ?
 धरता हि अमिमाम ॥ अ ॥ ३ ॥ खंचल
 कात अहो निश तेरे घुम रहा हि अल ।
 हा सुचेत कीजे शुभ कारज वा दीनम
 का दान । पीजे अफित पूरा विधान ॥ अ
 ॥ ४ ॥ दीपम पूर नदी अल सैत, दावत

आयु हान । सूरिनन्द रज कहे, “सूर्य
मुनि” कर आतम कल्याण । धरो मून
सतगुरु का श्रद्धान ॥ ज. ॥ ५ ॥



तज—श्रीजिन मुजने पार उतारो ॥ आशावरी ॥

ऐसे निर्ग्रथ गुरुजी हमारे । जो आप
तिरे पर तारे ॥ अज्ञान तिमिर भर्यो घट
भीतर, ते सब टालन हारे । मोह निचारे
भये जग त्यागी, स्व-पर स्वरूप निहारे ॥
ऐ ॥ १ ॥ ब्रस थावर की हिंसा परहर,
अनुकम्पा रस प्यारे । भूँठ अदत्त परिग्रह
आदि, अघ अष्टादश टारे ॥ ऐ. ॥ २ ॥
नवविध बाहु सहित ब्रह्मचारी, नारी नागन
घारे । बाह्य अभ्यन्तर एक स्वभावे, चरण
करण मग धारे ॥ ऐ. ॥ ३ ॥ ध्यान धर्म को

अघोर ही ओ बाइछ के काम । इन्द्रास
 सम क्यास है अग का देखो भिन्न सुजान ।
 इक्ष्वाकु में व्याघ्र भी भगवान ॥ अ ॥ १ ॥
 चिन्तामणि का पाय हाथ में कर करे
 इन्द्रास । काल दशरथ के ताको, मूरख
 मर अज्ञान । नहीं है स्व-पर हित का मान
 ॥ अ ॥ २ ॥ इक्ष्वाकु पर अहंकार भिन्न मन,
 हूँ मैं अति धनवान । अघोर अहं गये
 तब के ताका हि न निशान । पूछा क्यों ?
 परला है अतिमान ॥ अ ॥ ३ ॥ बंजर
 काल अहो मिश तेरे घूम रहा है काम ।
 हो सबेरा कीजे शुभ कारख बा दीनन
 को दान । कीजे यन्त्रि पूरा विधान ॥ अ
 ॥ ४ ॥ दीवन पूर नदी अल जैसे, दोषत

सजे—वारी जाऊंरे सावरिया तुम पर ॥ सोरठ ॥

एजी क्रोध महा दुःखकार खवार पल
में करेजी ॥ टेर ॥ इह भव परभव है दुख-
दाई, भान सर्व हां जाय भुलाई । कई
विपखाई, लाज काज त्यागी मरेजी ॥ ए.
॥ १ ॥ निर्दयता घट जाय समाई ॥ करे
प्राणवध हिंसक थाई ॥ प्रभुता जाय वि-
लाई, क्रोध हृदये ठरेजी ॥ ए ॥ २ ॥ होय
क्रोध में ताको शानी ॥ कहे तभी चंडाल
सभानी ॥ माने ना अमिमानी, चाणी प्रभु
की ना धरेजी ॥ ए. ॥ ३ ॥ क्रोड़ पूर्व का
तप छिन मांई ॥ क्रोध वसे हां देत गमाई
रुले अनन्त भव मांही, कहियो जिनवरे
जी ॥ ए. ॥ ४ ॥ हाथ पांच दोऊ हृदय
धुजावें ॥ नैन लाल विकराल बनावें ॥
भकुटी चढ़ावे किंचित् मूरख ना डरेजी

म्याबे अहर्निश, भारत चौद्र मिचारे ।
 आत्मन्द् कन्द् चिदानन्द् सुमारे अपमल
 पंक प्रचारे ॥ ऐ. ॥ ४ ॥ द्वाविश परिसह
 पंख इन्दिध को, जीते सम अणुगारे ।
 घोर तपोधन समदम पूरे पण परमाद
 बिहारे ॥ ऐ. ॥ ५ ॥ अमख धर्म में रह
 रहे नित दिनकर धर्म उजारे । जमा
 दया वैराग्य समाधि धारी तस्य बिचारे
 ॥ ऐ. ॥ ६ ॥ अमाशीर्ण वाचन नित दासे
 समिति गुपति रह पारे । मन्दसुरि एज
 'सूर्य मुनि' ऐसे सद्गुण सुगुण उजारे ॥
 ॥ ऐ. ॥ ७ ॥



○ दान-विषय ○

तर्ज—मारी नाड तमारे हाथे हारी समाल ॥ सोरठ ॥

दीजे दान सयल सुखकार, सदा शुभ
भाव से जी ॥ टेर ॥ धन्ना सेठ मुनि लख
हर्षावे ॥ घड़ा पान से घृत वहिरावे ।
प्रथम ऋषभ जिन थावे, दान प्रभाव से
जी ॥ दी. ॥१॥ पंचशत मुनि को दान देय
कर ॥ हुवे ताहि से भरत चक्रिवर । पाय
अमित सुख वैभव, मुक्ति में वसेजी ॥
दी. ॥ २ ॥ मेघरथ भूप दयारस भीना ॥
शरण परेवा ले तन दीना । ऐसे जिनपद
छीना, दिव शिव पावसेजी ॥ दी. ॥ ३ ॥
सरल भाव से शंखराय ने ॥ दियो द्राख-
जल मुनिराय ने । कंवर सुबाहु सुध दान,
दियो हर्षाय से जी ॥ दी ॥४॥ संगम भव

॥ ए. ॥ १॥ दीपायन ऋषि या तपधारी ॥
 क्रोध बसे हां झारिका जारी । मारी तप
 क्रियो जारी अति क्रोध मरेजी ॥ ए. ॥ १॥
 प्रीति नाश होवे किम माई ॥ वैरी सम
 हितु मित्रु सब धाई । अग में अपपश पाई
 माघ २ में फरेजी ॥ ए. ॥ ७ ॥ छमा शर
 जिनके कर माहीं । दुर्ममता फी करें
 मलाई । जण बिन दब पुझाई शीतलता
 परेजी ॥ ए. ॥ ८ ॥ यों आनी समभाव
 अराधो ॥ छमाधरी आत्म हित साधो ।
 पूज्य मन्द पद साधो 'सूर्य' मब अल तरे
 जी ॥ ए. ॥ १ ॥

तर्ज—स्थूलिभद्र कियो है चउमास ॥ माढ ॥

नित वंदू रिठ नेम, यादव वंश सेहरो
 महाराज हो ॥ या ॥ हैं ब्रह्मचारी आप,
 सौख्य शिव देहरो ॥ म. ॥ टेर ॥ समुद्र-
 विजयजी के लाल, राणी शिवादे भली ॥
 महा. ॥ तस कुंखे अवतार, लियो अतुल
 वली ॥ महा. ॥१॥ मिलकर घासव वृन्द,
 जिनन्द चरने परे ॥ महा. ॥ नील वरण
 घपु तास, छटा घन की हरे ॥ महा. ॥२॥
 व्याहन काज प्रभु आप, चले परिवार से
 ॥ महा. ॥ पशु की सुन के पुकार, हृदय
 करुणा बसे ॥ महा. ॥३॥ फेरी रथ तत-
 काल, दान वर्षी दिये ॥ महा ॥ गढ़ गिर-
 नार पै जाय, प्रभु संयम लिये ॥ महा. ॥
 ॥४॥ सुनकर राजुल नार, जिनन्द दीक्षा-

दे दान हीर को ॥ अंशुमाला महावीर
 को । अंग कंयर दे इष्ट रस को, माघ
 पड़ावसे जी ॥ २ ॥ ५ ॥ एक क्रोड़ वस्तु
 लाख सुवर्ण को ॥ वेत जिमन्व नित दान
 भविन को । एक वष लग जन को दे
 दीक्षा वसे जी ॥ ३ ॥ १॥ तन मम धन से
 दान वेष नित ॥ कीजे कारख सकल ल
 परहित । रिख सिख पावें इच्छित कर्म
 कपावसे जी ॥ ४ ॥ ७॥ अगणित मदिरा
 कही सुबानी ॥ दान दीये सुख पावें प्राणी ।
 चरितम्ब 'सुनू' वाणी, कहे वात्साय से जी
 ॥ ५ ॥ ८ ॥



तर्ज—स्थूलिभद्र कियो है चउमास ॥ माढ ॥

नित बंदू रिठ नेम, यादव वंश सेहरो
 महाराज हो ॥ या ॥ हैं ब्रह्मचारी आप,
 सौख्य शिव देहरो ॥ म. ॥ टेर ॥ समुद्र-
 विजयजी के लाल, राणी शिवादे भली ॥
 महा ॥ तस कूंखे अवतार, लियो अतुल
 वली ॥ महा. ॥१॥ मिलकर वासव वृन्द,
 जिनन्द चरने परे ॥ महा. ॥ नील घरण
 वपु तास, छटा घन की हरे ॥ महा. ॥२॥
 व्याहन काज प्रभु आप, चले परिवार से
 ॥ महा. ॥ पशु की सुन के पुकार, हृदय
 करुणा वसे ॥ महा ॥३॥ फेरी रथ तत-
 काल, दान वर्षी दिये ॥ महा. ॥ गढ़ गिर-
 नार पै जाय, प्रभु संयम लिये ॥ महा. ॥
 ॥४॥ सुनकर राजुल नार, जिनन्द दीक्षा-

तर्णी ॥ महा ॥ सवेग धर्यो मन मांय सती
 सुम लक्षणी ॥ महा. ॥ ५ ॥ क्षियो सुदृष्ट
 अराप, सहेली कृन्द में ॥ महा ॥ उगोठि
 असिल प्रफटाय, गये सुख कृन्द में ॥
 महा ॥ ६ ॥ भी मैम ज़िमैभ्वर आप, पाप
 तय शिव धरे ॥ महा ॥ जो व्यापे मर-
 नार तिमिर वल अंधहरे ॥ महा ॥ ७ ॥
 पो जीय वषा विल लाय, हृदय कलसा
 धरो ॥ महा ॥ सुरिगम्द रज सूर्य, कहे
 शिषपुर धरो ॥ महा ॥ ८ ॥



॥ जिनवाणी ॥

तर्ज — ख्याल में ।

जिनवर की वाणी सुनिये चित्त
 आणी प्राणी भाव से ॥ टेर ॥ सुखदायक
 हैं कल्प वृक्ष सम, चिन्ता चूरन हार ।
 भव्यन के उर भ्रमतम भेदन, छेदन,
 कर्म कुठार हो ॥ जि. ॥ १ ॥ सात नय
 निक्षेप चारयुत, वाणी गुण पेतीस ।
 सुणे अमर नर तिर्यग आदि, समभावे
 तज रीस हो ॥ जि. ॥ २ ॥ निजपर आतम
 सूचन को भई, जिनवाणी रवि जोत ।
 भ्रमण करत भव सरित मांहि जसु, मिली
 तिरन को पोत ॥ जि. ॥ ३ ॥ जन्म मरण
 दुःख मेटन सुखकर, बोध बीज दातार ।
 घचन अदोषित आदि अन्तसम, परमा-

॥ आ. ॥ ४ ॥ गुरु प्रसाद ने विष्णु शंकर,
 अजब भुति गुण गायो । बीतराग भिन्न
 लक्ष विनेश्वर, गुरु प्रसाद लखायो ॥ आ
 ॥५॥ गरुड़ बैन सुन पद्मग दिन में, बिल
 जाय मरायो । त्यों गुरु पासी मिथ्या
 अमलम पल में जाय दिखायो ॥ आ ॥
 ६ ॥ दानशला का अन्नन मांजी दूर अ-
 ज्ञान मगायो । अक चेतन दोह मिथ
 चलाई आलम ज्योति अगायो ॥ आ ॥७॥
 सुखलाई पद पंक्त मेरी हृदय अमी
 परायायो । नम्रस्वरि सुनू 'सूर्य' हरपधर
 खड्गगुरु कीर्तन गायो ॥ आ ॥ ८ ॥



तर्ज, — ख्याल में ।

गुरुराज तुमारी वाणी हितकारी, भव
दुःख भेदनी ॥टेर॥ अमृत धारा सम है
वाणी, अनुपम अति सुखदाय । छुधा
तृषा व्यापे नहीं किंचित्, श्रवण तृपति
नहीं थाय ॥ गु ॥१॥ मन हरणी मिथ्यात
विनाशक, इच्छा पूरन हार । कल्पतरु
सम आप गुरुजी, त्रय दुःख चूरन हार
हो ॥ गु ॥२॥ ज्ञान सुधासम भोजन रुच
कर, पायो तुम परसाद । संका कंखा
मिटी सर्व ही, कीनो जब आस्वाद हो ॥
गु ॥३॥ सुखदाई जहां लहर सरित की,
नसें भ्रांति पुनि शोक । त्यों सरित तुम
तजी खाल कोऊ, गहे सो मूरख लोक हो
॥ गु ॥४॥ सात भंग निक्षेप चार और,

भव निहार ॥ जि ॥ ४ ॥ जिनबाणी बिन
 और वैत जग यासक क्यास ललाय ।
 इह बाणी सुन सहै भय्य सुन, भावम
 गुण प्रकटाय हो ॥ जि ॥ ५ ॥ दादुर नाम
 बाध सुग तस्कर, भीस पुष्ट गजराज ।
 इत्यादिक जिनबाणी को घर, सफल
 कियो निज काज ॥ जि ॥ ६ ॥ सरस्वती
 जिनबाणी सुख मन पहुँ सुखे चितलाय ।
 भुक्ति वाक्य यो प्रकट जतायें जानावरण
 नशाय हो ॥ जि ॥ ७ ॥ स्यादाद जिन-
 बाणी दित कर, अक्षय मिष मंडार ।
 सरिमन्द सुपसाय 'सूर्य मुनि' बंदे बार
 बार हो ॥ जि ॥ ८ ॥



तर्ज, —ख्याल में ।

गुरुराज तुमारी वाणी हितकारी, भव
 दुःख मेदनी ॥टेर॥ अमृत धारा सम है
 वाणी, अनुपम अति सुखदाय । छुधा
 तृपा व्यापे नहीं किंचित्, श्रवण तृपति
 नहीं थाय ॥ गु ॥१॥ मन हरणी मिथ्यात
 विनाशक, इच्छा पूरन हार । कल्पतरु
 सम आप गुरुजी, त्रय दुःख चूरन हार
 हो ॥ गु ॥२॥ ज्ञान सुधासम भोजन रुच
 कर, पायो तुम परसाद । संका कंखा
 मिटी सर्व ही, कीनो जब आस्वाद हो ॥
 गु ॥३॥ सुखदाई जहां लहर सरित की,
 नसें भ्रांति पुनि शोक । त्यों सरित तुम
 तजी खाल कोऊ, गहे सो मूरख लोक हो
 ॥ गु. ॥४॥ सात भंग निक्षेप चार और,

मय तरसादिक सार । समझायो गुरु मेव
 बिबिध से भ्रमतम दियो निवार हो ॥ गु
 ॥५॥ किरपा सिंधु दीन उद्धारक, गुरु
 साईं गुरु सेव । ऐसे निर्मय त्यागी गुरुकी
 मिलजो भव भव सेव हो ॥ गु ॥६॥ नैन
 द्रुपत ना होय दरश से तन मन रहै सु
 माय । निर दोषित जिन आगम पाणी,
 अनुपम बरै सुनाय ॥ गु ॥७॥ अष्ट सिद्ध
 नव मिथि सहु पावै गुरु किरपा जब
 होय । सरिगम्ह सुनू 'सूर्य मुनि' कहै,
 सुगुरु शरण हो मोय हो ॥ गु. ॥ ८ ॥



तर्ज — गजल उपदेशी ॥

हमारे धर्म के ऊपर, करूँ मैं होम
 निज तन का । अहिंसा धर्म के ऊपर,
 न्यौछावर है सरव धन का ॥ टेर ॥ कोई
 नां साथ हो साथी, जुदा हो मित्र और
 न्याति । छेद तो देत निज जाती, चहे नां
 सहारा किन का ॥ ह ॥ १ ॥ धर्म जिनराज
 का सुख कर, हमारे प्राण से प्रियवर ।
 छिनक में ताप त्रय दें हर, सहारा एक है
 जिनका ॥ ह ॥ २ ॥ करें तन व्याघ्र आ
 मेदन, करें कोउ शस्त्र से छेदन । विविध
 कोउ देत है वेदन, तथापि ध्यान है तिन
 का ॥ ह ॥ ३ ॥ नहीं कोई धर्म से बढ़कर,
 न देखा जङ्ग के अन्दर । अधर्म और धर्म
 में अन्तर, पड़ा जिम आँक चन्दन का
 ॥ ह ॥ ४ ॥ चाहे सर्वस्व पिए जावे, डगे

नां धर्म के पथ से । मझे कठो मूर्ख सब
 बुनियां हरे नां च्याम तोहु मन का ॥ ६
 ॥३॥ गिमे अपमान नां कुछ भी, उगे ना
 सहससुर आवे । सूरिमम्ब 'सूर्य' दो माये
 धम्य अक्षतार हि जिनका ॥ ६ ॥५॥



६ — नमः कर्ते ॥

कहे समझाय गुह कानी, अगत
 फानी अगत फानी । सुमति घर काम उर
 कानी अगत फानी अगत फानी ॥ ६ ॥
 नहीं कोई साथ में आवे अगत सब स्वार्थ
 वरखावे । घर धन धान रह आवे, प्रकट
 देखो चरे प्राणी ॥ ६ ॥ १ ॥ स्वप्न
 व्यास हि अग का मुसाफिर लोग हि मठ

का । रहे महिमान दो दिन का, त्यों ही
 तेरी ये जिन्दगानी ॥ क. ॥ २ ॥ मोह में
 होय अज्ञानी, करें हिंसा हरष आनी ।
 डरें नां पाप से प्राणी, रुले भवभव में
 अभिमानी ॥ क. ॥ ३ ॥ उमर सब मुफ्त मै
 खोई, अमृत तज वैल विष वोई । रह्यो
 मिथ्यात में सोई, नहीं निज हानि को
 जानी ॥ क. ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्म सुखकारी,
 धार त्रय रत्न हितकारी । देशो परभाव
 को टारी, सुगुरु की सीख ले मानी ॥ क.
 ५ ॥ अमूल्य नर रत्न को पाई, करो हित
 कार्य सुखदाई । सूरिनन्द 'सूर्य' समझाई
 धरो वर बेग शिवरानी ॥ क. ॥ ६ ॥



साँ घर्म के पथ से । मझे कइो मूर्ख सब
 बुनियाँ हटे नाँ प्यास तोड़ु मन का ॥ ६
 ॥५॥ गिने अपमान साँ कुछ भी, उगै ना
 सहससुर आवैं । सूरिनन्द 'सूर्य' दोँ भायें
 धम्य अबतार है जिनका ॥ ६ ॥६॥



६३.—अव्यवस्थित ॥

कहे समझाय गुरु कानी अगत
 फानी अगत फानी । सुमति घर काम उर
 भागी अगत फानी अगत फानी ॥ डेर ॥
 नहीं कोई साथ में आवैं अगत सब स्वार्थ
 दरसावैं । घर धन धान रह आवैं, प्रकट
 देखो अरे माणी ॥ ६ ॥ १ ॥ आपबत्
 क्यात है अग का सुसाफिर लोग है मठ

हो ॥ क ॥ ४ ॥ नहीं क्रोधी व अहंकारी,
 नहीं माई व व्यभिचारी । रहे मर्याद
 कुलधारी, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क.
 ॥ ५ ॥ सुशीला है वही नारी, चरेगा ऐसे
 पति प्यारी । रहें सो श्रेष्ठ सुकुमारी, पति-
 घर हो तो ऐसा हो ॥ क.॥६॥ कहे सीता
 वरुं जैसे, मिलेंगे नाथ गुण तैसे । कियो
 मैं प्रण हृदय ऐसे, पतिवर हो तो ऐसा
 हो ॥ क ॥ ७ ॥ सूरि नंदलाल रामचन्द्र
 कहे “मुनि सूर्य” हितवाणी । मिले जसु
 रामचन्द्र आनी, पतिघर हो तो ऐसा हो
 ॥ क. ॥ ८ ॥

तब — गच्छ ।

कहें सुन्दर सखी मेघ, पतिवर हो
 तो ऐसा हो । बही हैं माघ सिर सेघ,
 पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ डेर ॥ विमल
 कुल जात हो ताकी डेक एक सत्य पै
 पत्नी । नीतिवर भीर सत माघी पति-
 वर हो तो ऐसा हो ॥ क ॥ १ ॥ न छोरी
 जारी का लच्छन करे पर द्रव्य ना म-
 च्छन । दयालु मेम का बर्धन पतिवर हो
 तो ऐसा हो ॥ क ॥ २ ॥ अहिंसा धर्म
 धारक हो भीर मिथ्या निवारक हो ।
 खर्च गुनबाम सायक हो पतिवर हो तो
 ऐसा हो ॥ क ॥ ३ ॥ नहीं अज्ञान के मत
 में रहे सत् साधु संगत में । भरे नहीं
 पाप दुपप में पतिवर हो तो ऐसा

की नारी, विष दई करे विनाश । नाहक
जग अगनी में तपना ॥ ज. ॥ २ ॥ रात
दिन उमर जाय बीती, धरे नहीं मन में
कछु भीती । शक्ति तन बीरज वय जावें,
तोहु नहीं धर्म करन चावें । दोहा ॥ नर-
तन सुर दुर्लभ, कह्यो, बार बार नहीं
थाय । सुण सतगुरु के बैन को, जन्म
जन्म सुख पाय । होगया एक दिन रे
खपना ॥ ज. ॥ ३ ॥ फैसे क्यों जगत द्वन्द
माई, सार कछु दीसे नां भाई । वृथा नर
तन को मतहारे, साथ में खरची ले
प्यारे । दोहा ॥ सूरिनन्द सुपसाय से,
'सूर्य' कहें हितवान । कर सुकृत तूं चेत
नर, काल सुभट बलवान । गहेगा
वहे जहां छिपना ॥ ज. ॥ ४ ॥



॥ उपदेशी ॥

जन्म—आनंदी ॥ अरु लव नमस्तु मे कीर्ति ॥

अगत में कोई नहीं अपना, सतत
 मरि जिनम्ह आप अपना ॥ हेर ॥ अकेलो
 आप रहा आये, साथ कोइ बीज नहीं
 लाये । अकेलो अन्तर फिर प्याये, साथ
 कोइ साथी नहीं पाये । दोहा—मात
 पिता परिवार सब स्वार्थ को संघार ।
 बिन स्वार्थ से हिम में बेको, घर से बेत
 निकार । समझलो अग है निशि सुपना
 ॥ अ ॥ १ ॥ मित्र तु समझे है जिनको,
 शत्रु हो पक्ष में सब तनको । किया निज
 मान वार धम को देख तसु कुशी आप
 मन को । दोहा—कोइ किसी के ना बने,
 है स्वार्थ के दास । बिन स्वार्थ से घर

आस वचन यह, निजपर आतम को सू-
 चन यह । भव भव दुःख मोचन यह,
 सरिता खरीरे ॥ पी. ॥४॥ चिंतामणि पुनि
 कल्पतरु सम, इच्छा पूरन कामधेनु
 जिम । जिनवाणी त्यों अनुपम, रही अमृत
 झरीरे ॥ पी. ॥५॥ सुणे भव्य जो इक चि-
 तलाई, भ्रमतम ताको जाय विलाई ।
 आतम गुण प्रकटाई, भवनिध तरीरे ॥
 पी. ॥ ६ ॥ वेदवसुनिधि चन्द सम्बत्सर,
 धाम मुंवाई है सह सुखकर । सूरिनन्द
 पद नमकर गुण धर्मान करीरे ॥ पी. ॥७॥



॥ जिनबाषी ॥

तुझे—मरी बाल ठगारे होते ही संबाळ ॥ छेऊ ॥

पीओ जिनबाषी रस प्याला, मरी
मरीरे । पी करके हो मतवाला अमृतम
हरीरे ॥ देर ॥ बीर जिमंद मुख निकसी
बाषी दितकर साहु को सुषा समासी ।
गौतम शुद्ध कर आनी, शिव वनिता वरीर
॥ पी ॥१॥ मोक्ष सदन इह कमला सुख
कर मिटे सर्व ही अगम मरण कर । पावे
पद अजरामर, जिनबाषी थरीरे ॥ पी. ॥
भी जिनबैन बयारस पूरन अष्ट कर्मदल
बंधन भूरन । राघ द्वेव तह भूरन, को
साषी करीरे ॥ पी ॥३॥ अक्षित अदोषित

को, करे सो याद फिर विरथा ॥४॥ थकी
इन्द्रि थकी काया, विकल गति होगई
तन की । तोहु विषयांध होकर सो, करें
आस्वाद फिर विरथा ॥ ५ ॥ सूरिनन्द
'सूर्य' कहें जिनको, जिनंद वाणी सुगुरु
सेवा । मिला सहु आत्म हित साधन,
करें परमाद फिर विरथा ॥६॥

○ हाथ ○

तजै—मनाउ म्हेतो श्री अरिहत महन्त ॥

मिअवर कीजे ऐसे हाथ ॥ टेर ॥

लेय छुरी सम कलम हाथ में- लिखे
न भूठी बात । कुड तोला कुड मापा कर
कर, कवहुं ठगै नहिं आथ ॥ १ ॥ दीन
जनों पै हाथ न डाले, कर करुणा हर्षात ।

[१५४]

॥ उपदेश ॥

७४—पञ्च

कोई सब हाथ से बाजी, करें बिप
 वाद फिर बिरथा । करें अम्पाय अब
 काजी, करें फरियाद फिर बिरथा ॥१॥
 कोई पत्थर पै घर करके करें बिम्ता-
 मयि चूरन । हुआ हि माम से ये कर,
 करें बकबाद फिर बिरथा ॥ १ ॥ किन्ना
 अम्पाय से अपमा, बड़ा बदनाम दुनिया
 में । त्याग निज हाथ से इच्छत बहें मर्षाव
 फिर बिरथा ॥२॥ पास में पूर्ण हि लक्ष्मी
 करें गुम काज में ना व्यय । करी बरबाद
 सहु घन को बहें आषाद फिर बिरथा
 ॥ ३ ॥ पूज की पास में सम्पत्, बड़ा या
 नाम दुनिया में । फिर घर पूज की रिज

ॐ देव ॐ

तर्ज—मनाऊँ ग्हेतो श्री अरिहत महन्त ॥

सब मिल गाओ श्री जिनवीर ॥ टेर ॥

नाम जिसको है सुखदाई, मेटन को
 पर पीर । जन्म मरण भय व्याधि क्षय
 हो, पावत भवदधि तीर ॥ १ ॥ देखे देव
 जगत में केई, धारत विविध शरीर ।
 काम क्रोध मद पूरन दोषित, जिम किं-
 पाक परीर ॥ २ ॥ तुम विन कोउ न देख्यो
 स्वामिन् देव अदोषित धीर । तीन भुवन
 को भ्रमतम मेटन, तू है सत्य महीर ॥ ३ ॥
 देव अदेव में अन्तर देख्यो, जैसे कनक
 कशीर । पूरन तू है कल्पतरू सम, अन्य
 है वृक्ष करीर ॥ ४ ॥ अम्बर घन पल मांही
 जैसे, नारें लगत समीर । त्योहि वीर के
 दरश परशर्ते, भांजत कर्म जंजीर ॥ ५ ॥

वे हाथों से दान बुद्धि को, ऊनीमन
 न सात ॥२॥ करें न कभू दुष्ट से प्रीति,
 करें सुमित्र साथ । देखा सुगुह के बरष
 शीघ्र ही, बंदे युगकर माथ ॥ ३ ॥ कंकष
 कर पहने नहीं सोहे, सोहे विनय
 गात । निज हाथों से पर पुष्प काटे सो है
 ! अग बिख्यात ॥ ४ ॥ कषुं कुचेष्टा करें न
 कर से करें न पीषन घात । दमा शस्त्र
 धर हाथ कर्मवस्त मेढत शक्ति अतात ॥
 ५॥ करें न काहु संग दुष्टता निस्पृह जमी
 बरपात । सरिनन्द सुनू सूर्य मुनि' कहे
 कीजे सुकारज भात ॥ ६ ॥



सुखकारी । हा ? मणि मुकर को एक
 मानकर, कीनो भवख्वारी ॥ २ ॥ मिथ्या
 तिमिर निवारक जिनजी, भवभ्रम भय-
 हारी । कर किरपा अत्र नाथ कृपालु, दे
 तारक तारी ॥ ३ ॥ मंगलकारी देव, अ-
 मूर्तिक तू है अविकारी । अत्र लियो
 चरण में शरण सतत तूं, भव भव किर-
 तारी ॥ ४ ॥ सादि अनन्त सिद्धपद तुमरो,
 जन्म मरण टारी । अमित ज्ञान दर्शन मम
 दीजे, शिव सुन्दर नारी ॥ ५ ॥ पूज्य श्री
 नन्दलाल मुनीश्वर, भव्यन हितकारी ।
 शरण 'सूर्यमुनि' आय पड़ा है, जावूँ
 बलिहारी ॥ ६ ॥



बल भीरज बुद्धि धर्मन को, भीर गिरा-
जिम भीर । अममल पंक प्रदासन को
इह नाम है विमुख सुनीर ॥ ६ ॥ अमल
करत संसार मांदि हाँ ! कल मयो
अति भीर । सूरिनद रज 'सूर्यमुखि' कहैं,
मज गुप्तसिंधु गहीर ॥ ७ ॥

○ विनय ○

ज्ये—मनु मज सुनर सब भाय ।

अरजी हमारी एक दयासु सीजे अय
धारी । मैं सेवक शरखे भाय विनय अति
करता द्विधारी ॥ ६ ॥ भीम मयातक
अष्टवस्त कीजे सब धारी । गति बारों है
गुणदाय, ताहि में मटकयो अविधारी ॥
१ ॥ भी अरिहंत से देव सेवना धारी

हाथ कंकण । करते हैं मोज मानी, मन
 में गुमान लाकर ॥ ५ ॥ है माल महल
 उनके, रहने को खूब सूरत । लूले अपंग
 जैसे, सोते उमर बिताकर ॥ ६ ॥ लक्ष्मी की
 अन्धता में, लखते न दीन जन को ।
 किंचित् दया का अंकुर, अब तो हृदय
 धराकर ॥ ६ ॥ हा ! बन रहे विधर्मी,
 लाखों अनाथ प्राणी । सत धर्म छोड़ निज
 कर, बनते हैं भ्रष्ट जाकर ॥ ७ ॥ धन प्राण
 जाय तो भी, रक्षा तो उनकी कीजे । सूरि-
 नन्द 'सूर्य' वाणी सुण भर्म को भगाकर
 ॥ ६ ॥



○ अनाथ ○

तब—कन्या ।

सुम मावों से हमेशा, दुखियों के
 दुःख लिया कर । जो है अनाथ दुखिया
 ताको तू कुछ दिया कर ॥ १॥ फिर
 बिचारे दरदर, भूजों के मारे अमरुद ।
 आयाज वे रहे हैं सुन लो कोई क्याकर
 ॥ २॥ इस पापी पैर कारख दिख पुष्टा को
 धारे । कई अहर का रहे हैं किंचित् भी
 अब क्याकर ॥ ३॥ निज पुत्र ही को माता
 खाती है भूख कारख । उनके दुखों पे
 कुछ ही अब ध्यान तो किया कर ॥ ४॥
 जाते हैं बिचके दर पे, बैठे हैं मार घना ।
 सुनते नहीं हमारी कुछ ध्यान भी लगा-
 कर ॥ ५॥ कंठी मछे लगाई कोड धार

सुगुरु सुदेवों को ध्याओ, अहिंसा धर्म
 उरलाओ । करो निज आत्म हित साधन,
 तजो अभिमान रे ! प्राणी ॥ ४ ॥ श्री जिन
 वैन उरआनो, मिथ्या पाखण्ड सहु जानो
 तजो जड़ देव अविरागी, भजो सुविकाश
 निर्वाणी ॥ ५ ॥ रतन चिन्तामणि तज के,
 गहो नां काच और कंकर । पाय नरतन वि-
 रथा त्योंहि, करोनां रत्न की हानी ॥ ६ ॥
 श्री सूरिनन्द गुरुवर के चरण रज 'सूर्य'
 कहे हितकर । अनादि तोड़ वसु बन्धन,
 घरीजे सौख्य शिवरानी ॥ ७ ॥



[१५६]

○ उपदेशी ○

८४—नमः ।

सुनायेंगे सकल जग को, हमारे बीर
की पाणी । हटायेंगे अधम धिंसा बठारों
काम दित जायसी ॥ १८ ॥ पके क्यों हो
भरम तम में अनादि नीव में अब तक ।
दितादित मान निज कीजे, पृथा कोबो न
सिन्दगामी ॥ १९ ॥ सात और मात सुत
आता सकल परिवार पुत्रि नाता । सङ्ग
निज स्वार्थ दरसाता, कहें समझाय शुद्ध
कामी ॥ २० ॥ जहाँ तक पूर्ण का पुण्य है
जहाँ तक देखसो वैमघ । किमक से सभै
धिरसाये कहे कामी जगत फामी ॥ २१ ॥

सुगुरु सुदेवों को ध्याओ, अहिंसा धर्म
 उरलाओ । करो निज आत्म हित साधन,
 तजो अभिमान रे ! प्राणी ॥४॥ श्री जिन
 वैन उर आनो, मिथ्या पाखण्ड सहु जानो
 तजो जड़ देव अविरागी, भजो सुविकाश
 निर्वाणी ॥ ५ ॥ रतन चिन्तामणि तज के,
 गहो नां काच और कंकर । पाय नरतन वि-
 रथा त्योंहि, करोनां रत्न की हानी ॥ ६ ॥
 श्री सूरिनन्द गुरुवर के चरण रज 'सूर्य'
 कहे हितकर । अनादि तोड़ वसु बन्धन,
 घरीजे सौख्य शिवरानी ॥ ७ ॥



○ उपदेशी ○

तब—मेरे रूप व कर्माणि जगने मुझे ॥

हम भीर बाणी को सुनाय आयेगे ।
 हम सोये रूप को जगाय आयेगे ॥ १८ ॥
 काल अनादि अगत में अमल कियो अत
 मान । राख रखो मिथ्यात में घट छापो
 अज्ञान । ताको धर्म का रास्ता बताय
 आयेगे ॥ १९ ॥ निज आत्म गुण भूल
 के पुद्गल संग अनुराग । दिन दिन
 दुष्टा बढ़ रही ज्यों दुष्ट सागत आग ।
 ताको समता का आन कणाय आयेगे ॥
 २० ॥ चतुर्गति संसार में अमल कियो
 अविचार । काम क्रोध मदपूर में डूब
 रहे मगधार । उनको धर्म की नीका
 दिखाय आयेगे ॥ २१ ॥ अहं चेतन एक

मान के, करत जीव की हान । स्व-पर
हित का है नहीं, किंचित् ताको भान ।
शुद्ध श्रद्धा में उनको लगाय जायेंगे ॥ ह.
॥ ४ ॥ सुखदानी भवधारणी, वाणी अमी
समान । सूरिनन्द सुनू हित कहें, तज
मिथ्या अभिमान । जिन धारणी का प्याला
पिलाय जायेंगे ॥ ह ॥ ५ ॥



॥ कहां हमारे वीर ॥

तर्ज — गजल ।

कहां गये भारत के ऐसे, वीर नर
अब इन दिनों । कहां चमन आवादियां,
सूखा है सर अब इन दिनों ॥ टेर ॥ कहां
गये वह धर्म के, झण्डे उड़ाते जगत में ।
तकरार आपस में करें, उत्साह धर अब

इन दिनों ॥ १ ॥ कहाँ गई वह ताकतें,
 और कहाँ गई आजादियाँ । कहाँ गई वह
 धर्म अथवा, सुषर अब इन दिनों ॥ २ ॥
 मुनिराज गीतम से कहा तपवान से भ्रा
 मुनि । समा अर्जुन-सी नहीं आती नगर
 अब इन दिनों ॥ ३ ॥ आनन्द जैसे आस
 कहाँ कहाँ काम देवन से हैं वीर । कहाँ
 गई सीता सती सम, और सुन्दर इन
 दिनों ॥ ४ ॥ बाहुबलि से खर कहाँ पदवी
 कहाँ भरतेश की । सम्यक्त्व कहाँ भेषिक
 की कहाँ नीतिवर अब इन दिनों ॥ ५ ॥
 ध्याम राज सुकुमार का बुद्धि समय
 जैसी कहाँ । कहाँ शक्तिमय से हैं भेष
 पर अब इन दिनों ॥ ६ ॥ काइते उड़
 आपकी, से हाथ में तीक्ष्ण कुठार । जिस
 मार्ग में हा ! भ्रष्ट का होता समर अब

इन दिनों ॥ ७ ॥ मान इर्ष्या द्वेष में, देते
 हजारों खर्च कर । कैसे प्रबल हो पक्ष यों
 धरते फिकर अब इन दिनों ॥ ८ ॥ ज्ञान
 तप संयम किया, सब मान को अर्पण
 करें । हा ! बाह्य आडम्बर लिये, कसते
 कमर अब इन दिनों ॥ ९ ॥ खूब तूने अब
 तलक, नीचा दिखाया धर्म को । कुछ भी
 सम्भालो होंस अपनी, हो चतुर अब इन
 दिनों ॥ १० ॥ दे कलंक सत् धर्म को, उन से
 भी नीचा है कोई । क्यों पाप गठरी बांध
 के, खोते उमर अब इन दिनों ॥ ११ ॥ वस
 कहने का कुछ और है वर्ताव उनका
 और है । उपदेश उनका और है, ऐसे
 सुघर अब इन दिनों ॥ १२ ॥ क्या था
 करने का अवश्य, क्या हानियां होने
 लगी । किंचित भी तुमको है नहीं, दिल

में खतर अब इन दिनों ॥ १३ ॥ हा ! पूर्णों
 के नाम को निर्मूल देखोगे दुषा । क्यों
 मतुम पै उनकी वाणी हो अमर अब इस
 दिनों ॥ १४ ॥ सुरिगम्ह पदकंज शरस के
 मुनि सूर्य दितपायी कहे । हे प्रभो !
 चउसस्य में सदबुद्धि घर अब इन दिनों
 ॥ १५ ॥



तर्क—कर्म ।

करे क्यों मन फिर प्राणी गया सो
 तो नहीं आये । लिया है अम्म अब आके
 अबस्य ही यहाँ से आये ॥ १६ ॥ जो है
 आयुष्य का बंधन वही सब भोगता प्राणी
 दूटे आयुष्य तब यहाँ पे बड़ी एक रहीन
 ना पाये ॥ १ ॥ अहाँ तक जीव है तन में

करे हैं आस सौ प्राणी । तभी तक देख
लो सगपन, सभी आकर के दरशावे ॥
॥ २ ॥ देही को अग्रि में धरकर, करे हैं
छार पल भर में । न साथी साथ कोई
आवे, प्रेम उस वक्त छिटकावे ॥३॥ मुसा-
फिर मान निज मठ को, विताया चर्प कई
रह कर । हुआ तब नाश तन मठ का,
कहो कैसे रहिन पावे ॥४॥ मोह में मुग्ध
हो नारी, शरण ले अगन की जाके ।
कूट ले छाजियां छाती, सभी सुध बुध
को विसरावे ॥ ५ ॥ दीप में तेल हो जहां
तक, रहे ज्योति प्रकट वहां तक । खुटा
है तेल दीपक का, तभी ज्योति नहीं
रहावे । ६। करे किसका फिकर मनमें, हँसे
क्यों खुद निडर होकर । तूही है काल का
भोजन, आज वह काल में धावे ॥७॥ करे

जो पाप पुन प्राप्ति उदय जाता सो ही
 उलझे । रहा संयोग या तब तक, नैन से
 नीर क्यों बहावे ॥ ८ ॥ इन्द्र धमि मृपत
 सब ही गये हा ! काल से हारी । रहे
 कोई स्थिर नहीं यहाँ पै कई दानी यों
 समझावे ॥ ९ ॥ करो सब धर्म मन आनी,
 समझ मिलता नहीं हर्गिज । सुरिप्रभ
 पद शरण सेकर सत्य यों 'सूर्य' बतलावे
 ॥ १० ॥



वर्ग-अष्टमि ॥ छंद ॥

उपकारी गुरुदेव हमारे सुखकारी
 गुरुदेव ॥ डेर ॥ पञ्चमैरु गिरी सम पक्ष
 बूत को । पालत हैं स्वयमेव ॥ ११ ॥ १ ॥
 भीम मयोदधि भ्रमण करत अस । तारत

है ततखेव ॥ ह ॥२॥ गुरु दीपक गुरु इन्दू
 जग में । है नहीं गुरु कोउ एक ॥ ह.॥३॥
 ज्ञानांजन कर भ्रमतम मेढ्रयो । जो है
 अनादि कुटेव ॥ह.॥४॥ रत्नत्रय सुध मार्ग
 बतायो । सुमति हृदय में ठेव ॥ ह. ॥५॥
 जड़ चेतन दोऊ मित्र लखायो । गुण
 ज्ञानादि अछेव ॥ ह. ॥ ६ ॥ श्री सूरिनन्द
 'सूर्य मुनि' पभरणे । कीजे सुगुरु की सेव
 ॥ ह ॥ ७ ॥



ॐ जिनगुण ॐ

तर्ज,—ना छेडो गाली दुगारे भरवा दो मोहे नीर

सब मिल के जिन गुण गाओ रे, मन
 प्रेम धरी नरनार ॥ टेर ॥ है नाम जिनन्द
 सुखदाई, दे जामन मरण मिटाई । भज

अमर अमर हो आओ रे ॥ म ॥ १ ॥ कल
 कल कपट को त्यागो भी बीतराग पय
 लागो । सुध विष गुठ को प्याओ रे ॥ म ॥
 २ ॥ है फूट बलेश की खानी, हो द्रव्य
 कुटुम्ब की हानी । प्रिय अक से फूट
 मगाओ रे ॥ म ॥ ३ ॥ सहु सधू वड़े मिल
 माई, कर भायस में मिघाई । सहु अल
 कुरीत मिटाओ रे ॥ म ॥ ४ ॥ ओ आवि
 माति तकरारा तअकर सब से दित
 प्यारा । फिर धर्म ध्वजा फहराओ रे ॥
 म ॥ ५ ॥ सूरिमन्द सूर्य मुनि' गाई अथ
 कहो बीर की माई । नित पात्सस्पता डर
 साधा रे ॥ म ॥ ६ ॥



मंगल

श्री धर्मदास मुनीश पट पै रामचन्द्र
 मुनीश थे । माणिक्य मुनि जसराज मुनि
 विख्यात प्रज्ञाधीश थे ॥ श्री मन्मथाचंद्रार्य
 के पटयुग अमर सूरीश थे । केशव तथा
 मोखम मुनीश्वर नन्द मुनि गण ईश थे
 ॥ १ ॥ धर्मोपदेशक थे दयालु पूज्य श्री
 माधव मुनि । कोविद विविध ज्ञाता स्व-
 पर के पोत सम थे वह गुनी ॥ थे वह
 धुरंधरे धर्म के पुनि जैन में वरवीर थे ।
 तत्पाट पै चम्पक मुनीश्वर भव्य तारक
 धीर थे ॥ २ ॥



॥ तब—कन्यासी की लुत्ति ॥

जगनाथ दास की ये, सुमिये बिचप
 अरासी । सेवक अधम तुम्हारा, एक दर्श
 का है व्यासी ॥ १८ ॥ बीरसी लक्ष मठका
 कीना ज्यों बेप मठका ॥ झोंधा रही मैं
 लठका सहि दुःखमार खासी ॥ अ ॥ १ ॥
 बस हाथ पर स्वभावे मित्र आत्म गुण
 मुस्तावे ॥ सुमती तथी रहावे, कुमती
 कुदिल है दासी ॥ अ ॥ २ ॥ केई कुकर्म कीना,
 मित्र गुण विचार दीना ॥ जब तो शरब
 तुम्हीं का लेकर मया उदासी ॥ अ ॥ ३ ॥
 देखा म बेव तुम्हारा तिहुँ लोक में है
 भगवत् ॥ रही जान द्यौं शक्ति तेरी
 अचक्ष विमासी ॥ अ ॥ ४ ॥ सुरिमन्द गुण
 पसावे कर जोड़ कर गुजारे ॥ मुमिसूर्य
 दास तेष तू ही कसे निमासी ॥ अ ॥ ५ ॥

॥ तर्ज — कव्वाली ईश प्रार्थना ॥

जय जय परम पिताजी, तेरा सहाय
जग में ॥ स्वामी तेरी शरण से होता नहीं
अलग मैं ॥ टेर ॥ छुट जाय कर्म सारे,
भगजाय भर्म भारे ॥ इक नाम तुम स-
माया, मेरे रगोहि रग में ॥ ज.॥१॥ देखा
है अन्य जग में, कामी विरूप देवा ॥
तुझ पंथ के शिवाना, भरता न अन्य डग
मैं ॥ ज ॥२॥ है गुण गरिष्ट तेरा, महिमा
अजव है भगवन् ॥ तेरी कृपा से तिर्यग,
जाता उरग सुरग में ॥ ज ॥३॥ हो मोह
के विवश मैं, कीना है कूर कर्मों ॥ सच्चा
तेरा हू भगवन् , तस्कर पतीत ठग मैं ॥
ज ॥ ४ ॥ हे पार्श्वनाथ पावन, तेरा परम
सहारा ॥ सूरिनंद 'सूर्य' प्रतिपल, पड़ता
है नाथ पग में ॥ ज ॥ ५ ॥

॥ तुझे—कण्ठजी भावना ॥

तेरी जिनेश हम पै किरपा करता
 होगा ॥ तब हो उद्धार मेरा, हिरदा बि-
 शास होगा ॥ डेर ॥ अतिकर्म से हटाना,
 सतधर्म में लगाना ॥ मित्र वास पै क्या
 की इष्टि रसास होगा ॥ ते ॥ १ ॥ पीछे
 अनाथ पावन संपत्त अस्तूट दीजे ॥ सब
 धान अणु देके हरना संसार होगा ॥ ते
 ॥ २ ॥ भक्त ये अपल है तुष्टी रहता विषय
 में छपटा ॥ अयत्ताप से हमारा कबहूँ
 निकाल होगा ॥ ते ॥ ३ ॥ गुन्गी दीन की
 विपासा, कर पूर्ण सर्व आसा ॥ मुझ
 आत्म गुण विक्षासा तुमसे क्यास होगा
 ॥ ते ॥ ४ ॥ मदिमा अपूष तेरी, एक नाम
 में रही है ॥ सब कर्म मर्म मिट के मेरा

निहाल होगा ॥ ते. ॥५॥ प्रतिदिन तुम्हारी
भक्ति, मन में समा रही है ॥ सूरिनन्द
सूर्य मुनि पै, तेरा ख्याल हो ॥ ते ॥६॥



॥ तर्ज—कन्वाली ॥ उपदेशी ॥

नहीं है खबर किसी को, दुनियां में
आज कल की ॥ शुभ कार्य चाहे कर ले,
मालूम नहीं है पल की ॥ डेर ॥ दुख हेतु
भोग जगके, लख शहत की छुरी से ॥
यौवन अथिर ज्यों विद्युत्, दिन चार
की है झलकी ॥ न ॥१॥ मतकर गुमान
तन पै, दुर्गंध से भरी है ॥ अस्थिर यही
है बुदबुद, जैसे कुशाग्र जल की ॥ न. ॥
२॥ कर ले भलाई प्यारे, यहां कौन स्थिर

रहा है ॥ आया वही सो आये, हरपोट
पाप मल की ॥ न ॥ ३ ॥ धनमात म्हेल
सारे सब झोड़ होय न्यारे ॥ साधी न
होय तबही पीजे चकी अजल की ॥ न
॥४॥ भोगों में रहूँ दोढे वीचन अफल
गमाया ॥ आई अरु अचर्या, लासी गई
है हसकी ॥ न ॥५॥ आता समय अफल
ये कुछ धर्म कर पियारे ॥ सब तिय
होय मिसके मति धर्म में अचल की ॥
न ॥६॥ हरिमन्व गुन पसाये 'मुनि सूर्य'
पों उचारे ॥ मिम बैन धर्म धारे, तिम
भाषना सफल की ॥ न ॥ ७ ॥



॥ तर्ज—कन्वाली ॥ उपदेशी ॥

सोते हुआ सबेरा, अब क्यों न आंख
खोलो ॥ शानी गुरु सतत यों, कहते
विचार तोलो ॥ डेर ॥ नर देह तू ने पाई,
क्या क्या करी कमाई ॥ नहीं पर करी
भलाई, नाहक फजूल डोलो ॥ सो. ॥१॥
निज आत्म के समाना, पर जीव को
पिछाना ॥ सत बोलरे सयाना, मुख से
न झूठ बोलो ॥ सो. ॥ २ ॥ कीजे सुकाज
प्यारे, जगजाल को हटा रे ॥ कर भर्म
कर्म न्यारे, तप-नीर मांहि धोलो ॥ सो. ॥
३ ॥ भज जैन सत्य धारो, मिथ्यात्व को
निवारो ॥ पथ जैन का विचारो, मुश्किल
मनुष्य चोलो ॥ सो. ॥४॥ सुन्दर सुसौख्य-
कारी, ले जैन वैन धारी ॥ सूरिनंद 'सूर्य'
सारी, धर सीख त्याग को लो ॥ सो. ॥५॥

वन—क्याही व धर्ममा व

हो अमृत के समय तक भगवन
 शरण तुम्हारा ॥ हो आपका सहारा, मन
 में लगन तुम्हारा ॥ हेर ॥ प्रतिपत्त हो तेरी
 भक्ति, बकती हो ज्ञान शक्ति ॥ हो मेरे
 हृदय प्रकाश, तारन तिरन तुम्हारा ॥
 हो ॥ १ ॥ स्वाध्याय ज्ञान सेवा श्री संघ
 की हो हम से ॥ हो दीन की भलाई, सेवन
 करन तुम्हारा ॥ हो ॥ २ ॥ होवे प्रकट
 हृदय में सत् ज्ञान का उजास ॥ सब
 कामना सफल हो मन हो मगन हमारा
 ॥ हो ॥ ३ ॥ सब जीव को समा के सब
 धर को मिटा के ॥ आसम सहुं समाधी
 पडित मरण हमारा ॥ हो ॥ ४ ॥ हरिर्मय सूर्य
 की ये सुनिये विमय क्याहु ॥ तिहुं ताप
 पाप सब ही कीजे हरन हमारा ॥ हो ॥ ५ ॥

गजल—प्रार्थना ॥

आनंदसिंधु नाथ मुझे पार तो करो ।
 निज दास खास जानके उद्धार तो करो ॥
 टेरा ॥ अविनाशी तेरे शरण में चाकर पड़ा
 सदा ॥ धर हाथ नाथ माथ पै आनंद तो
 करो ॥ आ. ॥ १ ॥ तृष्णा तरंग अङ्ग में
 चक्कर लगा रहा ॥ दुखदाय कर्म आठ ये
 सब छार तो करो ॥ आ. ॥ २ ॥ मात तात
 भ्रात आथ पर्म है तूही ॥ ज्ञान भान दान
 ये किरतार तो करो ॥ आ ॥ ३ ॥ अधम
 उधार आप पाप ताप त्रय हरो । मन कामना
 सब पूर्ण इस बार तो करो ॥ आ ॥ ४ ॥
 श्री नंदसूरि 'सूर्य' की ये अर्ज तो सुनो ॥
 शिव शर्मनाथ देय के अविकार तो करो
 ॥ आ. ॥ ५ ॥



वर्ग—७७७७ ॥ अरेती ॥

प्रभु माम आप माघ से प्रति दिन
 किया करो ॥ जो दीन दुखी जीव का
 कुछ तो दिया करो ॥ डेर ॥ जाता समय
 अमूल्य ये कुछ धर्म तो करो ॥ श्रेष्ठ कष्ट
 त्याग के समता दिया करो ॥ प्र ॥ १ ॥
 राजा क्या सुशीलता त्यागो न सत्यता न
 धिन नैन सुधा मेम से] मन्त्रिजन पिपा
 करो ॥ प्र ॥ २ ॥ घर नम्रता अमिमान
 राज परगुल गहा करो ॥ बायी सुधासी
 पोल के सुक से दिया करो ॥ प्र ॥ ३ ॥
 मित वान अमय वैष के परदित दिया
 करो ॥ नारन तरन शिरराज के शरका
 गहा करो ॥ प्र ॥ ४ ॥ धर्म पंच होइ श्री
 प्यान मा धरो ॥ श्री खरिमन्दात के पत्र
 कंस दिया करो ॥ प्र ॥ ५ ॥

तर्ज—गजल ॥ उपदेशी ॥

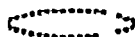
सीधा है जैन पथ ये इस पर चले
चलो । राग द्वेष टाल के बेडर चले चलो
॥टेर॥ क्षमा दया सन्तोष शील ध्यान तो
धरो ॥ निज आथ ज्ञान साथ में लेकर
चले चलो ॥ सी ॥ १ ॥ षट् काय जीव
जन्तु की करुणा किया करो ॥ शुभ दान
अभय हाथ से देकर चले चलो ॥-सी ॥
२ ॥ वसु कर्म है अनादि के इनसे टरा
करो ॥ तप ध्यान शस्त्र हाथ ले शिवपुर
चले चलो ॥ सी. ॥ ३ ॥ जैन वैन ध्यान
लाय ज्ञान तो धरो ॥ श्रद्धान जैन शास्त्र
की मन धर चले चलो ॥ सी ॥ ४ ॥ जैन
धर्म छोड़ कमी और ना चहो ॥ श्री नंद-
सूरि शरण ले पद पर चले चलो ॥सी ५॥



८७—नाथ कैसे नव को नव तुम्हारी ॥ धर्म ॥

नाथ कैसे भक्ति तुम्हारी पावे मन
 अचल स्थिर ना रहावे ॥ १८ ॥ ध्यान घरी
 जब बैठे तुमरा विपरीत ध्यान से आवे ॥
 तस्कर पुष्ट अरुचि मेरे आत्म बाल
 बिपावे ॥ ना ॥ १ ॥ बुद्धि नहीं और बाल
 अरा नहीं अरा नहीं ठर आवे ॥ क्यों
 कर मन निश्चल ये होवे मोह मर आ
 बहिष्कारे समा ॥ २ ॥ प्रतिपल दिन ९ मही
 पलटे तपजप नादि सुहावे ॥ मन मतंग
 बिन अकुल यह है कवि क्यों नाथ नचावे
 ॥ ना. ॥ ३ ॥ एक जीते पद्य इन्द्रिय बल हो
 इस पर साथ बितावे ॥ बाँको साथे सो
 सब साथे तब शिव पद्य पढावे ॥ ना. ॥ ४ ॥
 कीज नाथ अचल अब मन को विभ्रम

सर्व पलावे ॥ त्रिपय भोग वंधन से मुक्ति
 होकर अलख लखावे ॥ ना. ॥ ५ ॥ प्रीतम
 पद्म प्रभो परमात्म मुक्त भव भ्रमण
 मिटावे ॥ नंद सूरिश्वर पद कंज प्रणमी
 'सूर्य मुनि' कथ गावे ॥ ना. ॥ ६ ॥



तर्ज.—मेरे शम्भू तू काशी बुलावे मुझे ॥ प्रार्थना ॥

होगा सेवक शरण निभाना तुम्हें ॥
 होगा शिवसुख स्थान बताना तुम्हें ॥ देर ॥
 नहीं जान पड़ता है हमें कुछ भेद तत्त्वा-
 तत्त्व का । है भान नहीं कुछ भी हृदय में
 ज्ञानदीपक सत्त्व का ॥ होगा पंथ विशुद्ध
 जताना तुम्हें ॥ हो ॥ १ ॥ भोगादि पाया
 स्वर्ग में देवी करोड़ों भी भई । पाया अ-

सक्या द्रव्य तब नहीं साक्ष्या मन ही
 गई ॥ होगा सम्योप द्रव्य दिखाना तुम्हें
 ॥ हो ॥२॥ भावूँ कहाँ तुमको तबी स्वामी
 अपनेरे देव है । नहीं याचता साकर किसे
 एवता अखण्डित सेव है ॥ मय मीति से
 होगा सुखाना तुम्हें ॥ हो ॥३॥ अगदीश
 हीन दितकर प्रमो अविकार अगदाधर
 है । श्री मंत्र 'सूर्य' कर सोकु यों करता
 अरज हरवार है ॥ मुझे जाही से होया
 लगाना तुम्हें ॥ हो ॥ ४ ॥



तर्ज—वनजारा ॥

प्रभो प्रियतम पदकंज धारे, सो अपने
काज सुधारे ॥ टेर ॥ तज मिथ्या जिन
मगधारा, जड़ चेतन लखता न्याराजी ॥
निज पर को विमुख निहारे ॥ सो ॥१॥
जग कुगुरु कुदेव तज दीना, एक धर्म
अहिंसा लीनाजी ॥ वैरी कर्म सभी संहारे
॥ सो ॥ २ ॥ सहृपुद्गल जाण पराया,
जग अध्रुव लख विसरायाजी ॥ धर तप
जप उर सुविचारे ॥ सो. ॥३॥ जड़ पूजा
तज दी सारी, निज भान लह्यो सुविचारी
जी ॥ पर भाव करें सब न्यारे ॥ सो. ॥४॥
श्रीघीतराग उर आने, सम भाव दया पर-
ठाने जी ॥ पद नंद सूरेश्वर धारे ॥ सो. ॥५॥

संख्या द्रव्य तब महीं लाहला मन की
 गई ॥ होगा समस्तोप द्रव्य बिलाना तुम्हें
 ॥ हो ॥२॥ आई कहां तुमको तभी लामी
 हमारे बीच है । नहीं याचता आकर किसे
 रहता अलखित सेव है ॥ मय भीति से
 होगा मुकामा तुम्हें ॥ हो. ॥३॥ अगदीश
 तीन दितकर ममो अविचार अगबाधार
 है । श्री नंद 'सूर्य' कर सोचे यों करता
 अरख हरबार है ॥ मुझे जाती से होना
 लगाना तुम्हें ॥ हो ॥ ४ ॥



पाप में धरे झूठ परिहारे ॥ है ॥ ४ ॥ है
 श्रेष्ठ देव जो वीतराग उर धारा ॥ निर्ग्रथ
 गुरु है जग जन के हितकारा ॥ है धर्म
 अहिंसा श्रेष्ठ धरो उर प्यारे ॥ है ॥ ५ ॥
 यों देवगुरु पुनि धर्म विमल पहिचानो ॥
 कहे 'सूर्यमुनि' जिन चैन हृदय में आनो ॥
 श्री सूरिनन्द के पद कंज भर्म निवारे ॥
 है. ॥ ६ ॥



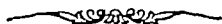
मञ्जन—उपदेशी ॥

सुमरन कीजिये रे, जिनवर नाम
 सदा हितकारी ॥ टेर ॥ अनन्त काल भव
 भ्रमण करत सब, सुधबुध दई विसारी ।
 तदपि किंचित् भान न पायो, भव भव
 हुश्रो खुचारी ॥ सु ॥ १ ॥ देख विमासी

पञ्चमी—श्रेय की ॥

है देव वही जो एतन्म श्रेय से स्यारे ॥
 है बानी वही जो पाप सबै संहारे ॥ १ ॥
 तप वही सत्य जो, कर्म सभी हर हारे ॥
 है वान वही जो पुनः बौद्ध हो स्यारे ॥
 है शील वही जो पुनर्गति अथमस्त हारे ॥
 ॥ १ ॥ है माय वही जो मय बन्धन को
 आसे ॥ है वान वही जो आत्म गुण
 उद्विषासे ॥ आरित्र वही जो नूतन बन्ध
 निहारे ॥ है ॥ २ ॥ गति श्रेष्ठ वही जो
 महीं से नहीं फिर आवे ॥ है सत्य वही
 जो परम महीं पुनः आवे ॥ है गुरु वही
 जो पर के गुण सम्भारे ॥ है ॥ ३ ॥ ब्र
 ह्मवैभवा की कृपा दीन वै भरते ॥ है श्रेष्ठ
 समा जो क्रोध अथ ना करते ॥ परमौन

पाप मे धरे भूठ परिहारे ॥ है. ॥ ४ ॥ है
 श्रेष्ठ देव जो वीतराग उर धारा ॥ निर्ग्रथ
 गुरु है जग जन के हितकारा ॥ है धर्म
 अहिंसा श्रेष्ठ धरो उर प्यारे ॥ है ॥ ५ ॥
 यों देवगुरु पुनि धर्म विमल पहिचानो ॥
 कहे 'सूर्यमुनि' जिन वैन हृदय में आनो ॥
 श्री सूरिनन्द के पद कंज भर्म निवारे ॥
 है ॥ ६ ॥



भजन—उपदेशी ॥

सुमरन कीजिये रे, जिनवर नाम
 सदा हितकारी ॥ टेर ॥ अनन्त काल भव
 भ्रमण करत सब, सुधबुध दई विसारी ।
 तदपि किंचित् भान न पायो, भव भव
 हुश्रो खुवारी ॥ सु ॥ १ ॥ देख विमासी

छात्र—छात्री कमी ॥

हि देव यही ओ राम द्वेष से न्यारे ॥
 हि शानी यही ओ पाप सर्व संहारे ॥ देर ॥
 तप यही सत्य ओ कर्म समी हर हारे ॥
 हि दान यही ओ दुख बौहग हो न्यारे ॥
 हि शील यही ओ दुर्गति अघमल हारे ॥ हि
 ॥ १ ॥ हि माघ यही ओ मघ बन्धन को
 आखे ॥ हि ज्ञान यही ओ आत्म गुण
 उजियाखे ॥ चारित्र यही ओ नूतन बन्ध
 निहारे ॥ हि ॥ २ ॥ गति भेष्ट यही ओ
 जहाँ से नहीं फिर आवे ॥ हि सत्य यही
 ओ पर मन नहीं चुकावे ॥ हि शुद्धी यही
 ओ पर के गुण सम्भारे ॥ हि ॥ ३ ॥ बग
 विमजता की बधा दीन पै धरते ॥ हि भेष्ट
 समा ओ दोष अथ ना करते ॥ पर मीन

गजज्ञ—उपदेशी ॥

जो प्रेम से जिन नाम को, रटना वही
 सुख पायगा ॥ सब कर्म से निर्लेप हो,
 शिवधाम में वह जायगा ॥टेर॥ दिन चार
 की है जिंदगी प्यारे विचारो गौर कर ॥
 दौलत खजाना मित्रवर सब साथ में नहीं
 आयगा ॥ जो ॥ १ ॥ अनित्यता जगवस्तु
 की, लख त्यागिये परतंत्रता ॥ निज भाव
 में तू रक्त वन, समता हृदय तप लायगा
 ॥जो ॥२॥ कर सोधतत्त्वातत्व की, हिंसा
 अधम त्यागन करो ॥ सुदेव गुरु पुनि
 धर्म की, श्रद्धा न उर ठहरायगा ॥ जो ॥
 ३ ॥ होता नहीं जल वृन्द से मन शुद्ध

तम अगत्रासी कासी इक्षय विहारी ॥
 पीतराग कर धार सैन मग तम मिथ्या
 मति नारी ॥ सु ॥२॥ नर्क भिगोइ रस्यो
 अति चेतन गेइ दड़ी र्यो मारी ॥ पुन्य
 उद्य उचम अथ पायो, निर्मल नर अव-
 तारी ॥ सु. ३॥ सैन धर्म परम शिव साधन,
 कर तिहुँ पोग सुधारी ॥ बार बार नर
 देह न पावे जैसे रत्न मिहारी ॥ सु. ४॥
 भग्न भक्ति से सिन अमिधाना सब बुझ
 वेध विहारी ॥ सिन सुमरन सिन और न
 चेक्यो पावन परम सुधारी ॥ सु ॥ ५ ॥
 अथम पतित तिरे सिन सुमरन देवे अथ
 मल टारी ॥ नन्द सूरिअर 'सूर्य मुनि'
 कहै भग्न सिनवर अविकारी ॥ सु. ॥ ६ ॥



गजज्ञ—उपदेशी ॥

जो प्रेम से जिन नाम को, रटना वही
 सुख पायगा ॥ सब कर्म से निर्लेप हो,
 शिवधाम में वह जायगा ॥टेर॥ दिन चार
 की है जिंदगी प्यारे विचारो गौर कर ॥
 दौलत खजाना मित्रवर सब साथ में नहीं
 आयगा ॥ जो ॥ १ ॥ अनित्यता जगवस्तु
 की, लख त्यागिये परतंत्रता ॥ निज भाव
 में तू रक्त वन, समता हृदय तप लायगा
 ॥जो ॥२॥ कर सोध तत्त्वातत्व की, हिंसा
 अधम त्यागन करो ॥ सुदेव गुरु पुनि
 धर्म की, श्रद्धा न उर ठहरायगा ॥ जो.॥
 ३ ॥ होता नहीं जल वृन्द से मन शुद्ध

तीरथ न्हाय से ॥ काम क्रोधादिक नहीं
 पीते यही पक्कायगा ॥ ओ ॥४॥ मित्रता
 नहीं हरषस्त में, मानुष्य जीवन सार ये ।
 भी नन्दसुरि शरत्त से, सुख पायगा हर्ष-
 पगा ॥ ओ । ५॥

तर्क—वक्ता । ज्ञेसी ॥

हे समस्तजगत् सैन जग में कबों हृदय
 लाते नहीं ॥ सागर व्यामृत तोष में
 क्यों मित्रपर न्हाते नहीं ॥ डेर ॥पर माख
 की हिंसा छिये नहीं धर्म हो सकता
 कभी ॥ अज्ञान पक्षपात पूर कर सत मार्ग
 पे आते नहीं ॥ हे ॥१॥ कलेश हिंसा झूठ
 बोरी भीर धन का त्यागना ॥ पाप अष्ट-

दश कभी करते न करवाते नहीं ॥ है ॥ २ ॥
 है विरागी देवता में राग वा नहीं छेप है ॥
 सब कर्म बन्धन नाश कर के जन्म जर
 पाते नहीं ॥ है ॥ ३ ॥ है गुरु निर्ग्रथ त्यागी
 जर जमी पुनि नार को ॥ काच कंचन
 सम गिने, ममता हृदय ध्याते नहीं ॥ है ॥
 ॥ ४ ॥ उत्कृष्ट अहिंसा धर्म है रक्षा जहां
 पट जीव की ॥ लक्षण विमल ये धर्म धर
 दुर्गति कभी जाते नहीं ॥ है ॥ ५ ॥ यों
 देव गुरु पुनि धर्म धर मिथ्यात्व को त्या-
 गन करो ॥ सूरिनन्द पद सेवे वही निज
 शुद्ध विसराते नहीं ॥ है ॥ ६ ॥



तबे—गच्छ ॥ ब्यली ॥

फिरता इधर से तू नधर, हरबल्ल
नामा धाम है ॥ निज आत्म तीरथ में
नहीं न्हाया किया आराम है तबेर ॥ मंगा
गया जमुना गया, हरिदास वा परिमाण
में ॥ न्हाया तथा स्नाया किया, तो भी
मिला ना दयाम है ॥ फि. ॥ सिर पै जटा
वाड़ी धरी पुनि कान में छेदन किया ॥
भरमी लगाई बेह में, ले कष्ट आठों याम
है ॥ फि. ॥ बन में रही फल फूल को,
खाया तथा पायी पिया ॥ सहि कष्ट तन
कर काएबत् सीना न कुछ बिग्राम है ॥
फि. ॥ मुख बांध पर सोचन करे, बंधा
लही बंधी बने ॥ सब बल तज मझा रहे
पर सिद्ध हो ॥ नहीं काम है ॥ फि. ॥ सम्पक

दर्शन ज्ञान विन क्रिया निरर्थक है सभी ॥
 अकाम होती निर्जरा जिन वैन विन नि-
 ष्काम है ॥ फि ॥ निजरूप विन पहिचान
 से मृगमद भरे फिरता फिरे ॥ गुण
 आत्म के होवे प्रकट आता वही निज
 ठाम है ॥ फि. ॥ मन शुद्ध विन चाहे कई
 तप जप क्रिया तीरथ करो ॥ सूरिनन्द
 सुनू जिन वैन से, पाता अटल सुललाम
 है ॥ फि ॥



इश प्रार्थना ॥ कल्लाली ॥

महिमा तुम्हारी भगवन्, जगमें दिखा
 रही है ॥ मघवा थके अनंते, नहीं पार
 आ रही है ॥ टेर ॥ कैवल्य ज्ञान दर्शन
 शक्ति तथा अनंती ॥ तुझ ज्ञान गुण

मिस्र की ज्योति जगा रही है ॥ म ॥ १ ॥
 मृत्यु मरा मनम को, तब के अटल बने
 है ॥ तुम्ह में न मोह माया, सुविरामता
 रही है ॥ म ॥ २ ॥ पावन परम मयासा,
 तिहु लोक में बयासा ॥ तेरा अनूप बुनियाँ
 एक नाम प्या रही है ॥ म ॥ ३ ॥ तुही धर्म
 की है नौका माता पिता तुही है ॥ भक्ति
 तुम्हारी सबही कुमती हटा रही है ॥ म
 ॥ ४ ॥ विद्या विमल विनय को, बीजे विमल
 हमको ॥ सुरिगन्ध की कृपा से सुमती
 समा रही है ॥ म ॥ ५ ॥



तर्ज—गजल ॥ प्रार्थना ॥

सुखकर कृपा मय आपका सुन्दर
मनोहर रूप है ॥ तिहुँ लोक में मिलता
नहीं, तुझ देवसा चिद्रूप है ॥टेर॥ है नेत्र
केवल ज्ञान दर्शन धर्म का आनन महा ॥
भवि जीव उद्धारन लिये युग हाथ तुझ
गुण तूप हैं ॥ सु. ॥ है वीतरागी देव तू
अविकार निर्मल देह में ॥ तलवार तप
धारन करी जीते महा वसु भूप है ॥ सु ॥
रक्षा करे जग जन्तु की सागर दया का
तू विभो ॥ तारक तुही पालक तुही तुझ
दीद परम अनूप है ॥ सु. ॥ शान्ति शान्ति
नाम से हो लिप्त ये तेरी महा ॥ तिहुँ
योग जपता नाम तुझ पड़ता नहीं भव
कूप है ॥ सु. ॥ सूरिनन्द गुरुवर देव से

पाया असीक्तिक देव में ॥ सब 'सूर्य' हो
मम कामना, घर ब्याम का भद्रा पूष है
॥ सु ॥

उप—ब्रह्मणी ॥ प्रथमा ॥

तुम्हीं हमारे नाथ हो, मैं बास तेरे
घरघों का ॥ हेर ॥ हो तुम देव बिरागी
साँचे अपर देव देखे सब काये ॥ काम
कोष मव में माँच सख्ये तुम अयतात
हो ॥ शय कीना सब कर्मों का ॥ मैं ॥१॥
करता हरता तु नहीं स्वामी अलख अगो
बर अमर्त्यामी ॥ तेरा नाम अमित सुख-
धामी, सब जग में बिख्यात हो ॥ मुझ
पार लगाओ लौका ॥ मैं ॥२॥ अनंत पशु
एव तुल्य भर पूष ताप तिर्हूँ कीमा थक

चूरा ॥ राग द्वेष कीना सब दूरा, घट घट
के तुम शात हो ॥ मुझ सहाय तेरे चरणों
का ॥ मै. ॥ ३ ॥ सच्चा संभव तू है स्वामी
सब गुण नायक नहीं है स्वामी ॥ नंदसूरि
शिशु कहे सिरनामी, तुम्हीं सच्चे पितु
मात हो ॥ कुछ रहा न मन में धोका ॥
मै. ॥ ४ ॥



राग—पजाबी ॥ ज्ञानविषे ॥

मिलती है मुक्ति ज्ञान से, यों जैन
शास्त्र फरमावे ॥ टेर ॥ प्रथम ज्ञान फिर
दया बतावे, ज्ञान विना समकित नहीं
पावे ॥ क्रिया अफल विन ज्ञान दिखावे,
ज्ञान सुधा विन पान से ॥ नर योंही जन्म
गमावें ॥ यों. ॥ १ ॥ ज्ञान अखूट है द्रव्य
खजाना, कभी नाश नहीं होय निधाना ॥

सुख सम्पत्त सो पावे नामा, कमी न बिघा
 यान से ॥ किंचित् भी हामी पावे ॥ यों ॥
 ॥ २ ॥ ज्ञान दीप जिनके कर मांही प्रकट
 धराधर तस्य दिखाई ॥ रहें सुख जिनसे
 कसु नाही सब सिद्ध होय आसान से ॥
 अग में नर पूज्य कहावें ॥ यों ॥ ३ ॥ ज्ञान
 बिना नर पशु समाना होय दितादित का
 मांही मामा ॥ अजगत् स्तनबत् उसे पि-
 दाना जहाँ आय तहाँ अपमान से ॥ दुख
 बार बार दरसावें ॥ यों ॥ ४ ॥ यदि बाहो
 मित्र सर्व ब्रह्माणा, आत्म दित अद पर
 कल्याणा ॥ मन्द सूरिभर पदार्क अ ध्याना
 न पड़ो एक ध्यान से ॥ सब "सूर्य"
 नपती पावे ॥ यों ॥ ५ ॥

भजन ।

जिनका बेड़ा पार है, नित ध्यान प्रभु
 भक्ति में ॥ टेर ॥ सकल तजी संसार
 उपाधि, त्याग क्लेश मन धरी समाधी ॥
 सर्व कर्ममल तजता व्याधि, दीना भर्म
 विडार है ॥ इक ध्यान जैन युक्ति में ॥
 नि. ॥ १ ॥ तप जप संयम द्रव्य कमावे,
 विषय वासना बंध मिटावे ॥ आलस आ-
 सरकों विरलावे, सम्यक् ली मल धार
 है ॥ रहे मगन अमित शक्ति में ॥ नि. ॥
 २ ॥ काम क्रोध मद बन्धन जारे, कंचन
 काच सम हृदय विचारे ॥ जड़ को तज
 निज गुण सम्भारे, तज कुमत्त सुमत्त मन
 धारे है ॥ शिव शर्म यही युक्ति में ॥ नि.
 ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव संग तज प्यारा, धर्म

सुख सम्यक्त सो पावे नाना, कमी न बिपा
 दान से ॥ किंचित् मी हावी थावे ॥ यों ॥
 ॥ २ ॥ ज्ञान दीप जिनके कर मांही प्रफुल्ल
 करारर तत्त्व दिखाई ॥ रहें गुप्त जिनसे
 कह्यु मांही, सब सिद्ध होय आसाम से ॥
 अग में नर पूज्य कहावें ॥ यों ॥ ३ ॥ कास
 बिना नर पशु समाना होय द्विषाद्विष का
 नहीं माना ॥ अखगल स्तनवत् उसे पि-
 काता अहाँ आप तहाँ अपमान से ॥ दुख
 बार बार वरसावें ॥ यों ॥ ४ ॥ यदि बाहो
 निज सबै कल्याणा आत्म द्विष अक पर
 कल्पामा ॥ नन्द सूरिभर पदकंस व्याना,
 ज्ञान पड़ो एक व्यान से ॥ सब "सूर्य"
 संपत्ती पावे ॥ यों ॥ ५ ॥

मैं रावण गया विलाई ॥ दीनी सोवन
लंक गमाई, निशदिन रहे क्यों सोय के ॥
फिर रहेगा हृदय खटकता ॥ क्यों. ॥३॥
बार बार नरतन नही पावे, नन्द सूरीश्वर
यों समझावें ॥ जो नर जपतप धर्म
कमावे, ले माया मल को धोय के ॥ जस
काल न व्याल गटकता ॥ क्यों. ॥४॥

राग—पजावी ॥ उपदेशी ॥

निज दोनों जन्म सुधार के, कर नेक
कमाई लीजे ॥ टेर ॥ स्वप्न समान अधिर
जग जाणा, रंक स्वप्नवत् इसे पिछाना ॥
कुटुम्ब और परिवार खजाना, दुखदाई
संसार के ॥ सब राग द्वेष क्षय कीजे ॥
क. ॥ १ ॥ कुटुम्ब कवीला काम न आवे,
धन दौलत यहां पै रह जावे ॥ अटल

अर्द्धिगा से उर घात ॥ मन्द सूरीभर से
 यह सादास, कहे 'गुर्य' यही सुविधा
 है ॥ एक स्थान शौक्य मुक्ति में ॥ नि ॥



एक—अगती नम ॥ शर्वेना ॥

मम माया यह होय के क्यों भूला
 जिसे मटकता ॥ हेर ॥ यह माया सुरगार्ह
 जग में होता क्लेश पूर्व पगभग में ॥ देते
 सब जन पैद विनक में ले भाव गोस
 सब जोय के ॥ क्यों करते मणी पटकता
 ॥ क्यों ॥ १॥ कोउ किसी के साथ न आता
 सद्गुरु के दास रिगाता ॥ होकर
 सब घम में सुरभाता भांखिर रहेगा
 जोय के ॥ २॥ रहेगा बीच सटकता ॥ क्यों
 ॥ ३॥ मत कर मान अथ मन मांही किन

॥ चाल पजावी ॥ माला ॥

ले माला करमें काठ की नर भजन
 करन को वैठा ॥ टेर ॥ कर में माला फिरे
 विचारी, रही जीभ मुख में जिनधारी ॥
 मनवा चहुँ दिश फिरता भारी, रही धुन
 शास्त्र के पाठ की ॥ पर मन विषयों में
 पेठा ॥ न ॥१॥ बाह्याडम्बर खूब बतावे
 नित्य नया सो ढोंग दिखावे ॥ मन को
 कावू में नहीं लावे, होगई उमर जब साठ
 की ॥ तोहु पाप करने में सेंठा ॥ न. ॥२॥
 धन तन पर होकर मद माता, किंचित्
 धर्म न बात सुहाता ॥ दिन दिन तृष्णा में
 मुरझाता, परणी कन्या आठ की । है
 घर में पोता बेटा ॥ न ॥३॥ दृढ़ आसन
 कर मन बस लाश्रो, बाह्याडम्बर सर्व

साथ एक धर्म रहावे, लेखो धर्म तन धा
 के ॥ मिठ धीर प्रमो सुमरीजे ॥ क. ॥ १४ ॥
 कहाँ तक जग से मोह धरेगा एक दिन
 जग से कूच करेगा ॥ कर्म किया निज
 पुण्य मरेगा मिथ्या मर्म विचार के । मिठ
 वान दीन को बीजे ॥ क. ॥ १५ ॥ कर सत
 संग काम पड़ माई अफल गमा मत फिर
 पड़ताई ॥ तन धन मन से करो मल्लार्ई
 मोह ममता को मार के ॥ मखि पर सप
 कार करीजे ॥ क. ॥ १६ ॥ भी बीतराग हर
 प्यामो माली नीठ नीठ है नर सिव-
 गामी ॥ नन्द सूरेश्वर कहे दितबाणी
 कर मनम 'सुख' सुविचार के ॥ तब
 वदित काख सीसे ॥ क. ॥ १७ ॥



दारिद्र नहीं पावे, रोग सोग संकट विर-
लावे ॥ प्रेतादिक ना दोष रहावे, फल हो
इनकी सेव का ॥ तुम अक्षय शिवपुर
घरलो ॥ इ. ॥ २ ॥ पूर्व चतुर्दश सार यही
है, परम श्रेष्ठ नवकार यही है ॥ जिन
मुनियों विस्तार कही है, है पूरन स्थान
अमेव का ॥ कर सुमरन पातिक हरलो
॥ इ. ॥ ३ ॥ वरन करत गुण अन्त न आवे,
कोटि जिब्हा हु थक जावे ॥ अधम मनुज
शिव सुरग पठावे, तस जाप जपी नित
मेव का ॥ संसार समुंदर तिरलो ॥ इ. ॥
४ ॥ लाखों नर इस मंत्र प्रभावे, मन चिं-
तित सिद्धि सब पावें ॥ हित धर नंद
सूरि समझावे, कर ध्यान 'सूर्य' अतएव
का ॥ गुण ज्ञान खजाना भरलो ॥ इ. ॥ ५ ॥



[११६]

मिटाओ ॥ धन सम्पत्त में मत लहबाओ
 संवत्सता ज्यों हाट की ॥ हे सतगुरु पद
 कंज मेरा ॥ न. ॥४॥ समा क्या खस्तोप
 बिचार मगका मगका सुख कर प्यारा ॥
 मन्द सूरिभर कहे दितकारा, अस्थिरता
 सभाट की ॥ मत फिरे अकड़ में पेंटा ॥
 न ॥ ५ ॥



एन—एनली ॥ वक्तरेखी सृष्टि ॥

एक मन्त्र परमेष्ठी बेय का मयि सुम
 एन मन बच करतो ॥ डेर ॥ मंत्र परमेष्ठी
 सब धुल पाता जन्म जरा तिहुं ताप
 मिटाता ॥ सब मन्त्रों में श्रेष्ठ बिरपाता
 वायक धुल अशेष का ॥ मित ध्यान
 हृदय में धरले ॥ इ. ॥ १ ॥ तस्कर मय

दारिद्र नहीं पावे, रोग सोग संकट विर-
 लावे ॥ प्रेतादिक ना दोष रहावे, फल हो
 इनकी सेव का ॥ तुम अक्षय शिवपुर
 वरलो ॥ इ. ॥ २ ॥ पूर्व चतुर्दश सार यही
 है, परम श्रेष्ठ नवकार यही है ॥ जिन
 मुनियों विस्तार कही है, है पूरन स्थान
 अमेव का ॥ कर सुमरन पातिक हरलो
 ॥ इ. ॥ ३ ॥ वरन करत गुण अन्त न आवे,
 कोटि जिब्हा हु थक जावे ॥ अधम मनुज
 शिव सुरग पठावे, तस जाप जपी नित
 मेव का ॥ संसार समुंदर तिरलो ॥ इ ॥
 ४ ॥ लाखों नर इस मंत्र प्रभावे, मन चिं-
 तित सिद्धि स्वप्न पावे ॥ हित धर नंद
 सूरि समभावे, कर ध्यान 'सूर्य' अतएव
 का ॥ गुण ज्ञान खजाना भरलो ॥ इ ॥ ५ ॥



राम—केशवी ॥ प्रथम ॥

प्रभु हूँ मैं ममधार में, लो बोंड
 पकड़ कर मेरी ॥ हेर ॥ मैं हूँ अनाथ नाथ
 तुम मेरा सेवक गरुड किया है तेरा ॥
 हरजो मय मय संकर केरा प्रतिफल तुम्ह
 आधार में ॥ अब मोपे करो न देरी ॥ लो
 ॥ १ ॥ जैसे लगे तिमक बिधारी पास
 फोड़ अम्बरवत् मारी ॥ मरुम कितक में
 करे प्रजारी यो तुम नाम विचार में ॥
 अब होय मरुम खच देरी ॥ लो ॥ २ ॥
 अजब सहारा तेरा जग में गरुड कई
 तेरा पग पग में ॥ तुम्ह पै भया हूँ रग
 रग में तुम सम नहीं ससारा में ॥ खच
 देखा है जग देरी ॥ लो ॥ ३ ॥ कीजे मेरा
 पाप निकम्बन सुन लामी मरु देवी नंदन ।

नंदसूरि पद करके वन्दन जिनवाणी आ-
धार में ॥ रहि 'सूर्य' लही सुख सेरी ॥
लो. ॥ ४ ॥

वशीकरण पंजाबी भजन ।

एक वशीकरण हम पास है जग वस
में सब हो जावे ॥ टेर ॥ प्रथम मिष्ट सब
से तुम बोलो वचन मर्म किसके मत
खोलो ॥ पहिले हिरदा मांही तोलो सब
जन होता दास है ॥ नहीं शत्रु तिनके
पावे ॥ ज. ॥ १ ॥ दान अभय दीजे हित
जाना सब दानों में श्रेष्ठ बखाना । पेख
परम करिये शुभ दाना दुख दोहग होवे
नाश है ॥ शिव अमित शर्म दरसावे ॥ ज.
॥ २ ॥ तृतीय विनय गहो मन मांही धरो
सरलता तज कुटिलाई । धर्म मूल विनय

कहाई सब मंत्रों में कास है ॥ पों जैत
 वैम बतसावे ॥ अ ॥ ३ ॥ परगुप्त बीया
 मत्र कहीजे परापकार मुक्त से तब दीजे ।
 असार तजि मम सार लहीजे तब मगडे
 आत्म विकाश है ॥ शिव साधन परम
 कहावे ॥ अ ॥ ४ ॥ बशीकरब ये बार
 मंत्र है अपर अर्थ सब रथ तंत्र है । लगे
 नहीं को मूठ इवंत्र है लहे बही शिववास
 है ॥ कहे सूर्य अक्षर पद पावै ॥ अ ॥ ५ ॥

७७—बगली लयेही ॥

नर ईश्वर का साप अप तू क्यों ता-
 तक जग्य समाने ॥ हेर ॥ सुख शान्ति मय
 जिनका शरणा पतित पापन जिनकर
 शरणा । मतिपल ध्यान हृदय में धरना
 तब वे अग सम्ताप न ॥ कोई साध किसी

के नाचे ॥ क्योँ. ॥ १ ॥ निष्फल आयुष्य
 बीता जावे खोटा धन्धा कर ठगखावे ।
 दीन अनाथ दुखी सन्तावे भोगे निजकृत
 आप तूँ ॥ क्योँ खोटा द्रव्य कमावे ॥ क्योँ.
 ॥ २ ॥ क्षण भंगुर तन जान सयाना मत-
 कर तिन में मान गुमाना । मोह माया में
 क्योँ मुरझाना निष्फल करता पाप तूँ ॥
 कर सुकृत पाप विलावे ॥ क्योँ. ॥ ३ ॥
 पथिक समान आश्रम ये जाना आखिर
 तन जल भस्म समाना । बार बार नर-
 तन नहीं पाना हरजन्म जरा अयताप तूँ ॥
 ले बीतराग उर भावे ॥ क्योँ. ॥ ४ ॥ सुर
 दुर्लभ नर देही प्यारे कोढ़ी कानी में क्योँ
 हारे । नंद सूरेश्वर पदकंज धारे रट
 जिन नाम अलाप तूँ ॥ फिर भवसागर
 तिर जावे ॥ क्योँ ॥ ५ ॥

कहाँ खूब मंत्रों में जास है ॥ यों जैन
 कैम बचसाये ॥ अ ॥ ३ ॥ परगुप्त बीषा
 मन्त्र कहीजे परापयाद मुख से तब दीजे ।
 असार तमि मन्त्र सार सहीजे तब प्रगटे
 आत्म विकास है ॥ शिव साधन परम
 कहाये ॥ अ ॥ ४ ॥ बशीकरण से चार
 मंत्र हैं अपर इयबै सब रंध तंत्र हैं । लगे
 नहीं को मृत इयत्र है लहू बही शिवनाथ
 है ॥ कहे 'सूर्य' अचल पद पार्थे ॥ अ ॥ ५ ॥

७५—क्यानी कलेरी ॥

नर ईश्वर का आप जप हूँ कबो मा-
 तृक जन्म गमाये ॥ देर ॥ सुख शांति मय
 जिनका शरणा पतित पावन जिनकर
 करणा । मतिपल आन हृदय में भरना
 तब से जग सखाप हूँ ॥ कोई साथ किसी

के नावे ॥ क्योँ. ॥ १ ॥ निष्फल आयुष्य
 बीता जावे खोटा धन्धा कर ठगखावे ।
 दीन अनाथ दुखी सन्तावे भोगे निजकृत
 आप तूँ ॥ क्योँ खोटा द्रव्य कमावे ॥ क्योँ.
 ॥ २ ॥ क्षण भंगुर तन जान सयाना मत-
 कर तिन में मान गुमाना । मोह माया में
 क्योँ मुरझाना निष्फल करता पाप तूँ ॥
 कर सुकृत पाप विलावे ॥ क्योँ. ॥ ३ ॥
 पथिक समान आश्रम ये जाना आखिर
 तन जल भस्म समाना । बार बार नर-
 तन नहीं पाना हरजन्म जरा प्रयताप तूँ ॥
 ले बीतराग उर भावे ॥ क्योँ. ॥ ४ ॥ सुर
 दुर्लभ नर देही प्यारे कोढ़ी कानी में क्योँ
 हारे । नंद सूरेश्वर पदकंज धारे रट
 जिन नाम अलाप तूँ ॥ फिर भवसागर
 तिर जावे ॥ क्योँ. ॥ ५ ॥

कीजे धर्म सुधारस पान ॥ ६८ ॥ जो
 धर्मासूत पिपे प्रेम से, दुर्गति हो सब-
 साग । सर्वद्वि विरुद्ध विरलाय सर्वथा पावे
 सबस मिथान ॥ की ॥ १ ॥ जीवम धर्मासूत
 को तज के करो न मिथ्या पान । दुख
 सिंधु किन में सब कीजे मंगल धर्म सु
 खान ॥ की ॥ २ ॥ मज्झिमा नैल हर ज्ञान
 नीर से पोय स्वच्छ वा ध्यान ॥ अस्मिन्
 सम्पत्त पाय करो मत विरुद्ध तापे मान
 ॥ की ॥ ३ ॥ धर्मीजन को सुपथ समर
 है हो तत्त आत्म कल्याण । अथम उदा-
 रण परम यही है धर्म सबस शिष्यान ॥
 की ॥ ४ ॥ जाको प्रतिपत्त धर्म रह मन
 रवे सबस अज्ञान । जोसठ मधवा भूपति

ताको, वन्दे युगकर पाण ॥ की. ॥ ५ ॥ डिगे
न कवहुं देव डिगाये, योग तिहुं थिर-
ठाण ॥ नन्द 'मुनि सूर्य' धर्म के लक्षण
दस पहिचान ॥ की. ॥ ६ ॥



॥ प्रार्थना ॥

कृपालु कीजे कृपा लख दास ॥ टेर ॥
राग द्वेष से दूर बने हम, प्रकटे ज्ञान
उजास ॥ बीतराग जिन धर्म अराधें, होवे
आत्म विकास ॥ कृ. ॥ १ ॥ करे सहायता
एक एक पै, द्वेष पंक हो नाश । तन मन
वच से सेव संघ की, होवे सतत प्रयास ॥
कृ. ॥ २ ॥ निज स्वरूप गुण ज्ञान दर्श और,

प्रकटै सम सुविभास । अगम अथ मृत्यु
 नय युक्त ये, तत्र हीनै अरिपास ॥ ६ ॥
 १ ॥ सत्या सत्य विचार बने तित होय
 धेनु अमितासा । अम धर्म पुनि सत
 शास्त्रों का होय हमें सम्यास ॥ ६ ॥
 अटल काम दयैव सुख प्रकटै, होवै शिष-
 पुर बास । अष्टकर्म बन्धन नय होवै
 पूरम इच्छित भास ॥ ६ ॥ १॥ इह परमेश
 में शरण होय, भी बीतपग अविनाश ।
 मन्द सतीश्वर 'सूर्य मुनि' यों करता है
 अर्यास ॥ ६ ॥ १ ॥



तर्ज—भजन ॥ प्रार्थना ॥

तुम विन है नहीं सहायक और ॥टेर॥
 मात पिता प्रियनारी जग में, बन्धु मित्र
 करोर । छेय देय विन स्वारथ छिन में
 होवे हृदय कठोर ॥ तु ॥१॥ सच्चा सहाय
 शरण सौख्यघर, तिहुं लौकिक सिरमौर ।
 भव भ्रमण मेटे सब भगवन् , लय करदे
 अघ घोर ॥ तु. ॥२॥ पतित कर्म में किया
 कृपालु, तेरा सच्चा चोर । दुर्गति पड़े
 अधम दास की, रखिये जीवन डोर ॥ तु
 ॥३॥ देव अन्य तज लहि तुम सेवा, जैसे
 चन्द्र चकोर । रत्नत्रय तिहुं योग आराधी,
 दियो कुमत मत छोर ॥ तु ॥४॥ अजीत-
 नाथ अब कीजे कुछ भी, दीन अर्ज पै
 गौर । नंदसूरि सुनू 'सूर्य' यों, विनय करें
 कर जोर ॥ तु. ॥५॥

स्मृत्य क्व ।

हमाय कव हिम ऐसा होय ॥ ३८ ॥
 मैत्री भाय भीर बात्सल्यता मम कव ही
 प्रतिपत्त सोय ॥ बाज भीर में अघमल सब
 ही लेई कव में पोय ॥ ३९ ॥ ॥१॥ राम द्विप
 बंधन वादल ये कव ही छय ये होय ।
 तप संपम घर मङ्गलन पालु कवहुं मित्र
 शिष्यताय ॥ ४० ॥ २ ॥ पञ्चाशद्व आलस्य
 अकता वैहु कव में कोय । कालवर्ष का-
 रिष धरु कव इस दिन परम न कोय ॥
 ४१ ॥ ३ ॥ तन हानि दुर्जय कर डारे ठायें
 धरु न मोह । बाज अमर्षतर परिग्रह
 त्यागु कवहु कव हो मोह ॥ ४२ ॥ ४ ॥
 पराधकार घर हृष सरलता सम्यक्
 यदि विलोय ॥ नन्दसूरि 'मुनि खूब' कहै
 कव पीरु वपासुत ताय ॥ ४३ ॥ ५ ॥

तर्ज—गन्ध ॥ उपपंजी ॥

तजे जो सत्य के पथ को, वही नर
 दुःख पावेगा ॥ धर्म हिंसा हृदय धारे,
 महा दुख सो उठावेगा ॥ टेर ॥ करे पर
 प्राण की हिंसा, कहें मुख चैन सहु भूटे ।
 करे चोरी ममत आदिक, विषय को नां
 हटावेगा ॥ त ॥ १ ॥ कुगुरु कुदेव की
 संगत, रहे मिथ्यात्व मद माता ॥ पार
 ट्टी हुई नौका, कदो कैसे लगावेगा ॥ त
 ॥ २ ॥ लखे तन पंच तत्त्वों का, नहीं चै-
 तन्य को माने ॥ रहा नास्तिक सो पूरन,
 स्वर्ग कैसे सिधावेगा ॥ त ॥ ३ ॥ अधमगति
 जायगा प्राणी, न धारे जैन की घाणी ॥
 परम जिनराज को तज के, अन्य को मर
 भुकावेगा ॥ त ॥ ४ ॥ बुराई जो करे परकी
 उसी की होयगा हर्गिज । जो खोदे खाड

सो पकता मरी उसमें समावेगा ॥ त ॥
 २॥ काय को रत्न सम जाने त्योंहि अङ्क
 बेध को माने ॥ तजी वैतम्प अङ्क पूजे,
 बुद्धि अङ्क सो पनावेगा ॥ त ॥ ५ ॥ झोड़
 माया अचिर अग की सुगुरु सुदेव को
 प्यायो ॥ खरीभर मङ्ग पद सेवे, वही ओ
 सार्न ज वेगा ॥ त ॥ ७ ॥

०४—द्वय ॥ कहेली ॥

जिनेभर धर्म वै बतना बताना ही
 मुनासिब है ॥ अहिंसा धर्म का करना
 करना ही मुनासिब है ॥ डेर ॥ अगाध
 मधु सिंधु में नर की रही हूँ पकी
 मौका ॥ धर्म के तीर पर धरमा, धरना
 ही मुनासिब है ॥ जि ॥ १ ॥ अदल जिम-
 राज की बाणी अमित विशेष मध

जाणी । उसी को भाव से सुनना, सुनाना
 ही मुनासिव है ॥ जि ॥ २ ॥ अहिंसा सत्य
 अरु ब्रह्मव्रत, तथा अस्तेय निर्ममता ॥
 पंच गुण पै सतत बढ़ना, बढ़ाना ही मुना-
 सिव है ॥ जि ॥ ३ ॥ राग द्वेष की जहां
 पै, बढी हो आग की ज्वाला ॥ उन्हीं से
 दूर हो हटना, हटाना ही मुनासिव है ॥
 जि ॥ ४ ॥ हृदय समभाव नित लाना,
 भगाना द्वेष के पक्षी ॥ विषय विष भोग
 से बचना, बचाना ही मुनासिव है ॥ जि.
 ॥ ५ ॥ सूरि नन्दलाल पद ध्याई, अटल
 जिन धैन पै रहना ॥ 'सूर्य' भवसिंधु से
 तिरना, तिराना ही मुनासिव है ॥ जि ॥ ६ ॥



८४—गन्ध ॥ अग्नी ।

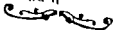
विमय कर माघ सुध धर है सभी
को हम समाते हैं ॥ हुआ अपराध जो
हम से द्वेष मन का मिटाते हैं ॥ १॥
चरवासी लक्ष है जोनी जीवों की श्रेण
में भाखी प्रेम पूर्वक उन्हीं से हम घर
सबही नशात हैं ॥ वि ॥ १ ॥ प्रकट पा
गुप्त से अभिगम हुआ अनजान का जाने ।
सभी से हम समा पाये ममता घर
जताते हैं ॥ वि ॥ २ ॥ मूल है जीव में कई
अनादि से रही मारी ॥ नहीं हो पाए
कहने से अमित अवशुष दिखाते हैं ॥
वि ॥ ३ ॥ होय रागादि बंधन में किरा है
द्वेष पर सत पै । कभी से दुख भावों
कर द्वेष बंधन दहाते हैं ॥ वि ॥ ४ ॥

हमारे होय सब आता, धरे मैत्रियता
दिल में ॥ सूरेश्वर नंद पद कंज से,
अटल शिव शर्म पाते हैं ॥ वि. ॥५॥

पूज्य गुण चेतन चेतोरे दम बोल जग १ में ।

नित गुण गाओरे, श्री नंद सूरेश्वर
ध्यान लगाओ रे ॥ टेर ॥ मालव मंजुल
जनपद पत्तन, खाचरोद सुखकारी रे ॥
तात नगीनालाल आपके, अमृत मह-
तारी रे ॥ नि. ॥ १ ॥ संवत गुन्नीसे साल
गुन्नीस में, शुभ वेला शुभ वारी रे जन्म
लियो श्री पूज्य आपने, मंगलकारी रे ॥
नि. ॥ २ ॥ मुनीश्वर गिरधरलाल गुरु से,
बोधामृत सुन पायारे ॥ करी सगई त्याग
हृदय, वैराग्य समाया रे ॥ नि. ॥ ३ ॥

गुम्मीसे धासीस साल में धाय नगरी
 मांही रे ॥ सत्तप संयम धायन कीमा
 कीरती धाई रे ॥ नि ॥ ४ ॥ इक्कीस बर्य
 की उमर मांही ने शुद्ध मक्ति वितसाया
 रे ॥ शांत स्वमायी महागुण कर तत्त्व
 कहाया रे ॥ नि ॥ ५ ॥ गाम नगर पुर
 पाटन विचरत भव्य जीव समझायारे ॥
 अन्तिम अस्थिर ज्ञान देह अनशन मत
 ठायारे ॥ नि ॥ ६ ॥ सबत गुम्मीसे साल
 गुम्पासी गाम रामपुर मांही रे ॥ तीन
 योग सुषधार स्वर्ग में पूज्य सिधायारे ॥
 नि ॥ ७ ॥ तस पादोघर पंडित मूपम
 माधव मुनि महाराया रे ॥ 'सूर्य मुनि'
 कहे दिन दिन जिनका तेज सवायारे ॥
 नि ॥ ८ ॥ इति ॥



॥ तर्ज वन्वाली चतुर्विंशति स्तुति ॥

चौबीस ईश जग के, श्री संघ के
 सहायक ॥ है भव्य भद्र भविके, शिव
 सौख्य के प्रदायक ॥ देर ॥ आदे अजीत
 सम्भव, अभिनन्ददेव भजिये ॥ सुमति
 सुपद्म प्रभुजी, सुपार्श्वनाथ क्षायक ॥ चौ०
 ॥ १ ॥ श्री चन्द्रनाथ सुविधि, शीतल
 श्रेयांश श्रीमत् ॥ श्री वासुपूज्य वन्दौ,
 विमलेश जग विभायक ॥ चौ० ॥ २ ॥ श्री
 अनन्त धर्म शाति कुन्थु अरह सुमल्ली ॥
 स्वामी मुनिसुव्रत के, रहते सुरेन्द्र पायक
 ॥ चौ० ॥ ३ ॥ नमि नेम पार्श्व प्रभुजी,
 महावीर संघ स्वामी ॥ वन्दू मै सीस नम

दे ग्यारे तथा विमायक ॥ श्री० ॥ ४ ॥
अरिहन्त सिद्ध पाठक आचार्य सर्व
साधु ॥ नमः सूर्य वासुधा है, चारित्र्य
वर्ग वायक ॥ श्री० ॥ ५ ॥

—*—*—*—

॥ वने ॥ अन्तः मे मय री जीव ॥

मित मज्जिये जिन श्रीवीर्य ईश मम
सीस मज्जित धर माये ॥ देर ॥ भी भादि
अजित जिनदेव सेव भी सम्मध जिनकी
पीजे ॥ भी जिन अमिनम्बन स्वाम माम
भी सुमति सुमति सुमरीजे ॥ प्रभु पद्म
प्रभो पद्मामी भीसुपाय्ये प्रभो शिष्य
गामी ॥ जिनअम्बु सरस जितधार आद
अङ्गामणि मणि इरमाये ॥ नि० ॥ २ ॥
भी सुविधि सुबुधि वातार सार सौमल
समता सुविमाये ॥ भीमाब्ध भेष्य धेयाय

ईश जगदीश ज्ञान सुविकाशे ॥ वर वासु-
 पूज्य नित सेवा मिल करते वासव देवा ॥
 हो विमल विमल मति जपें खपें • अघ
 बुद्धि विक्रम विकसावे ॥ नि० ॥ २ ॥ श्री
 अनन्त अन्तकर कर्म भर्म तज अखिल
 हुवे सो अविकारी ॥ घनाधीप प्रभो धर्म
 नाथ जगतात आप हैं हितकारी ॥ प्रभु
 शांति शांति दातारा, किया कुंथु कर्म सं-
 हारा ॥ श्री अर अन्तर मेद छेद अरि
 जग में सो जय पावे ॥ नि० ॥ ३ ॥ है
 मंगल मल्लिनाथ मुनीन्द्र श्री मुनि सुव्रत
 स्वामी ॥ नमिये नमिपद नलिन, नेम जिन
 नेता जग सुखधामी ॥ श्री पार्श्व पार्श्व
 हितदाता, श्री वीर वीरपति ज्ञाता ॥ यों
 चौबीसों जिनराज लाज रख 'सूर्य मुनि'
 गुण कथ गावे ॥ नि० ॥ ४ ॥

॥ श्री बीर प्रार्थना ॥

ॐ श्री गुरु नमो ॥ १ ॥ श्री गुरु नमो ॥

श्री महावीर गिनन्द अरजी तो सुन
 लीजिये ॥ वर ॥ मटका बाहुगति सुन
 महीं पाया २ कैसे करुं अगगाथ अचल
 सुन लीजिये ॥ श्री० ॥ १ ॥ कुटुम्ब कबीला
 काम न आवे २ आप अर्कहित माम, इक्ष
 रम लीजिये ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुषुषुष विसरी
 अक चतम की २ माम्पो एक समाम, कैसे
 तो आप लीजिये ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचल
 अर्कहित मोष नहीनी २ कैसे अर्क तस
 माथ, मुक्ति वरदीजिये ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कुगुरु
 मिथिया विधविध मुजकोर तुम्हसा मिला
 मरी देष, तुम्हीं तो सुन लीजिये ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 कहे काचरोधर्म सूर्य मुनि पों शक्तिवादी
 तस साह, मधिक जन पीजिये ॥ श्री० ॥ ६ ॥

॥ गजल, ईश्वर स्तुति ॥

अधम उद्धारन दीन दयालु, परम
जिनेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ त्रिशलानंदन,
सब दुख भंजन, जग अखिलेश्वर तुम्हीं
तो हो ॥ १ ॥ भवि उद्धारण शिव सुख का-
रण, जग परमेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अध
रिपुवारक भविजन तारक, जग जोगेश्वर
तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञान विभाकर
गुण के आकर, देव महेश्वर तुम्हीं तो
हो ॥ शिवमगदाता जग के बाता, सर्व
सिद्धेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ तत्त्व
प्रकाशक वैर विनाशक, वर विश्वेश्वर
तुम्हीं तो हो ॥ स्थापक गण के युगवर वृष
के, अचल सूरेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥
४ ॥ राग न रोपा न हितम तोपा, सिद्धि-
गणेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ नाथ निरजन

भविष्यपुराण, विष्णुनरेन्द्र तुम्हीं तो हो
॥ अ० ॥ १ ॥ यदि तुम कर्ता यदि तुम
दत्ता विमल सुमेन्द्र तुम्हीं तो हो ॥ मद्
सूरि शिशु 'सर्व मुनि' का देव नरेन्द्र
तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ १ ॥

॥ ८३ ॥ कशीच.

कहे मन्मोहरी मेरा सुनलो पिया ।
मादक परमारी पै विष दिया ॥ डेर ॥
कगते पलक में इन्द्रवज्र पायक हजारों
देय हैं । ओ अस तुम्हारा बिम्ब में यह
राखिये मितमेय है । बनी बात बिगड़ नहीं
जाय जिया ॥ क० ॥ १ ॥ क्यों ! नाथ सीता
का हरी कुल में लगाया वाग है । पीछे ही
गगना सीजिये यह कामिनी पिय नाग है ।
मादक नाग पिया बरमाम किया ॥ क० ॥

२ ॥ काणी व कोची कूबडी परणी त्रिया
 सो पद्मिनी । अपनी वही है कामधेनु
 अन्य विप्रमय भामिनी । नहीं होत भला
 परनार छिया ॥ क० ॥ ३ ॥ परणो यदि
 इच्छा तुम्हारी राजवंशी कामिनी । श्रेष्ठ
 नहि तुम चोर के लाप पराई भामिनी ।
 किसने परनारी से सौख्य लिया ॥ क० ॥
 ४ ॥ वह तो सती हैं श्रीमती लज्जा दया
 गुण से भरी । संताप देना अन्य को अ-
 च्छा नहीं कहती खरी । सती राम सिवा
 नहि धारे हिया ॥ क० ॥ ५ ॥ शिक्षा लगे नां
 मनुज को जब ही विनाशक काल है ।
 'मुनि सूर्य' कहैं समझे नहीं लका पुरी
 भूपाल है । रक्खा सील अखंड विशुद्ध
 सिया ॥ क० ॥ ६ ॥



॥ रे मान ॥

॥ इति ॥

सुख को न पाया है कड़ो नर बिम्ब
 में अमिमान घर ॥ देखा गया अमिमानी
 का ये हास होता अन्तपर ॥ अब मध पी
 कर मान का अम्पाय नर क्या क्या करे
 मध अम्प हो सुख भूत के अम्पाय पय वे
 पग धरे ॥ १ ॥ आधीन हो अमिमान के
 उत्पन्न का मापण करे ॥ हा ! अर्थ का
 अनर्थ बता निज माप्यता को अनुसरें ॥
 इस मान पापी के लिये दुष्कर्म करते हैं
 दुमी ॥ कई संकटों वसे पहा निज धर्म
 कोते हैं सुमी ॥ २ ॥ मध में कहे धनवान्
 भी निज द्रव्य का पानी करे ॥ रख-भूमि
 में कई आ लड़े निज मान की इतनी करे ॥

तब साधु भी किरिया हरें जब मान के
 खर पे चरें ॥ नानाविधी परपंच कर
 कापट्य रचना आदरे ॥ ३ ॥ धारन करें
 जप तप क्रिया रे ! मान ही तेरे लिये ॥
 सन्मान मिलता किस तरह यों जाल गू-
 थत है हिये ॥ भट्टीक भोले प्राणि को दे
 डाल अपनी जाल में ॥ हो अन्ध श्रद्धालु
 वही आजाय तामी चाल में ॥ ४ ॥ अति
 धूर्तता छलबल करी उत्कृष्ट वन वहका-
 यता । क्यों कर प्रबल मुक्त पक्ष हो मन में
 यही नित चाहता ॥ जहँ सप हो तहँ
 क्लेश की तू आग धर हर्षावता ॥ रे नीच
 तेरे से कोई ना और बस दरसावता ॥ ५ ॥
 रे मान ! ही तेरे लिये इक प्रबल अस्तर
 झूठ का ॥ जो थूक कर पीछे निगलना
 काम है यह दुष्ट का ॥ रति मान ही में

मामता कर माफ्य रखना गूढ़ है ॥ जन
 माफ्य बन्धन के लिये ही कष्ट करता मूढ़
 है ॥ १ ॥ दिल में धरे वह माफना मुक्त
 से नहीं अग और है ॥ पर आसती बुनिया
 मुक्त है सेठ अथवा और है ॥ क्यों और
 को एसमत् गिमेरे ! माम किस का बिर
 रहा ॥ फुला यही कुमलायगा यह सत्य
 बानी ने कहा ॥ ७ ॥ सत्कार पुनि सम्मान
 पूजा सुयश की इच्छा धरे ॥ करके उपा
 जंग पाप का घट पूर्व वह निश्चय मरे ॥
 परिवार सम्पत्त तन पुबानी लक्ष करे
 अमिमाम मन ॥ कैसे बरगारल का रहा
 कुछ वेकालो घर ध्याम मन ॥ ८ ॥ जल कुम
 पूरख की मलक होती नहीं देखी कमी ॥
 क्या कृप से ही कम पक ताताब और
 समुद्र भी ॥ ९ ॥ से से से से से से से

मान से अपमान है ॥ ज्यों कूकरी विष्टा
 समो ज्ञानी गिणे सन्मान है ॥ ६ ॥ पद
 उच्च पाकर गर्व करना पामरों का काम
 है ॥ दिन एक में वय तीन हो हा ! सूर्य
 की अविराम है ॥ संपूर्ण सम्पत्त थी उसी
 के छत्रपति था देश में ॥ देखा गया कल
 को उसे फिरता दरिद्री वेष में ॥ १० ॥
 अभिमान से ही विनय का होता पलक में
 नाश है ॥ होता नहीं उसको कभी भी
 ज्ञान का सुविकाश है ॥ था मान जहँ तक
 बाहुबलि ने ज्ञान केवल नहि लिया ॥ वर
 वीर सच्चा है वही जो मान मुख काला
 किया ॥ ११ ॥



॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥

॥ वन ॥ पत्र १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मधु मधु पातिका दूर पलाय पूज्य
मुनि माधव गुण गाने से ॥ देर ॥ सुन्दर
सकल सकल सुमगात निरस्त आदि
नशत उत्पान । ललि नरकम्प अतुल गुण
सात जैसे रक्त रत्न पाने से ॥ म० ॥ १ ॥

भम तम सोम सुगत उडि जात पुनि बर
बान मान प्रकटात नित इदि शांति श्री
क्य सरसात अदि बेन एम माने से ॥ म
॥ २ ॥ पूत बर बशीघर के व्याप तरते मध
बधि अस अप आप बाइत दिन १ उम
प्रताप माधव नाम ध्यान ध्यामी से । म० ॥ ३ ॥
अमनी राघकोर सामंभ संयत सिद्धि पद
निधिवन्द्य दीनो अम्भ सुमग सुककम्भ
पूज्य पुण्य उदय धामे से ॥ म० ॥ ४ ॥

ललित जस जन्म स्थान ललाम था अछु-
नेरा नामक ग्राम, सुखद मुनि पुण्य पूज्य
शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥
म० ॥ ५ ॥

तर्ज—बबाली ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास
स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियों के
भद्रकामी ॥ देर ॥ जिन्ह वाल काल ही
में शुध ख्याल दिल में आया । संपत
विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी
॥ श्री० ॥१॥ दे बोध सात जन को लीना
अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना
उपकार में न खामी ॥ श्री० ॥२॥ निन्याणु
शिष्य होगये सदबोध पाय जिन से । जड़

॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥

॥ वन ॥ वन १ अम वे वा नातल केन का ॥

मय मय पानिक पूर पलाय पूज्य
मुनि माधव गुण गाने से ॥ डेर ॥ सुन्दर
सकल सकल सुमगात मिरलत आदि
नगन उत्पात । ललि नरपुम्प अतुल इत
मात असे एक रत्न पाने से ॥ म० ॥ १ ॥

अम तम तोम तुलत उडि आत पुनि वर
बान भान प्रकटान मित इदि शक्ति मी
अप सरसात मकि केन एम माने से ॥ म०
॥ २५ ॥ पूत वर वंशीधर के आप तरते भव
वधि अस अप आप पाकृत दिन १ अम
प्रताप माधव नाम ध्यान ध्याने से ॥ म० ॥ ३ ॥
अमनी रायकोर सामंय संचत सिद्धि पद
निधिपद पीनो अम सुमग सुककम्प
पूरव पुम्प उदय ध्याने से ॥ म० ॥ ४ ॥

ललित जस जन्म स्थान ललाम था अछु-
नेरा नामक ग्राम, सुखद मुनि पुण्य पूज्य
शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥
भ० ॥ ५ ॥

तर्ज—भवाली ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास
स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियो के
भद्रकामी ॥ टेर ॥ जिन्ह वाल काल ही
में शुध ख्याल दिल में आया । संपत
विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी
॥ श्री० ॥ १॥ दे बोध सात जन को लीना
अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना
उपकार में न खामी ॥ श्री० ॥ २॥ निन्याणु
शिष्य होगये सदबोध पाय जिन से । जड़

॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥

॥ ७५ ॥ ५५ २ ॥ अथ ये वा मातर केव का ॥

मय मय पातक दूर पलाय पूज्य
मुनि माधव गुण गाने से ॥ ६८ ॥ सुन्दर
सबल सकल सुमगात निरञ्जित आदि
नशत उत्पात । कलि नरकम् अतुल इत
नाथ सैसे रंक रत्न पाने से ॥ म० ॥ १ ॥
अम तम सोम तुरत उडि जात पुनि बर
काल मान प्रकटात नित इदि शांति भौ-
ष्य नरनाथ अकि वेन एम माने से ॥ म०
॥ ७५ ॥ पून घर बंशीधर के आप, तरते भव
दधि अस अप आप पाइत दिन २ वम
पलाय माधव नाम प्यान प्याने से ॥ म० ॥ ३ ॥
अनमी रायकोर सार्नद संवत सिद्धि पण
निधिबन्ध दीनो अम सुमग सुककम्
पुन्य कदप धाये से ॥ म० ॥ ४ ॥

[२२५]

ललित जस जन्म स्थान ललाम था अद्भुत
नैरा नामक ग्राम. सुखद मुनि पुण्य पूज्य
शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥
५० ॥ ५ ॥

नज—वज्जानी ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास
स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियों के
भद्रकामी ॥ देर ॥ जिन्ह वाल काल ही
में शुध ख्याल दिल मे आया । संपत
विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी
॥ श्री० ॥१॥ दे बोध सात जन को लीना
अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना
उपकार में न खामी ॥ श्री० ॥२॥ न
शिष्य होगये सद्बोध पाय

चेतनादि लक्षण समझाय बोध पामी ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ बापीस गच्छ के ने हैं मूल
 पूज्य नाथक । जिनकी संतान अब तो
 मर्मकट तजो नकामी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सज
 सप फूट तज के भी पूज्य पथ दिपाओ ।
 जिन्हें प्राण धर्म ऊपर तज के सुखीवि
 पामी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ श्री पूज्य नाथ ऊपर
 सद्वृष्टि कीज अब तो । मुनि 'सूर्य' पूज्य
 प्रतिदिन जपता अमल तु नामी ॥ श्री ॥ ६ ॥



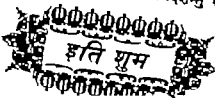
भजन उपदेशी ।

क्यों भूस्था चेतन भ न मोहनी पाश
 में ॥ डेर ॥ निर्मल स्फुरिक सम आत्म
 उज्ज्वल सहज स्वभाव बिराज में । निज
 स्वभाव से मिष्ट हो राज्यो विष मय

मोह मिठास में ॥ क्योँ० ॥१॥ मोह मदिरा
 वस आच्छादित हो फँस्यो कुटुम्ब की
 त्राश में । मृग तृष्णा वश फिरे भटकता
 इत उत कर विश्वास में ॥ क्योँ० ॥ २ ॥
 एकादश श्रेणी से चढ़ के पड़े प्रथम गुण
 रास में । तस्कर विकट मोह अटकावे
 जाता शिवपुर वास में ॥ क्योँ०॥३॥ सिंह
 सम्मुख हो भरे कुरगी निज सुत रजा
 आश में । मरे मोह वश पड़े पतंगी जलता
 दीप उजास में ॥ क्योँ०॥४॥ मरुदेवी अरु
 गौतम मुनिवर वसिया मोह निवास में ।
 मोह तज केवल कमला पाई पहुँचे शिव
 कैलास में ॥ क्योँ० ॥५॥ सिंह कभी निज
 भक्षण तज के, धरे राग नहिं घास में ।
 त्योँ ज्ञानी नही विषय भोगवे रमण करे
 गुण खास में ॥ क्योँ० ॥६॥ भ्रमर कमल

के पुण्य न छूट पुन सहै भ्यामा भ्यास में
 कठिन काष्ठ तण भर मं कोरे होकर माह
 के वास में ॥ क्यो० ॥ ७ ॥ सुगम तोड़नी
 मोह साँकड़ी पुष्कर मोह विनाश में ।
 धम्य पुरुष जग वधन तज के रमते वि
 डिनाम मं ॥ क्यो० ॥ ८ ॥ गुधिसे बीयण
 संघत रही शांति बीमाम में । नंद खरि
 मुनि सूर्य कहे पों तिरै शहर मद्रास में
 ॥ क्यो० ॥ ९ ॥

* ॐ शिवाः सिद्धि मम विशम्भु *



शुद्धि-पत्र



पृष्ठ पं

अशुद्ध

शुद्ध

| | | |
|-------|-----------|----------|
| ७ ११ | अभिलाषा | अभिलाष |
| १० ८ | कन्दन | कन्दन |
| ११ ३ | पाव | पावन |
| १५ ५ | है ज्यों | ज्यों |
| १६ ४ | मुनिवृन्द | मुनिवन्द |
| २६ ११ | भावे | गावे |
| २७ ११ | त्रण | त्रण को |
| २७ १५ | पाई | पाई |
| २८ ३ | शुद्ध | अशुद्ध |
| २८ ७ | अभिमाना | अभिमाना |

पृष्ठ पं

अध्याय

शुद्ध

२६ १० कहियो

कह्यो

३३ ८ पुष

सुष

४० ७ भूट

भूठे

४० ६ सजीष

सजीष

४३ १० अर बदलल

अरस बदल

४४ ७ कृत्ती

कृत्तो

४५ १ रमाने वाले

रमावे वाल

४५ १० जैसे

जैसे

४६ १ कहने म

कहि

४७ ११ मनो

मामो

४८ १० निजदास

निजदास

४९ १ अम

अम

५१ १५ कोष ओ

कोष न

५२ १५ कृत्ती

कृत्ती

| पृष्ठ पं. | अशुद्ध | शुद्ध |
|--------------|--------|---------|
| ६४ ८ तुम | | तृण |
| ६७ ६ वानो | | वागो |
| ६७ १४ सत | | सुत |
| ६८ ८ सष्ट | | कष्ट |
| ७२ १६ आत्म | | आत्म |
| ७३ १४ सरखाई | | सरखाई |
| ७५ ६ करता है | | करता |
| ७७ ४ यश | | दश |
| ७७ १५ हाथ | | आथ |
| ७८ ४ काज | | कीजे |
| ७८ १३ बांधण | | बाघण |
| ७९ ३ विरुद्ध | | विरुद्ध |

पृष्ठ १

अध्याय

शुद्ध

८१ १२ अंगार

अंगार

८२ ३ पाप

पाप

८२ ४ आध

आध

८३ १२ कामन

कमान

८७ २ युक्त

युक्त

१२ १२ सिधु द्वि

सिधु

१७ १ युग

युग यक्ष

११ ५ अघमल

अघमल

११ ११ अघमल

अघमल

१०० ८ सिद्ध

सिद्ध

१०० १० वाणी

वाणी तेरी

१०५ १० कर्कशा

कर्कश

| पृष्ठ पं. | अशुद्ध | शुद्ध |
|-----------|--|-----------|
| १०४ १६ | गहियो | गह्यो |
| १०७ ४ | स्तवन | स्तव |
| १०६ ११ | ममता | ममत |
| ११० ११ | गहियो | गह्यो |
| १११ १३ | श्री | श्री गुरु |
| ११३ ६ | घना | मना |
| ११३ ६ | जर | जग |
| ११४ ८ | ध्याईरे | ध्याइयेरे |
| ११४ ४ | वंच | वंचन |
| ११५ १४ | एन विठरत् | ए नविठरत् |
| ११८ ३ | अन्त | अनन्त |
| ११८ ६ | रही कुमति कुदेव दिल आनी, रही कुमति दिल छाय ताहि से जान्यो ना तुम्हको । कुगुरु कुदेव दिल आनी । | |

| पृष्ठ पं | अक्षर | शुद्ध |
|----------|------------|-----------|
| ११६ | ३ व्यभिचार | व्यभिचारा |
| १२१ | ७ मिचारे | मिचार |
| १२३ | १० समामी | समामी |
| १२४ | ३ कोष | कोषे |
| १२४ | ६ माघ २ | माघ २ |
| १२८ | ४ मषो | मषो |
| १३० | ४ बिल | बिल में |
| १३२ | ३ घर | घर |



श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल

की
विक्रीयार्थ पुस्तकें



- १ स्तवन तरंगिणी भा० तीन
(पू० माधव मुनिजी म० कृत)
- २ दंडी दम्भ दर्पण
- ३ जैन भजन प्रदीप
- ४ जैन भव्य भजन
- ५ चतुर्विंशति भजनाकर
- ६ जैन भजन चरितावली
- ७ श्री भावना प्रबोध
- ८ जैन भजन भास्कर
- ९ जैन संगीत सुधाकर
- १० श्रीमती गुण सुन्दरी च
- ११ सप्त गायन चरित्र
- १२ जैन भजन भूषण

- १३ नित्य मंद स्मरण
- १४ खरिवायली पुक
- १५ खरिवायली पचाकार
- १६ कपित्त लमह पचाकार
- १७ साधु प्रतिक्रमण पचाकार
- १८ मस्तिनाथ खरिब पचाकार
- १९ सुबोध मज्जन पाटिका
- २० आत्मोपदेश मज्जनाबली
- २१ सूय स्तयन सामह
- २२ पचाकार खरिब मखि माता
- २३ प्रतिक्रमण सूत्र मूल
- २४ प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ

और औषा पूंजणी डंडी पातरे
 मोकरबाजी आसनादि मिलेंगे ।

पटा-भी धर्मवास कैन मित्र मंडल
 मु० कात्तरोक
 (गोस्वामिपर स्टेड) } { ठि० बांदनी बीक
 रतनाम (मासबा)

